

श्री राम



श्रीराम

राम जी की कृपा

सदैव आप पर बनी रहे

ऐसे 2 भुग कार्य आप में

करवाते रहें।

सदा 2 तुम्हारे ही हैं

राम जी-समराम
श्रीराम

24.5.2000

श्रीराम

<u>क्र. सं.</u>	<u>विषय</u>	<u>पृ. सं.</u>
1.	श्रीराम जपो जी	1
2.	कृपा क्यों मांगे	6
3.	दोहा	7
4.	जब पहुंचे कृपाधाम	8
5.	अखण्ड यज्ञ	11
6.	भजन (नया सम्मत)	12
7.	भजन (प्रार्थना) आओ मेरे रामजी	15
8.	माया में अब न फंसाना प्रभुजी	18
9.	राम रामैति रामैति	21
10.	मेरे राम जी हैं, मेरे राम जी हैं	22
11.	मैंने अपने प्रभु को जान लिया	26
12.	करुणा कर कुछ ऐसी किरपा	30
13.	हरि चरणों में चित तू लगा के	33
14.	मेरी रोज दिवाली जी कि	38
15.	हरि ऐसी बुद्धि बना दो राम	42

16.	शिवरात्रि का लड्डू	44
17.	शाहों के शहनशाह मेरे राम जी	48
18.	भजन-तेरे नाम रंग ऐसा चढ़या, इओ	51
19.	तेरी किरपा नाल गरती है छाई	54
20.	भजन-आत्मज्ञान है सबरो चँचा	57
21.	दुर्गा अष्टमी (नवरात्रे)	
	आया अष्टमी का त्यौहार	60
22.	भजन-ऐ लों मेरी नैया संगालो राम जी	66
23.	भुल्लां तेरी ओ, नरीब नहीं ओ बणदे	69
24.	ओन्हां जन्म जन्म सुख पाइआ	73
25.	शाहों के शहनशाह तेरे दर आया सवाली	75
26.	किसो नाल राम नहीं	80
27.	बोल हरि बोल हरि	83
28.	राम जी के नाम जे तो पाथर भी तारे	86
29.	रब्ब मेरा सतगुरु बन के आया	88
30.	सावरे घनश्याम तुम तो प्रेम के अवतार हो	91

31.	मेरा दिल है दीवाना शाम तेरे लिए	92
32.	10 निर्देश	94
33.	श्री कृष्ण गोविन्द हरे मुरारे	96
34.	भगवग कृपा की अदभुत महिमा	98
35.	बांके बिहारी रे दूर करो दुख मेरा	101
36.	मेरे घर आना सांवरिया	102
37.	श्रीराम श्रीराम कहते चलो	104
38.	मन्दिर में रहते हो भगवान	106
39.	किए जा राम का सिमरन	108
40.	प्रभु अपने चरणों के काबिल बना दो	110
41.	जन्म देने वाले तू इतना तो बोल रे	112
42.	जागो सोने वालो जगाने वाला आ गया	115
43.	करवा चौथ का त्यौहार	117
44.	ऐसी किरपा मो पै करो	121
45.	श्रीराम जी जिनका नाम है	123
46.	कभी भोले बाबा बन जाते हैं	124
47.	मन मूर्ख अड़ियां करदा	125
48.	हरि जी से मिलने की इक धुन	128

49.	हरि चरण नूँ छू के कराम असीं	131
50.	रामनाम की महिमा	133
51.	राम कहो राम कहो	134
52.	चेतावनी (प्रकृति भी शान्त रहे)	136
53.	मांगा है मैंने श्याम से वरदान एक ही	141
54.	याद कर ले, हरि को याद कर ले	143
55.	राम जी, गोरे राग जी, आया हूँ मैं	144
56.	श्रीराग जी का रागरन किया करो	146
57.	रे मन जाग जाग जाग	148
58.	कृपाधाम की महिमा	150
59.	गन चलो चलें कृपाधाम	152
60.	राखो राखो जी कृपानिधान	154
61.	कृपाधाम दीयां महिमा बर्थरियां	156
62.	कोई बोले राम कोई अल्लाह बोले	158
63.	करवा दे रब्बा संता दे नाल (पंजाबी भजन)	160
64.	छोटा जिहा कम अज तेरे जिम्मे (-सम-)	162

भाग दूसरा

(सच्चा सौदा बाबा जी दा)

<u>क्र.सं.</u>	<u>विषय</u>	<u>पृ.सं.</u>
1.	हरि चरण शरण गोबिंद दुख भंजना	1
2.	हरि धारहु, हरि धारहु किरपा	5
3.	हमरा ठाकुर सब से ऊंचा	9
4.	मोरे आये हैं, आये हैं	13
5.	दरसन देखत दोख नसै	17
6.	राम राम राम, जप रमत राम सहाई	21
7.	अमृत पीओ, सदा चिर जीओ	24
8.	जप मनक मेरे गोबिंद की बाणी	28
9.	सुणि सुणि नाम तुम्हारा प्रीतम	31
9. (क)	भी गुर देखण जाई प्यारिया	34
10.	बाबा विख देखिया संसार	38
11.	बिसर गई सब तात पराई	42

12.	हंऊ वारि वारि अपने गुरु कां जांसा	45
12	(क) अऊखी घड़ी न देखण देइं	48
13.	सभै गलां विरारन इको विसर न	49
14.	अऊखी घड़ी न देखण दई	53
15.	अब हम चला ठाकुर पै हार	56
16.	लजा राखी राम, मेरी लजा राखी	58
17.	नारायण नारायण नारायण	59
18.	प्रभु मेरा अन्तर्याग जान	61
19.	काहे मन तूं झोलता	64
20.	संत रहत सुनहु गेरे गाई	67
21.	संतगुरु साचे दियां भोज	73
22.	हऊ देखा दर्शन तेरा	75
23.	हल्ले यारा हल्लेयारा खुशखबरी	77
24.	हरि जीओ किरपा करे	79
25.	मेरे प्रभु प्रीताम प्राण आधार	80
26.	अविचल नींव धराई संतगुरु	81
27.	दरशन देमांगऊ, मांगऊ दरशन	83
28.	ध्यान समाधि	85
29.	जय गुरुदेव	102

30.	आरती श्रीसतगुरुदेव जी की	115
31.	आरती सत्यनारायण जी की	117
32.	आरती भोले बाबा जी की	120
33.	आरती वैष्णोदेवी मां की	122
34.	आरती बांके बिहारी जी की	124
35.	आरती निराकार की	127
36.	आरती झूले लाल जी की	130
37.	आरती जगदीश जी की	133
38.	रास कृपाधाम में	136
39.	दूसरी रास (पहाड़ी भाषा)	138
40.	तीसरी रास	140
41.	हवन मन्त्र	141

रामजी रामराम

Sep 2000						
S	M	T	W	T	F	S
1	1	5	6	7	8	9
10	11	12	13	14	15	16
17	18	19	20	21	22	23
24	25	26	27	28	29	30

चरशों में समीपत कर उनका बन जाता है।
 वह सम्पूर्ण विव्दारी को त्यागने में समर्थ हो
 जाता है व उनका कृपा पात्र बन जाता है और
 इस भवसागर को अनायास पार कर पूर्णब्रह्म
 से मिलने में समर्थ हो जाता है। अतः इसे
 पढ़े मनन करें व अपने मानव जीवन को
 सार्थक करें।

हर समय नाम जपने का अभ्यास करें। बर्ष
 के वादीववाद से बचें और चिन्तन करें उस प्यारे गुरु
 का जो आपके शीमश्रीम में समाया हुआ है।

नोट - - - - जो भी इस पुस्तक को ले, कृपया रात्रि में
 पाँच शब्द अवश्य पढ़ने का अभ्यास डालें।

"श्री राम"

Sep
Tue

12

श्रीमका

परम पूज्य पूर्ण सतगुरु, सर्वबन्धनीय,
सर्वप्रिय श्री रामजी द्वारा रीचत यह "सैग दर्शन" नामक
पुस्तक जो शब्दों व भजनों के रंग बिरंगी सुरीत
पुष्पों से सुसज्जित है। आपके कर कमलों में सुशोभित है।
इसे उन्हीं की लिपि व शैली में प्रस्तुत किया
गया है व इसकी प्रीतिलिपियों को Photo शब्द का रूप
देकर आपके समक्ष "श्री रामजी" के प्रत्यक्ष साक्षात्कार
का अनुभव कराया गया है।

यह उनकी पन्द्रहवीं पुस्तक है जिसमें
"श्री रामजी" के भावों का दिग्दर्शन उनके रीचत भजनों
के रूप में हुआ है। उनका आशय है कि "श्री रामजी"
नामक तत्व अपने आप में पूर्ण अष्ट त्वरूप है। उनके
दिये मंत्र जो हृदय में धारणा कर निरंतर जपने
का अभ्यास करता है, अपने स्वयं को उनके पावन
प.न.०.

2000

"श्रीराम" ज्यो जी JANUARY SATURDAY



"कर कृपा उनु दीन दयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला" (गुरुमारा)

विषेय कृपा मांगते है, कि हर समय
मुझे अपने उनु (रामजी) की याद रहे
हर जै में, हर जीव में, कला कला में मुझे आप
ही नज़र आये

"मे। मामू पश्यति सर्वत्र" (गीता)

सिधा राम मम सब जग जानी

SUNDAY 2

"अव्वल अल्लाह नूर उयाइआ" (रामायण)

(गुरुवारी करान)

जिधर देखता हूँ उधर तू ही तू है

"बाईवल"

"रामजी राम राम"

मैं अपने राम (जो रामा कर

JAN	9	23
0000	10	24
S	11	25
M	12	26
T	13	27
W	14	28
T	15	29
S	16	30
S	17	31
M	18	
T	19	
W	20	
T	21	
S	22	

MONDAY
रहा है उसे राम राम कह कर इजहार
कर रहा हूँ

सब में एक साँझ रामा कह रही है
जैसे हम राम कहते हैं

राम जी राम राम

प्रातः सूर्य से पहले उठें।

पांच बार कृपा की मांग उच्चारण

ਕੇਰ

“ कर कृपा पशु दीन दयाला।
तेरी ओर पूरी गोयाला। ”

पहली कृपा मेरे मन पर रावना
इस पर कुलांग को प्रभाव न हो, मन शांत रहे

दुखरी लुपा मेरी गुड्डि पर राखता
गुड्डि मत के विचलित न कर दे
सद गुड्डि देना। आप की लुपा से ही हो
पन्नती है।

Y	0	24
M	1	24
T	1	25
W	2	26
T	3	27
I	13	28
S	15	29
S	16	30
	17	31
W	18	0
I	5	0
F	6	0
S	7	0
R	27	0

तीसरी कृपा - परिवार के लिए माँ
रहे हैं, सारे सदस्य शान्त रहे, सब अपने आप
को मुसाफिर समझे, वैराग्य और ज्ञान जागृत रहे

चौथी कृपा - शरीर के लिए, स्वस्थ रहे
" शरीर खलु धर्म साधनम् "
यह चलता फिरता मन्दिर है, इसमें मेरे पुत्र
विराजमान हैं इस भाव से इसे ठीक रखें, पुत्र की
कृपा से ही यह भाव दिख रहा सकता है

पाँचवी कृपा - हम सब बाहर नौकरी आदि
करने जाते हैं, बच्चे भी पढ़ने जाते हैं सब सुरक्षित
कृपा राखना, यह सुकशल घर ओथ

घर से निकलते समय भी इस मन्त्र
को उच्चारण अवश्य करें। रामजी कृपा
रखेंगे

रामजी राम राम
श्रीराम

FEB	01	02	03	04	05	06	07	08	09	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	
S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T

फिर स्नान करने के बाद पापना
अवश्य करे, जिसमें हाथ केवल मल्लि मोगे
न नाम मोगे, यह पापना "कृपा धाम" से
आप ले सकते हैं अगर आप चार बार कान
का सकल्प ले। इसमें

रामायण, गुरुवारा गीता के
द्वारा पूरी पुत्र (राजजी) से मल्लि शक्ति की
मोगे की गई है समझना सिद्धा गया है
इससे सब को बहुत लाभ हुआ है रोग मिट
गये हैं, आनन्द में जी रहे हैं जिन्होंने यह
पापना की है।

महाराज करमोले है, केवल नाम मोगे
"विन तुध हौर जे मोगेगा

लिर दुवा दे दुवा" (गुरुवारा)

"अतन्यास चिन्तमन्तो माम
नित्य मुक्ता उपासेते" (गीता)

S	9	23
M	10	24
T	11	25
W	12	26
T	13	27
F	14	28
S	15	29
S	16	30
M	17	31
T	18	1
W	19	2
T	20	3
F	21	4
S	22	5

→ 2000

3

JANUARY

कलियुग केवल नाम आधार



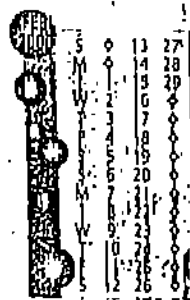
(रामायण)

प्रति रात को पांच माला कर कृपा के फल
की अवश्य करो 10 माला "श्रीराम" नाम की
इससे हमारे पास कृपा रहने हो जायेगी
फिर जब भी हम पांच बार यह मंत्र जिसी
के दुःख निवारण हेतु बोलेंगे, उस का दुःख
अवश्य ही दूर हो जायेगा, परों प्रकार भी
आवश्यक है।

रामजी राम राम

श्रीराम

17.1.2000



12

JANUARY
WEDNESDAY

2000 ←

कृपा क्यों मागे ?

"मूकग्न करोति वाचलम्
पुंगु लघयन्ते गिरिम्" (गीता)

राम कृपा नाशति सब रोगा (रामायण)

तुम्हरी कृपा ते सुख धनै (गुजराती)

जब दया दृष्टि हो जाती है
सूरवी खेती हरि जाती है (वाइवल्)

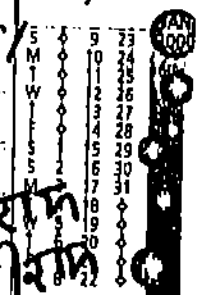
ईशा अल्लाह रबा (कुरान)

विषेय कृपा हो जाने पर जीवन कमल
के समान हो जाता है । महाराज जी की

"कर कृपा पुगु दीन दयाला

तेरी ओर पूरी गोपाला"

शान्ति राख रान
की रान



परम कृपा स्वरूप है

परम पशु श्री राम

परम यावन है आत्मा

परम पुरुष सुख धाम

जो बात दवा से हो न सके

नद बात दुआ से होती है

जब कामिल मुर्शिद मिलता है

तो बात खुदा से होती है

राम भरोखो राम बल, राम नाम विश्वास

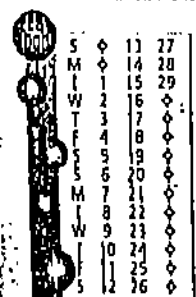
WEDNESDAY 16

सुमिर नाम मंगल कुशल, मांगत तुलसी वाम

चलते चलते मुग भया

मिला न निर्भय धाम

पूरी पशु मुझे आ मिले



कृपा धाम में तो केवल कृपा
ही बढ़ती है, जिससे भक्ते भक्ते
सर्वदा सब स्वयं ही उग्र हो जाते हैं
इसलिए (भजन)

कृपा माँगो भक्ते माँगो, मही तुम्हारा काम है
आगे तेरी लाज रखना, रामजी का काम है २

II

रामजी की कृपा से, रोग ठीक हो जाते हैं
जो भी उग्र का नाम ध्याते, आनन्द २ पाते हैं
रामायण मध्या का सच्चा यद्द ऐलान है
आगे तेरी लाज रखना रामजी का काम है

III

कृपा माँगो

सब में तुम उग्र को देखो, दैत्य भी व मिराओ
रामजी राम राम, रामजी राम राम सब को तुम
बुलाओ जी



→ 2000

19

JANUARY
TUESDAY

18

श्री हनुमन्त की गीता का मही लो फरमाया है
आगे तेरी लाज रावना, राम जी का काम है
हुवा मांगो भक्ति मांगो - -

IV

दर्शन होते सब में पुरु के
जो हरदम नाम जपते हैं
गुरु मन्त्र के जाप से,
सारे पाप बरते हैं।

निर्मल होना पवित्र रहना, गुरुवारा की पैगाँ
आगे तेरी लाज रावना, राम जी का काम है
हुवा मांगो - -

V

हरिबर अल्लाह नूर उपाइआ, कुरान 
किया की निदा नदी करना, यही भाव बतलाता है
जिनास में धा ने नदी जाना, कुरान का ऐलान है
आगे तेरी लाज रावना, राम जी का काम है

14
 कृपा मांगते मांगते नयी सदी का
 नया ^{साल} सम्मत आ गया, पिछले कई सालों
 से यहां "कर कृपा पुत्र दीनदयाल।।

तेरी ओर पूरी जोपाला का
 आवंड यज्ञ चल रहा है, इस लिए पूरी विश्वास है
 यह अने वाली सदी भी शान्ति पूर्वक होगी
 सोर सप्तर के लिए ।

अभी थोड़ी सी गड़बड़ हो गई थी
 जब Maikh Jackers ने मात्रियों को तग
 किया, परन्तु 1 इधर इस पाठ के साथ
 जाधनी की गई कि आय है पुत्र अपनी
 कृपा पूरी धारणा करो, और सप्तर में
 शान्ति करो, आवंड यज्ञ पारल हो गया
 जो कृपा धाम में अभी हो रहा है और
 घर घर में भी सोर सत्संगी मिल
 कर, कर रहे हैं ।

→ 2000

आवृत्ति

Y JANUARY

THURSDAY



कर हुआ पुन दीनदयाला

हैरी ओर पूरी गोचाला

जात जलधा राव ले

पुन अपराधी किरपा धार

अब कोई चिन्ता नहीं अब

सारे ससार में शान्ति रहेगी और सह

भारतवर्ष तो Amertva से भी आगे बिटेगा

आओ तो सारे मिल कर नयी

सदी खुशियों से मनाए, बल दें

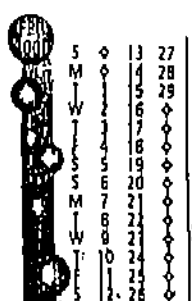
अपने God -

General

Operator

Destroyer

से सहज रहना है।





JANUARY
FRIDAY

भारत (नया सम्मत) 2000 ←

आया आया नया सम्मत हो जाओ पुत्र से सहमत
मिल के बजाओ सब तालिमां
हां जी तालिमां

II

यह सम्मत है इन्कसावी सदी का

अब भजन करो तुम इन्की का
हो जाओगे भव से दार
होगा हम सब का उद्धार

मिल के बजाओ --

III

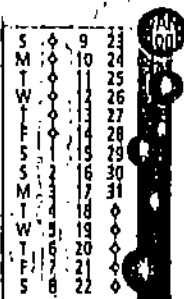
भूतकाल की चिन्ता छोड़ दो

अपना मुँह उग की ओर मोड़ लो

दूटने वाला यह ससार

दिन दिन होती उमर करार

मिल के बजाओ सब तालिमां





समय बीता सो अच्चा ही बीता
आगे आयेगा, वह अच्चा ही आयेगा
करो पुगु पर विश्वास
फिर चिन्ता न आवे पास

मिल के बजाओ - - -

V

अपनी इन्डियो, को वेश में करना
मन बुद्धि चित सदा, पुगु में राखना
इत में रामजी को बसाओ
ज्यादा नाते न बनाओ

मिल के बजाओ SUNDAY 23

VI

तामस भोजन नहीं करनी खाना,
अपने पुगु को है भोग लगाना।
अन्तर में रामजी बैठे आप,
फिर भोग न आवे पास।

24

JANUARY
MONDAY

14

2000 ←

VII मिल के बजाओ -

बालपना, यौवन, बूढ़ापा सुधारो
तीनों पन में पुगु को पुकारो
केवल रामजी का हो साथ
उनमें पूरी हो विश्वास

मिल के बजाओ -

VIII

दान स्नान गजान करते रहना
तन मन धन परोपकार में लगाना
हो जायगा पुगु से द्यार
जीवन नया होगी पार

मिल के बजाओ -

IX

हमते हमते हम जग से जायेंगे
जा के पुगु को जय कार बुलायेंगे
अब तो आ गये तेरे द्वार
अब न भेजना बारम्बार । मिल के -

नये वर्ष में अपने इष्टदेव रामजी से
सही प्रार्थना करनी है

भजन (प्रार्थना)

आओ मेरे रामजी, मुझे रंग चढ़ा दे,
धोरे धोरे अन्तर मे, दर्शनादिवा दे।

II

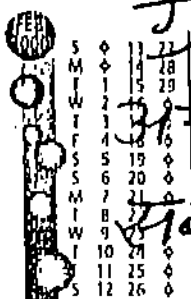
भक्ति का सुरमा मैं, आँखों में लगाऊँगी
गूँठी दुनियाँ दोड़ के, मैं तेरी हो जाऊँगी
अन्तर तिमिर, मेरा आप मिटा दे।

धोरे धोरे अन्तर मे —

IV

गुरु मन्त्र जाप कर, तौ है अपना बनाऊँगी
अन्तर सुख, बाहर सुख, सोर सुख पाऊँगी
सब के जीवन को, सुखी बना दे

धोरे धोर रामजी —



आत्मा में तेरी, प्रभु आब हो परमात्मा।
 किरपा कर के कर दो। मेरे बापों का स्वात्मा
 आत्मस्वरूप में लीनता करवा दो।
 ध्योरे ध्योरे रामजी के - - -

IV

विनती मेरी सुन लो स्वामी
 सगल घटा के अन्तर्यामी
 आनन्द ही आनन्द जीवन में बसा दो।
 ध्योरे ध्योरे रामजी - - -

V

मैं हूँ तेरी गोर्खा, प्रभु तू है मेरा कान्हा
 रोज़ भरुंगी, मैं तेरा हरजाना।
 सेवा क्षमरणा साधना, के गहमे पटना दे।
 ध्योरे ध्योरे रामजी - - -



→ 2000

JANUARY

THURSDAY

27

जीवन सजा के मैं तेरे द्वार
लोक परलोक दोनों सुखी बनाऊँ
आवागमन की कैद से छुड़ा दूँ
धारे धारे राम जी -

रामजी राम राम

श्री राम

18.1.2000

" कर कृपा पुनू दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला "

5
M
T
W
T
F
S
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29

28

JANUARY
FRIDAY

18

ब्रह्म

2000

(प्रार्थना)

हमें नित्य प्रति रात्र जीसे यही प्रार्थना
करनी है कि माया में रह कर भी, हमें
इस से अलिप्त रहें, हमारा जीवन अपनी
कृपा से कमल जैसा बनायें - तभी
जीवन में आनन्द है।

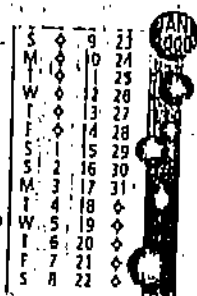
आओ तो सारे मिल कर गावें
और प्रभु से प्रार्थना करें

(प्रार्थना)

माया में अब न फसना प्रभु जी
चित्त चरणों में लगाना प्रभु जी

II

अपरम्पार है तेरी माया
कहीं पर धूप कहीं पर दया
मन को सुदृढ़ बनाना प्रभु जी



III

मन में सदा मैं तुम को निहार,
 ओमंल हो जाये तो नाम पुकार।
 सदा ही दर्शन दिखाना पुगुजी

चित चरनों में - -

IV

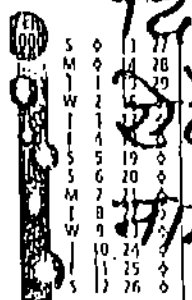
हर वर्ष नया वर्ष है आता,
 हर रोज कोई न कोई है जाता।
 बीता समय फिर हाथ न आता,
 सीधे मार्ग पै लगाना पुगुजी।

चित चरनों में - SUNDAY 30 -

V

दिन चढ़े शीघ्र ही रात हो जाये
 ऐसे ही आयु बीतती जाये
 मम भी अपना जपाना पुगुजी

चित चरनों में - -



31

JANUARY
MONDAY

२०

2000

VI

मात पिता सुत बन्धुप भाई
अन्तकाल न होय सहाई
स्वीय की दुनिया से बचाना प्रभुजी

VII चित चरनों - - -

नियकाम काम हों सब प्रभु मेरे
राम जी बोल मेरे नेड़े नेड़े

गूँठी मोह ममता से बचाना प्रभुजी

चित चरनों में

VIII

अब तो दासी शरणा तेरी अहि

मेरे रामजी हैं, सदा सहाई

श्रीराम श्रीराम जयान। प्रभुजी

चित चरनों में -

रामजीराम राम

श्रीराम

18.1.2000

4 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22
S M W T S S M T W T S S M T W T S



राम रामैति रामैति

रमे रामे मनोरमे।

सहस्र नातुल्यम रामनाम वैरारावे

राम का नाम सब से बड़ा है

इस लिए हम गुरु के नाम की जगह

राम का नाम ही उच्चारण करते हैं

वैसे भी गुरु में और राम में कोई

अंतर नहीं।

रामजी को सम्बोधन करते हुए

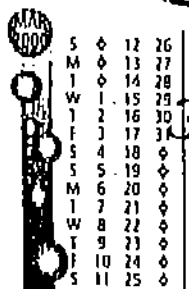
उनसे सेवा मागे और प्रार्थना करें

कि वह हमें सत्पथ में रहते हुए भी

मुक्त अवस्था में रखें, ताकि माया का

प्रभाव हम पर न पड़े। यह केवल

उन की कृपा ही कर सकती है।





FEBRUARY
WEDNESDAY

प्राथना

22

2000 ←

मेरे राम जी हैं, मेरे राम जी हैं,
यह वन से बड़े हैं देवा
सारी उमर करु तेरी सेवा

कि जय जय जय श्रीराम

II

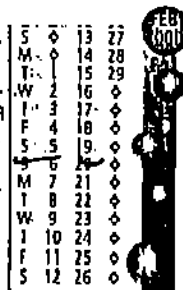
हमें अपना नाम जपाना
मोह माया से हमें बचाना
कि जय जय जय श्रीराम 2

मेरे राम जी हैं

III

हरि सुन्दर दन्ति दिवाते
मेरे मन को आप हरि भाते
कि जय जय जय श्रीराम 2

मेरे राम जी हैं





मैं अज्ञानी जब तुम्हारा
लोग मोह से मैं दुख्यार।
कि जय जय जय श्रीराम २
मेरे रामजी ---

V

उभु आय हो बड़े दयालु,
मुझे न बनाना मगडालु।
कि जय जय जय श्रीराम २
मेरे रामजी ---

VI

मुझे सब में राम दिवा दो,
मेरी समता छष्टि बना दो।
कि जय जय जय श्रीराम २

SUNDAY 6

मेरे रामजी ---

VII

तमसदा हो करुणा के रंगार
करुणा से भरो मेरी जागर
कि जय जय जय, श्रीराम



MARCH 2000
S M T W T F S S
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31



FEBRUARY
MONDAY

॥॥॥

24

2000

कई जन्मों से माया ने घेरा
हृदय में लगा लो, डेरा
कि जय जय जय श्री राम ॥

॥

मेरे राम जी हैं-

मोहे अपने दर पे गुलाना
और सुन्दर दवि दिवाना
कि जय जय जय, श्री राम ॥

मेरे राम जी हैं ---

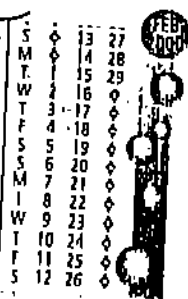
॥

उभू लावो पापी तारे
मही गुना और दोष विचारे
कि जय जय जय श्री राम ॥

॥

मेरे राम जी

उभू छपा से नकि पावें
कमल जैसा जीवन बनावें



→ 2000

25

FEBRUARY
SATURDAY



कि जय जय जय, श्री राम
मेरे राम जी हैं - - -

XII

कर कृपा पुत्र दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला
मैं जपुं गुरु मन्त्र तुम्हारा
कि जय जय जय, श्री राम
मेरे राम जी हैं -

रामजी राम राम

श्री राम

19.1.2000

कर कृपा पुत्र दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला

S	12	26
M	13	27
T	14	28
W	15	29
T	16	30
F	17	31
S	18	◇
S	19	◇
M	20	◇
I	21	◇
W	22	◇
	23	◇
	24	◇
	25	◇



FEBRUARY
WEDNESDAY

26

2000 ←

" श्रीराम "

मेरे राम जी हैं, तो सदा ही

आदि सच, जुगादि सच

है गी सच, नानक हो ली गी सच

परन्तु वह कैसा है इस भजन में
पुगट किये गये हैं

" भजन "

मैंने अपने पुगु को जान लिया

मेरे राम जी करुणा निधान हैं

मूढी माया काया इस जगत की

कोड़े मूढा करता गुमान है

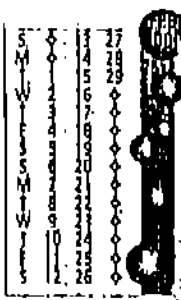
मैंने अपने - - -

II

जो गी शरणा इन की आ गया,

वह तो चोरीं बदरथ पा गया।

शान्तिमय बना दिया जीवन उसका





मही मेरे पुत्र का विधान है

III

मैंने अपने -

अब दौड़ कर मोह माया के।
तू भी अपने पुत्र की शरणा ले
जीवन मुक्त तू भी हो जायेगा।
मेरे राम जी का करमारा है

IV

मैंने -

2 वास 2 वास में तू 'श्री राम' जाप
चित्त अब उही के चरणों में रख
तेरी बिगड़ी पुत्र आप सबारेगा
मीठा मध्या का मही करमारा है

मैंने -

V

जो चोरा ने पुत्र से अलग किया।
मही मोह माया ने गुलित किया।



S	0	12	26
M	9	13	27
T	1	14	28
W	2	15	29
T	3	16	30
F	4	17	
S	5	18	
S	6	19	
M	7	20	
T	8	21	
W	9	22	
T	10	23	
F	11	24	
S		25	



FEBRUARY
FRIDAY

श्रीराम 28

2000 ←

अब ते। अन्तर में दर्श दिवा दिया।
मेरे रामजी, बड़े मेहरवान हैं

मैंने अपने पुत्र -

VI

ताप पाप सब मिट गये
बैर भाव नहीं बिली से रहा।

धन्य धन्य जन्म मेरा सफल हुआ।
मिले आत्माराम महान्त हैं

मैंने अपने -

VII

अब कलयुग का घर में प्रभाव नहीं
सत्त्विक वृत्ति सदा मेरी बनी रही।

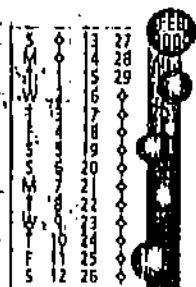
आनन्द आनन्द जीवन में दा गया।
मेरे रामजी, की कृपा महान्त हैं

रामजीराम

श्रीराम

10P.X1

18.1.2000



अन्तर में उगट देने पर भी हमने
सतसंग सेवा लिमरणा, साधन यह नहीं
देड़ने क्योंकि स्वयं श्री कृष्णजी (श्रीरामजी)
गीता में फरमा रहे हैं

यह त्रिगुणा देवी, चौर माया,
अगम और अपार है,
आता शरणा मेरी, बही,
जाता स्थल में पार है।

सारा परिवार इस मार्ग पर चले आओ तो
सब मिल कर फिर प्राप्ति। नरे
क्योंकि ससार में सब कार्य करने
आप्त है बस नाम जपना और इन्द्र

मानना मुश्किल है।

"आरवरा औरवा सावा नाम"

(बाबाजी)

S	0	2	26
M	1	3	27
W	4	5	28
T	6	7	29
F	8	9	30
S	10	11	31
S	12	13	1
M	14	15	2
T	16	17	3
W	18	19	4
T	20	21	5
F	22	23	6
S	24	25	7

करुणा कर कद ऐसी किया।
 तेरे द्वार ये निर्दिष्ट आते रहे
 तेरे नाम का अमृत पी पी कर
 श्री राम की धूम में समाते रहे

II

करुणा कर

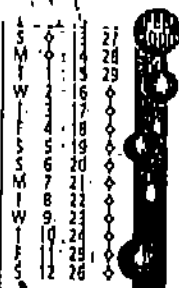
दुनिया भर के सुख सोरे पग
 न्योढ़ावर कर मोहक दनि पर
 निज भावों के सुन्दर सुमन प्रभा
 तेरे चरणों ये रोज चढ़ाते रहे

III

करुणा कर

दोये जन मन में विघ्न बाधा
 सकल्प न डोले हमरी कभी
 बल ऐसा दो सत्के मार्ग चलें
 सत्य के ही नित्य कमाते रहे

करुणा कर



16

FEBRUARY
WEDNESDAY

श्रीराम

- 32 -

2000 ₹

अपने मन को सदा समझाते रहना है, कि
ऐसे मन, तू सदा गुरुमन्त्र का जाप
जाप, देव तू सब पुराण पाप से
मुक्त हो जायेगा क्योंकि

“ नर आय ही है मित्र अपना
शत्रु अपना आय ही

जो, जीत लेता आय के।
वह बन्धु अपना आय ही
जाना न अपने आय को
रिपु सी, करे रिपुता वही ”

श्री कृष्णजी

मन के बाद बुद्धि, बुद्धि के बाद
चित्त है, सो आओ चित्त तक
पहुंचे और प्राप्ति करे

S	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
M	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
T	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
W	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
T	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
F	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
S	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12

→ 2000 तज
राष्ट्रनाम अतिश्रीम प्रजन
(पार्थना)

हरि चरणों में चित तू लगा के देव ले
दुख भजन करे हरे, राम गुरा गा के देव ले

ॐ नमः नारायणाः बोलो

ॐ नमो नारायणाः देवे

(ॐ नमोः नारायणाः देवाः)

ॐ नमो नारायणा! दत्तो

हरि चरणों में, चित्त तू ---

कर किरपा पुत्र दीनदयाला।

तेरी ओट पूरी गोयाला 2

17 26 पूरा जपा करते हैं ॐ
13 27
14 28
15 29

किरपा माग के देल ले

दुःखजनक ४४ हरेजि ---





FEBRUARY

FRIDAY

बोली

- 34 -

2000 ←

(ॐ नमः नारायणाः बोली)

" " " " "

" " " " "

(ॐ नमः नारायणाः) देवो

राम कृपा नाशही लव रोगा
जो एही भांति बने सयोगा २

सोर रोग भी दूर करे।

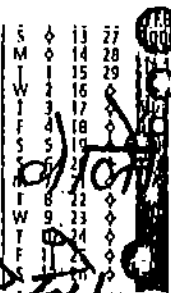
ते अजमा के देव ले

पूरा कृपा करते हैं

विश्वास बढ़ा के देव ले

(ॐ नमः नारायणाः ५ बोली)

(ॐ नमः नारायणाः देवो)



000

जाँ पर कृपा राम की हो
ता पर कृपा करे सब कोई 2
पूरी कृपा करेंगे उगुजी
विश्वास बढ़ा के देव ले

ਦੁਆਰ ਮੰਜਨ ਕਏ ਫਰੋਗੇ
ਫਰਿ ਗੁਰਾ ਗਾ ਕੇ ਦੇਵੇ ਲਾ

ॐ नमः नारायणा
नोलो

"	"	"	" "
"	"	"	" Gold
"	"	"	"

ज्या पर कृपा दृष्टि अनुकूल।
ताही न त्याप त्रिविध भवशूल॥ 2
पूरी कृपा करते हैं

शरणा मे आ के देख लो

दुख भजन कह हरे।

ਦਰਿਅਸੀ ਜਾ ਤੇ ਦੋਖੀ



S	0	12	20
M	0	13	27
I	0	14	28
W	1	15	29
I	2	16	30
I	3	17	31
S	4	18	0
S	5	19	0
M	6	20	0
I	7	21	0
W	8	22	0
I	9	23	0
S	10	24	0
	11	25	0

हमारे मन में कभी भी संशय नहीं आना
चाहिए कि कोई दिन जारी है हमारे लिए
क्योंकि सारे दिन भागवान के द्वारा बनाये
गये है। अगर पुण कभी पूरा हुआ है तो

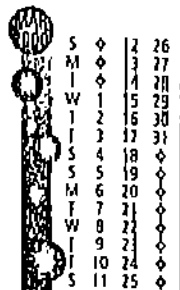
माह दिवस मुहूर्त गले
जिन को नदरी करे (बाबाजी)

धन गुरु नानक
पुन दो लोको धन गुरु नानक

इस लिए आओ सारे मिल के
दिवाली मनाये और

सदा उत्पन्न रहे

जीवन में सदा मुस्कान हो ओहों पे
घोरे 2 रात्र जी का नाम हो।



23

FEBRUARY
WEDNESDAY

- 38 -

(सत्ता दी रोज दिवाली) 2010

मेरी रोज दिवाली जी कि
मैनु मिल गया जग दा बाली

मैं नचा ते गावा जी कि
देव के सूरत इस दी पारी

II मेरी रोज - -

रबेले, मेरे अग सग रहदा,
कदे न झुली छोडे

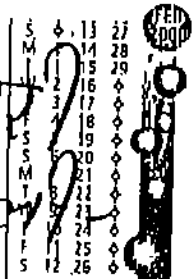
अपनी याद करादा रहदा

कदे न ओह मुह मोडे

मैं इस दी हो गई जी कि

खिल गई, दिल दी, रह फुलवा

मेरी रोज दिवाली



ज्ञान दा दीपक, अन्दर जगता।
 अज्ञान अन्धेर मिटाया।
 अन्दर जद मै माती मारा
 मेरा प्यारा, नजारी आया।
 एहदी मस्तली दाई जी कि
 गमल गई सारी दुनिया दारी

मेरी रोज - -

IV

सारी दुनिया मिट गई मेरी
 किसे दी चाह न बाकी
 तेरी मास्ती तेरी हस्ती
 केई न मेरा आकी

हूँ तू ही तूँ दिखदा जी
 मे ते, मेरी मिट गई सारी

मेरी रोज - - - -



S M T W T S S M T W T S
 0 1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11
 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23
 24 25 26 27 28 29 30

25

FEBRUARY
FRIDAY

V

2000 ←

राम नाम दे लड्ड ००० खाव। (० हो जाओ)
 हरि नाम दी मिशरी प प प (चोरो और राम ही)
 माधव नाम दा मेवा खाव।
 मिल गई, मन नू तृपति
 मैं नच्चां ते गावा जी कि
 मैं नू मिल गया, जग दा वाली

मेरी रोज दिवाली

नोट यह सब रामजी की कृपा से
 होता है इस लिए

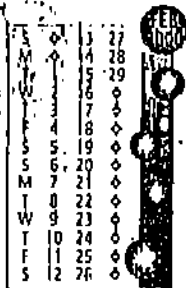
रामजी राम राम

श्री राम

कर कृपा पुन दीन दयाली
 तेरी ओर पूरी गोपाली

19.1.2000

3.40 P.M



जब छे जगत पिता, जगत पति,
मिल ही गया तो, जैसे वह है वैसे हमें
भी रहना है

" तिस बडे को जाने सोय
ए बड बडा डीठा होय "

बाबा जी

धन गुरु नानक जी

सब दा सांगा धन गुरु

नानक

मन बुद्धि चित्त सदा स्थिर रहे जी

लेसार की माया इन्हे धूमे न पाये

SUNDAY 27

तभी जीवन मे परमानन्द अनुभव

कर सकते हैं । आओ तो अपने

राम जी से कहें ।



1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31					
S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S

हे रामजी, धीरे रामजी,

१ ब्या

धरि ऐसी बुद्धि बना दो राम
ऐसा मन बना दो ब्रह्मा

I

मैं दुख में, दुख न मानू
और सुख में, तुम्हें पहचानू

अब ऐसी बुद्धि —

II

ऐसी छया कर दो राम

न उल्लू, मैं गूठे जाग से

बास उल्लू तेरे वचनों से

ऐसी निर्मिता दे

ऐसी बिरथा कर दे

27	28	29	30
1	2	3	4
5	6	7	8
9	10	11	12
13	14	15	16
17	18	19	20
21	22	23	24
25	26	27	28
29	30	31	

मोहे माया का लोभ न आवे
सोना मिट्टी सम हो जाये

ऐसी कृपा कर दो राम
इसी जन्म में कर दो राम

IV बयोक्के ?

मद भूठी माया साथ न जाये
बस तू ही सदा मेरे मन को भाये

ऐसी कृपा कर ---

मान अपमान भी सम हो जाये
मेरा मन सदा शान्त हो जाये

ऐसी पूरी कृपा ---

V

हृदय शोक न मन में आवे

सारा जीवन सम हो जाये

राजीरागराजी ब्रह्म पूरा कृपा ---

19.1.2000 4.45 P.M



MARCH
WEDNESDAY

श्रीराम - 44 -

2000

"शिवरात्रि का लक्ष्म"

शिवोद्यम् शिवोद्यम् शिवोद्यम् 2
(पूरी शरणागति)

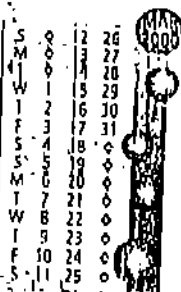
गजन

जाने अनजाने में पाप दुरु
पुत्र आप सब पाप क्षमा करना
तेरे दर पे उरा लगा ही लिया
मोहे अपने ही, दर पर रावना

II

मोहे दिव्य चक्र दे दो पुत्र
अन्तर से तुम को पहचान सके
तेरा दर्शन, इक बार या जोऊ
किसी और को फिर मैं न चाहू

जाने अनजाने





तेरा प्यारा दर्शन पा कर के,
अब तो क्रुद्ध चाहे, नहीं बाँकी बची।
आप मेरे हो, मैं बात आप की हूँ,
यह पवित्र सम्बन्ध जन्मों तक रहे।

IV

पुत्र प्रेम में सब क्रुद्ध गूल गई,
और चाहे नहीं, बिली को याद कर।
मेरे हो अब तू परमापिता,
बस तेरी ही याद में हर क्षण कर।

V

मेरी आशा तू पराग स्वप्न हुई,
बस मैं और तू अब एक हुए।
उपोषि में उपोषि, मिल गई जब,
अब तो हम जीवन मुझ हुए।

S	9	25
M	10	26
T	11	27
W	12	28
T	13	29
F	14	30
S	15	31
M	16	
T	17	
W	18	
T	19	
F	20	
S	21	
	22	



MARCH
FRIDAY

-46-

2000 ←

VI

यह सब तेरी कृपा के सदेक
आनन्द ही आनन्द बरस रहा
शिवोद्दाम शिवोद्दाम का नाद बजा
अब केवल तू ही तू ही बोध बचा

जीवन मुक्ति वास्तविक मुक्ति है
मरने के बाद मिलने मुक्ति वशील
की

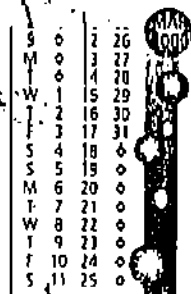
रामजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा पुन दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला

19.1.2000

5 P.M





जब हम स्वयं आनन्दमय होते हैं
तो दूसरों को भी आनन्द दे सकते हैं
ब्रह्मज्ञानी में और भगवान में कोई
अन्तर नहीं

नानक ब्रह्मज्ञानी आप परमेश्वर
(बाबाजी)

अब हम शीहो के शाहनेशाह रामजी से

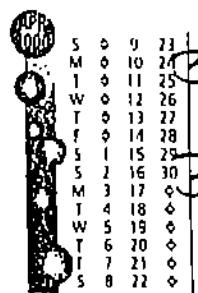
शान्ति धर्म पुन सात वैराग्य से
सद्गुरुओं की गा गा कर मांग कर
सकते हैं। और अपने विकार उन के
चरणों में समर्पित कर सकते हैं।

SUNDAY 5

सद्गुरुओं के ध्यान आते भी

आनन्द आ जाता है। आओ तो

अब आनन्द लें।





MARCH
MONDAY

श्री/राम - 48 -

2000 ₹

(भजन)

शाहों के शहनशाह, शाहों के शहनशाह
मेरे राम जी हरि २

मेरे नारायण हरि २

सब की मोलियां भरना जी
एक सब पर कुवा करना जी
प्रेम शान्ति देना जी
सत सन्तोष देना जी

शाहों के शहनशाह २

III

मेरे राम जी

दया धर्म देना जी २

ज्ञान वैराग्य देना जी २

मेरे राम जी हरि २

शाहों के शहनशाह

शाहों के शहनशाह

S	0	2	26
M	0	3	27
T	0	4	28
W	1	5	29
T	2	6	30
F	3	7	31
S	4	18	0
S	5	19	0
M	6	20	0
T	7	21	0
W	8	22	0
T	9	23	0
F	10	24	0
S	11	25	0

નામ દાન દેના જી ૨
 મહિશાસુ દેના જી ૨
 મેરે રાત્ર જી દરિ ૨
 શાદો ને શહનશાદ ૨

V

સચ્ચી પીતિ દેના જી ૨
 અપના આનન્દ દેના જી ૨
 મેરે રાત્ર જી દરિ ૨
 મેરે નારાયણ દરિ ૨

VI

નમુદા પવિત્રતા દેના જી ૨
 મૌન આરોગ્યતા દેના જી ૨
 સતસંગ સેવા દેના જી ૨
 મેરે રાત્ર જી દરિ ૨ શાદો ને શહનશાદ ૨



9 24
 10 16
 11 26
 12 26
 13 18
 14 29
 15 30
 16 00
 17 00
 18 00
 19 00
 20 00
 21 00
 22 00



मेरा लोभ क्रोध लेना जी २
मोह दूर करना जी २
मेरे राम जी हरि २ शाही के शहनशाह २

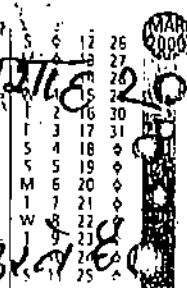
VIII

मेरा अहंकार हरना जी
मेरा पारबंड हरना जी
इष्की दुष्प हरना जी
मद मत्सर हरना जी
मेरे राम जी हरि २ शाही के शहनशाह २

IX

मेरा आलस्य तामस हरना जी
निन्दा चुगली हरना जी
मेरे राम जी हरि २ शाही के शहनशाह २

नवें जो हम नामकी कीजो के पास हैं
उन्हें हम आप के चरणों में रखते हैं
जो आप के पास सदगुरु हैं उन की याचना करते हैं
जीराम राम जी राम राम



→ 2000

"श्री राम" - 51 -

MARCH
THURSDAY



नाम का रंग सब से अच्छा रंग है
मह केवल सद्गुरु ही चढ़ा लेकते हैं

"गुरुदेव मातः गुरुदेव पितः।
गुरुदेव सहोदरः"

जिन को मह रंग चढ़ गया वह धू
गा उठे।

भजन (मेरे)

तेरे नाम दा रंग रोसा चढ़याई ओ
तेरे लाल ने तेरा पल्ला फड़याई ओ

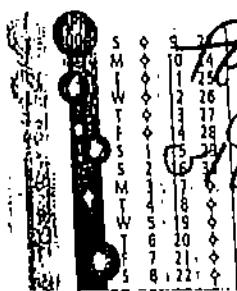
I तेरे नाम दा -
ज्योति तेरी पुगु, जल थल विच जादी र
रात ओह चंगी, जेड़ी तेरे लेखे लगदी र

II

तेरे नाम दा -

सिर है ओह चंगा, तेरे दर तेमक जाये
भीम है ओह चंगी, तेरा नाम ही जो गाये

तेरे नाम दा -





MARCH
FRIDAY

श्रीराम - 52 -

2000

हथ ने ओह चगे, तेरे ओ। जुड़े ने
पैर ने ओह चगे, तेरे लई जो टुर दे ने

IV
नैरा ओह चगे, तेरा दर्शन पादे ने
स्वात ओह चगे, तेरे नाम लग जोदे ने

V
बन्दा ओह चगा जेडा बन्दागी करदा रु
मां दी भगती नाला जो मोल भरदा रु
तेरे नाम दा -

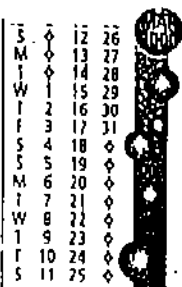
VI
धरती ओह चगी जिधे, मां दा बसैरा रु
वास्ती ओह चगी, जिधे सतसा। तेरा रु

VII
संगत ओह चगी जेहड़ी नाम जपदी रु
सत्गुरु ओह चगे, जेडे दर्श करादे ने

राजजीरामराम

श्रीराम

19.1.2000 9.30 P.M.





भजन 25.3.99 H.P. में लिया

पुत्र की कृपा में बहुत ही शक्ति है। जब भी
हमें लगे कि हमारा जीवन आता-व्यस्त हो रहा है
कुछां मिल गया। या हमारा मन हमारे कन्ट्रोल
में नहीं आ रहा तो हमें जल्दी से पुत्र के
सम्बन्ध हो कर कृपा याचना करनी चाहिए
हे पुत्रो! मुझे मस्ती का जीवन दो। आपकी
कृपा से, यह लसार के दोरे 2 पदाधि। मेरे
मन को पुत्रोत्पन्न में न डाल लेंगे

मेरी जीवन पानी में रहे

परन्तु विकारों का पानी

SUNDAY 12

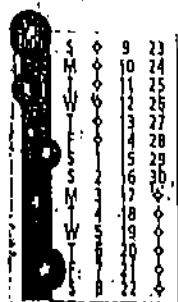
इस के अंदर न आने पाये

यह केवल आपकी कृपा से ही है।

सकता है। नाम भी हमारा तभी

चलता है। विकार भी कर जाते हैं

कृपा मांगते रहे।





तेरी किरपा नाल, मलती है कहीं
कि थोड़ी किरपा होर कर दे।

" " " " " "

I
कृपा में मगदी केवल राम जी तेरी
कर जाये जमा वाली, कासी मेरी
तेरे विच मिले आत्मा मेरी

जी थोड़ी कृपा होर

II
नाम जपां में तेरा दिन और राती
तू ही मेरा भई बन्धु, तू ही लच्छा साथी
तेरे चरणा विच सुख शान्ति पाई

जी थोड़ी कृपा

III
काम क्रोध लोभ मोह, मिट जाये लारा
मैं हूँ ध्यौर गोविन्द की, गोविन्द है हमारा
सब के लिए प्रेम उमड़ हमारा

S
M
T
W
T
F
S
1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31

→ 2000

MARCH

TUE DAY

14

आनन्द ही आनन्द बाहर गीतों के
परमानन्द की मल्ली, रोम रोम में सदा
मेरे रामजी के बोले, जय जय कोरे
जी थोड़ी कृपा होर - -

V

कर जाये सारी अहंता, मैं और मेरी
तू ही तू गाये, सदा रहना मेरी
हर पल निहारो, दवि तेरी
जी थोड़ी किरपा - -

रामजी राम राम

श्री राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर दृष्टि गोपाला

20.1.2000

12.40 A.M



श्रीराम

जब हम अपने ध्यौरे ध्यौरे राम जाएँ,
सतगुरु से, हृषी मांगते रहेंगे, कि हमें
मल्ली की अवस्था में सदा राखें, तब
हम आत्मज्ञान के अधिकारी बनेंगे और
ऐसे जान जायेंगे, कि लक्षार में केवल
आत्मज्ञान ही सब से ऊँचा है शेष ज्ञान तो
केवल शारीरिक सुख के साधन है।

यह भी तो सब केवल मेरे पुत्र की
हृषी से ही सम्भव हो सकता है।

इस प्रकार से अपने आप को
समझाते रहना है कि, कैसे हम इस संसार
के बन्धनों से मुक्त हो कर परम धाम को
प्राप्त कर सकते हैं।

पतंगत्वा न निर्वर्तते

तदुधाम परमम मम

श्री हृषीजी

S	0	12	26
M	0	13	27
T	1	14	28
W	2	15	29
T	3	16	30
F	4	17	31
S	5	18	0
S	6	19	0
M	7	20	0
T	8	21	0
W	9	22	0
T	10	23	0
F	11	24	0
S	12	25	0

(सलापट H.P. में वन।)

आत्म ज्ञान है सब से अंचा।

आत्मा को पहचान ले।

जग में रहे तुम कमल सरीने

जग को सपना जान ले।

श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम

श्रीराम, श्रीराम जापो 2

II

आत्मा में परमात्मा है, लीन है इस तरह
 जैसे जल की बूंद रहती, सागर में हर तरह
 माया का पर्दा हटा दो, एक ही को बस जान लो

श्रीराम श्रीराम श्रीराम

" " " " "

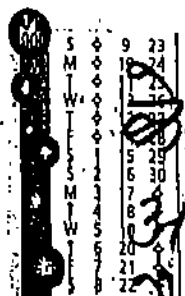
जाप लो जी

III

केवल बिपा राम जी की

आत्म स्वरूप बनायेगी

मेरी ना बन्धन कार के





MARCH
FRIDAY

- 58 -

2000 ₹

परम धाम पहुँचायेगी

आत्मस्वरूप तुम हो टपारे
देह को मिथ्या मान लो

श्रीराम, श्रीराम, श्रीराम

॥ ५ ॥ ५ ॥ ५ ॥

श्रीराम श्रीराम जापोला

IV

रामजी मेरे समर्थ स्वामी,
सारे जग के वाली हैं।

इन की केवल, किरपा मागो,
घट तो जग के माली हैं।

भला ही करते हैं मेरे स्वामी
ऐसा विश्वास धार लो।

श्रीराम श्रीराम २

श्रीराम श्रीराम जापोला

V

रामजी मेरे भगवान हैं

S	26
M	27
T	28
W	29
T	30
F	31
S	1
S	2
M	3
F	4
T	5
W	6
T	7
F	8
S	9
S	10
	11
	12
	13
	14
	15
	16
	17
	18
	19
	20
	21
	22
	23
	24
	25

→ 2000

- 59 -

MARCH

SATURDAY



इन का करना दिया है
जो भी इन की शरणा में आता

करते सदा कल्याण है

"कर कृपा" का मन्त्र उच्चारो

जीवन अपना सवार लो

श्रीराम श्रीराम श्रीराम

॥ ॥ ॥ ॥ जाय लो

राम श्रीराम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाल॥

SUNDAY 19

तेरी ओर पूरी गोपाल॥

25.1.2000

3.10 P.M.

S	9	23
M	10	24
T	11	25
W	12	26
T	13	27
F	14	28
S	15	29
S	16	30
M	17	31
T	18	1
W	19	2
T	20	3
F	21	4
S	22	5

दुर्गा अष्टमी (नवरात्रे)

नवरात्रे साधना के दिन होते हैं, व्योम के
इसमें वृत्त रोवे जाते हैं, रवेलरी में जल
चढ़ाना, रोजा ज्योति जगाना, सारा दिन
भजन कीर्तन करना, केवल फल-
आहार करना।

जबरातजी अमोघावाधियों से विद्वु
गेये, तो सबने फल आहार किया, जब तक
रातजी हमें नहीं मिलेंगे, कुछ अनुबर्गैरु नहीं
खायेंगे, इस लिए अगर हम साधना उग्र-प्राप्ति
के लिए करते हैं तो हम रातजी मिलेंगे,
अर्थात् हम रातजी जैसे बन जायेंगे।

इस लिए थोड़ा ध्यान हमने तपासना
करना है। सयंम रावना है, मन का, वाणी
सारी इन्द्रियों का, इस के लिए रुपा चाहिए



મગન (અદમ્ય)

आया अष्टमी का त्यौहार
मेरे राजाजी मेरे नाल
मेरे सानाऊ मेरे नाल
मेरी मध्या मेरे नाल

मिल के बाजाओ सब तालियां

II हा तालिया

अहं सिद्धि न वनिधियां मिलेगी
तेरी मोली आनन्द से भरेगी
अन्तर हो जाये उकाश।
हो अज्ञान अन्धेर विनाश।

मिल के बाजाओ- -

III

आठो वहर नाम है जपना
नाम जपना कभी भी न थकना।
यदा सदा रहो हो गियार

S	1	23
M	10	24
T	11	25
W	12	26
T	13	27
F	14	28
S	15	29
S	16	30
M	17	31
T	18	
W	19	
T	20	
F	21	
S	22	

22

MARCH
WEDNESDAY

- 62 -

2000 4

कोई कष्ट न आवे पास

मिल के बजाओ ---

हो तालियाँ

IV

आठो इन्दियों को वस में है करना

सब इन्दियों में राम नाम भरना

ज्यादा बातें न बनाओ

इन में राम जी को बसाओ

मिल के बजाओ सब तालियाँ

V

हो तालियाँ

आठ नाम के लड्डु रोज खाना

हरि (ॐ) राम राम, माधव गोविन्द कृष्ण

किरपा धाम है तेरो नाम

मिल के बजाओ

हो तालियाँ

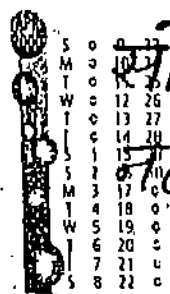
S	0	12	26
M	0	13	27
T	1	14	28
W	2	15	29
T	3	16	30
F	4	17	31
S	5	18	0
M	6	19	0
T	7	20	0
W	8	21	0
T	9	22	0
F	10	23	0
S	11	24	0
		25	0

आहों याम अपने रांग जी को सभालो
बालपन यौवन जुड़ा पा सुधारो
पुत्र जी सदा है तेरे साथ
तेरा पूरा हो विश्वास मिल के वजाओ...

दां तालिया
 VIII
 सोरे रिश्ते अपने पुरु से बनाना
 माता पिता बन्धु हरि को ही जानना
 बाकी स्वार्थ का ससार
 कोई करे न सच्चा प्यार

पाठ
 किसी समय में जग से है जान।
 होगी सुबह, दोपहर, या हो शाम में।

सारे कालों में, नाम जपना
नहीं मृत्यु, से भी डरना। मिल के ---



24

MARCH
FRIDAY

X - 64 -

2000 ←

हम हसते हसते जाग से जाओगे
 जां कर उगु को हल सुनाओगे
 अब न गेजना बारम्बार
 अब तो आये तेरे द्वार
 मिल के - - -

X

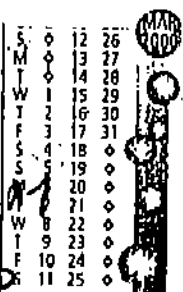
यही विनती हमारी स्वीकार है।
 उगु आप तो परम उदार है।
 तेरी सगत है अनजान
 करना सदा इस का ध्यान

मिल कर बजाओ।
 ही तालियाँ।

रामजीराम राम

जीराम

कर कृपा उगु दीनदयाली।
 तेरी ओट पूरी गोपाल। 25. 1. 2000





समझना में बहुत शक्ति है, हर समय
 हर पल, सब कुछ मेरे राम जी का है ऐसा
 ध्यान करते रहना शक्ति है समझना है
 अपने प्रभु से समा मागना और मान लेना
 कि हम पापी हैं। यह भी शक्ति है, दर्शन के
 लिए प्रार्थना करना, रोना, विरह होना
 यह सारे शक्ति के ही लक्षण हैं। अपने आप
 को सदा, दायाँ का भी दायाँ समझना,
 समय की कदर जानना, सारे संसार में से
 सब से ज्यादा महत्त्व अपने गुरुदेव, रामजी,
 ईशदेव, को ही देना, यह भी शक्ति है। SUNDAY 26
 पश्चात्ताप करते रहना, आगे आने वाले
 समय के लिए विनती करना, यह सब
 अपने रामजी को मिलने के साधन
 है, ऐसे भजन गाँ गा कर प्रभु
 को रिक्त हो। स्वीकृत जायेगा। /



S	9	24
M	10	25
T	11	26
W	12	27
T	13	28
F	14	29
S	15	30
S	16	31
M	17	
T	18	
W	19	
T	20	
F	21	
S	22	

27

MARCH
MONDAY

राजन - 66 - (नय्या हवाले कर दो)

ऐ लो आई मेरी नय्या, सभालो राम जी
सभालो राम जी, मह है तेरी राम जी
ऐ लो आई - - - - -

II

करवाओ अपनी सेवा पूजा, मन चित्त ला के
होगये सोरे कारज पूरे, दर तेरे आ के
तुम्हरे बिना न सहारा, मेरा कोई राम जी
ऐ लो आई - - - - -

III

हम जन्मों के बपटी और कामी
आप जी बिना न कोई, हमरा स्वाधी
अपना बेडा आके पार लगाओ राम जी
ऐ लो - - - - -

IV

धुप गया दिन, देवो चढ गये तोर
तुम्हरे बिना ^{मेरी} विगड़ी, अब कौन सवारे
जल्दी आओ राम जी, देर न लाओ राम जी

16	26	36	46	56	66	76	86	96
17	27	37	47	57	67	77	87	97
18	28	38	48	58	68	78	88	98
19	29	39	49	59	69	79	89	99
20	30	40	50	60	70	80	90	00
21	31	41	51	61	71	81	91	01
22	32	42	52	62	72	82	92	02
23	33	43	53	63	73	83	93	03
24	34	44	54	64	74	84	94	04
25	35	45	55	65	75	85	95	05



रे लो आई मेरी नय्या

V

दासमदास बन के आये। आय के डोरे
सारा जग दोड के मट बन गये तुम्हारे
तेरे बिन हमरा कोई न सहारा रामजी
रे लो आई मेरी - - -

VI

बाकी जीवन अपने लेटे लगाओ,
जन्मो जन्मो के कर्म मिटाओ।
किरपा कर के बिगड़ी दशा,
समांलो राम जी रे लो आई - - -

VII

नय्या अब मट हो गई पुरानी,
इस मे विद्वयो का भर गया पानी।

आनी कृपा से विकार मिटाओ रामजी
रे लो



S
M
T
W
T
F
S
S
M
T
W
T
F
S

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27
28
29
30
31

रामजी रामजी

कैलाश

25.1.2000

11 P.M.

आश्विन केवल अपने राम जी का हुक्म मानते हैं, प्रभु की आज्ञा है, पांच बार दिन में प्रार्थना अवश्य करनी है, लवरे शाम पांच माला "कर कृपा" के मन्त्र की 10 माला गुरीराम नाम की अवश्य करनी है, (आप करवा लेना रोमे अपने राम जी से प्रार्थना करनी है)

1. निन्दा चाली नहीं करवाना।

2. झूठी झूठ नहीं करवाना। (कृपा करना)

3. झूठ नहीं बुलवाना। (कृपा मागे।)

(4) चोरी नहीं करवाना। (कृपा करना)

(5) कड़वा नहीं बोलेंगे। (कृपा सनना)

(6) मान अपमान बराबर समझेंगे।

आर आप कृपा करेंगे राम जी
सब में अपने राम जी को देखें (ज्योति देखें)

समता दृष्टि के लिए विषय कृपा

→ 2000

आर ऐसा जीवन बन जाये ता मन्दिर
मस्जिद गुरुद्वारे सब गौरा हो जाते है

फिर हम केवल अपने रामजी के साथ
ही रहना चाहेंगे और रहेंगे मानसिक रूप से।
" और कहेंगे गा गा कर "

नाजम

मुल्ला तेरी ओ, मलीन मदीओ बड़े
कि आशिका दी पीत बवरी
आशिक राज के सुनी ते जा चढ़े
कि आशिका दी पीत बवरी

II

मुसलमान न रब्व दा सौरा

हिन्दु न लगदा साला।

रब्वी इक मुहब्बत नामो

दोहा वा मुह काल।

S
M
I
W
T
F
S
S
M
T
W
T
F
S

10 24
11 25
12 26
13 27
14 28
15 29
16 30
17 31
18 1
19 2
20 3
21 4
22 5

ਨੇ ਰਬਾ ਲੀਧ ਸਭੇ ਵਸਦਾ
ਨੇ ਵਸਦਾ ਗੁਰਦੁਆਰਾ
ਭੁਲੇਸ਼ਾਹ ਰਬ ਓਥੇ ਵਸਦਾ
ਜਿਥੇ ਵਸਦਾ ਸਤਗੁਰੂ ਧਾਰਾ

III

ਮੁਲਾ ਲੇਰੀ ਓ

ਆਗਿਕ ਰਬ ਦਾ ਹਰ ਕੋਈ ਭੜਦਾ
ਹਥ ਵਿਚ ਸਾਲਾ ਫੜ ਕੇ
ਆਗਿਕ ਵਿਚ ਖੂਨ ਨ ਰਹਦਾ
ਕੋਈ ਅੰਦਰ ਬੇਰੰਗੇ ਭੜ ਕੇ
ਹੜਿਆਂ ਫੁਕਿਆ, ਕੋਯਲਾ ਹੋਇਆ
ਦਿਲ ਕੋਯਲਾ ਹੋਯਾ ਸੜ ਕੇ
ਸੰਤੂਰ ਤੋ ਧੁੰਦੋ ਸਜਾ ਰੰਗ ਦਾ
ਜੋ ਗਯਾ ਸੁਲੀ ਚਟ ਕੇ

ਮੁਲਾ ਲੇਰੀ ਓ

26	27	28	29	30	31
1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24
25	26	27	28	29	30



राखी जागरा मरु कहावरा।

राखी जागरा कुतै

भोके मूलरा वन्द न हुन्दे

जा रीडा ते सुते

मालिक दा दर मूला न दंडे

लाव माररा भोवे जुते

मुल्ला तेरी ओह

V

रेखी कृपा हम कर दे।

आशिक वने हम सच्च ने

दूर तेरे नू कंदे न दंडि

असी दुनिया विच न फव्वे

SUNDAY 2

S	14	28
M	15	29
T	16	30
W	17	
T	18	
F	19	
S	20	
S	21	
M	22	
T	23	
W	24	
T	25	
F	26	
S	27	

माली राम राम

श्रीराम मुल्ला तेरी

कर कृपा पशु दीन दयाला

तेरी ओर दूखी गोपाला 27. 1. 2000

29.01



APRIL
MONDAY

-72-

श्रीराम

2000 ←

(नाम महिमा)

जब हम अपने भोले भाले मन को नाम
की महिमा गा गा कर सुनाते रहते हैं
तभी यह नाम की ओर मुड़ जाता है
नहीं तो माया इसे नचाती है
और दुखी करती रहती है।

भोले बाबा पावती से परमाते हैं

"उमा दारु जोषित की न्याहि

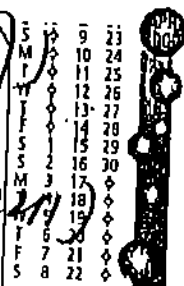
सबाहि नचावत राम गुसाई"

आओ तो सौर मिल कर, नाम की
महिमा गोयें और परमानन्द पायें

हरि का नाम सदा सुवदाई

कलियुग केवल नाम (गोवांजी)
आधारा

(रामायण मंत्र)



अंजन

ओन्हा जन्म जन्म सुख पाइआ

जिन्हां ने तेश नाम जपया।

जिन्हा नाम जपया, जिन्हा ताप तपय।

ਓਨ੍ਹਾ ਸਮਝੀ ਗੁਰਾਂ ਜੀ, ਤੇਰੀ ਵਾਰਾ॥੧

जिहाने तेरा नाम जयया।

II

3417E/ - - -

जिन्हा मन मारिआ, जिन्हा तन मारिआ.

ओहा जाग ते परम पद पाइआ

ਜਿਹੜੇ ਚਾਰ ਨਾਮ ਜਪਿਆ

III

31-ET 01-TH - .

ਮਨੋ ਹਰੁ ਰਹੁਲਾ ਗਏ ਤਨੁ ਸੁਖ ਮੁਲਾ ਗਏ

ਓਨ੍ਹਾ ਨਾਮ ਦਾ ਵੀਧ ਜਗਾਯਾ।

ਜਿਹੜਾ ਨੇ ਫੇਰਾ ਨਾਮ ਅਧਿਆ।

ओन्हा गरम - - -

MAY 1961	S	14	28
M	15	29	
T	16	30	
W	17	31	
T	18		
F	19		
S	20		
S	21		
M	22		
T	23		
W	24		
T	25		
F	26		
S	27		

5

APRIL
WEDNESDAY

-74-

2000

IV

सतसगं अन्दर मोली हरि
मिलदे ने घर धीरे धीरे
सादे गुरो जी ने आव सुशाया
जिन्हां ने तेरा नाम जपया

ओन्हा जन्म जन्म -

V

हमें श्री राज का सतसग दे दे
अपने नाम का रंग चढा दे
सादे राम जी ने ग्रही सिवाया
जिन्हां ने तेरा नाम जपया

ओन्हा - - - -

रामजी राम राम

श्री राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला

27.1.2000 (3 P.M.)

S	21	APR
M	22	2000
T	23	
U	24	
N	25	
S	26	
S	27	
S	28	
S	29	
S	30	
M	1	
T	2	
U	3	
N	4	
S	5	
S	6	
S	7	
S	8	
S	9	
S	10	
S	11	
S	12	
S	13	
S	14	
S	15	
S	16	
S	17	
S	18	
S	19	
S	20	
S	21	
S	22	

"अरि"

अपने रामजी से, अपने सतगुरु से लड़ा
मह ही मागो कि हमें सतसाग, सेवा, सिम्हरा, दे दो।
प्रेम भाव दे दो, अहमता और ममता मिटो दो।
आओ, तो अपने शाही के शहनशाह रामजी
से माचना करें सत की, सद्गुरुओं की।
जिसमें सदैव सद्गुरा ही हैं वह भगवत्
स्वरूप हैं। मह केवल उगु हुआ ले ही
पाए हो सकते हैं। गा गा कर मागो

(अज्ञान)

शाही के सदनगाह है।

तेरे दर आया संवाली

शान्ति से ओली गर दे।

जैसे न दर से खाली।

21/61 के 21/62गाए

II

१३२ ने यह जाग रचाया।

73110



APRIL
FRIDAY

- 76 -

2000 ←

और डरी अपनी माया
माया से अलिप्त कर दे।
बनूं तेरा निरवकाश चुनारी

III

आहो नै

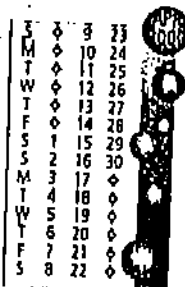
तेरे दर पे जो भी आया
तूने कठ से लगाया
अरपूर प्रेम दे कर
बिगड़ी तूने सवारी

आहो नै

IV

हरि दो जहा के वाली
वरदान दे दे आली
तेरा दर्श अन्तर पाये
यही विनती है हमारी
सेवा से मोली गर दा
जाये न दर ले खाली

आहो -





नहीं चाहे राज धन की
नहीं चाहे भूँड़े जाग की
भरूँ से मोली भर दे।
जोय न दर से खाली

शाहों के शाहशाह

VI

तन मन यह धन तुम्हारा
मुझे है तेरा सहारा।
मेरी अहमता आप फिरो दे।
पूरी नम्रता दे दो सारी
खिरपा से मोली भर दे।
जोय न दर से खाली

शाहों के शाहशाह

SUNDAY 9

VII

मेरे माता पिता भी तुम हो
मेरे भाई बन्धु तुम हो।
बिबल तुम लगो ही जोड़ी
मने सारी रिश्ते दारी



S
M
T
W
T
F
S
S
M
T
W
T
F
S

1 28
2 29
3 30
4 31
5 1
6 2
7 3
8 4
9 5
10 6
11 7
12 8
13 9



APRIL
MONDAY

- 78 -

2000 ₹

अब पेस से मोली गर दे।
मही विनली है हमारी

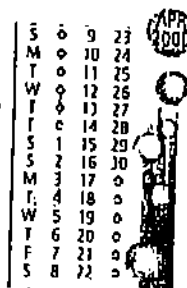
हर तुम ^{VIII} अपना बनाया।
मेरी दूर कर दो माया।
अविनाशी जीव तम्हारा।
तेरा ही हूँ पुजारी।
सतसा से मोली गर दे।
मही विनली है हमारी

राजजीराजराज

श्रीराज

“कर कृपा पशु की नदयाला
तेरी ओर दूरी जोयाला”

10.15 P.M. 28.1.2000





जब हम ऐसे राज अपने राज जी से माग
करते हैं, कि हे पुत्रो, आप हमारी बुद्धि सदा
साक्षि बख सको, इस में सदा तू ही तू रह जाये
मे मेरी, विलकुल समाप्त हो जाये, तब हमारा
जीवन, समाप्त हो जाता है। समता दृष्टि में
तो सदा आनन्द ही आनन्द है। सम दृष्टि
समर में रावनी है, सम वर्ती नहीं हो सकते
समर का व्यवहार तो वैसे ही चलाना है
परन्तु सब में अपने राज की, प्रभु की
ज्योति निहारते हुए, समता भाव, रावना
है। और ऐसे ऐसे भजन भी निर्य
गुन गुनाते रहना है पहले इन्हे माद
करना है।

S	14	18
M	15	29
T	16	30
W	17	31
T	18	
F	19	
S	20	
S	21	
M	22	
I	23	
W	24	
T	25	
T	26	
S	27	

आओ तो, पहले हम मिल कर
बोलें ?

भजन

किये नाल राग नही, किये नाल द्वेष नही
आत्मा आनन्द मेरी, कोई वी चलेन नही

II

समझ नही आऊंदी मैं, बिदे नाल प्रेम जोड़ा
सभो विच राम बसदा, बिदे वल्लो मुह मोड़ा
किये दा तो मेरे वल्लो, आयसी द्वेष नही

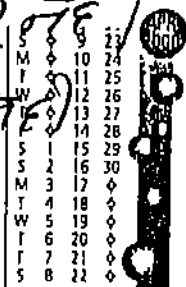
III

हाकिम बरा किये ते नही, हुक्म चलाया मैं
किये दा न दास बरा, हथ नू फैलाया मैं
गूठी ए सराय विच, रहया हमेशा नही

IV

किये नाल लैरा देरा, स्वारथ व्यवहार नही
बिना अयेने राम जी दे, किये नाल धार नही
आत्म ज्ञान जे हा होर कोई उपदेश नही

आत्मा आनन्द -



खुशी नाल फुलना नही, हल के बुलावे, नहि
गुस्से नाल डलना नही, गल कट जावे कोई
जोश नही आशा देना, क्रोध आवेश नही

आत्मा आनन्द ---

VI

अन्दरों ते बाहरीं चीला, इको रंग रंगना रु
दिल दी स्पष्ट गल आवेशों, नही सगं रा रु
कपट फरेब दा, बनना आवेश नही

आत्मा आनन्द ---

VII

चमन जो सच्चा, इक पुत्रु दा धार है
कान्हू फेर दिल विच, दुई दा विचार है
मुल साहनू सब दा, रास जी दा उपदेश नही

आत्मा आनन्द ---

श्रीराम

कर कृपा पुत्रु दीन दयाला

तेरी ओट पूरा गोपाला 29.1.2000

2.408-11

MAY	14	28
2000	15	29
S	16	30
M	17	
T	18	
W	19	
T	20	
F	21	
S	22	
S	23	
M	24	
T	25	
W	26	
T	27	
F	28	
S	29	

राम नाम अमृत है, राम नाम चन्दन
 राम नाम स्वर्ण, राम नाम बन्धन
 राम जी के नाम के हम भी हैं मतबौर
 राम जी के --

IV

राम राम जयों राम ही दयागो
 राम नाम पेस घर घर जगाओ
 उन्ही की शरणा हो के
 बन्धन सब टोरे

राम जी के --

राम जी राम राम

श्री राम

कर लुपा पुत्र दीनदयाला
 तेरी ओर पूरी गोपाला

S	0	14	28
M	1	15	29
T	2	16	30
W	3	17	31
T	4	18	0
F	5	19	0
S	6	20	0
S	7	21	0
M	8	22	0
T	9	23	0
W	10	24	0
T	11	25	0
F	12	26	0
S	13	27	0

श्रीराम

राम नाम की महिमा, ध्यान की महिमा
अन्तर में मानसिक जप की विधि केवल
राम जी, ही सिखाते हैं, बताते हैं, जिससे
हमारा जीवन उज्ज्वल हो जाता है। ऐसे
राम जी की उपासना करते करते
ऐसा भाव भजन के रूप में प्रकट हो
जाता है।

भजन

रब मेरा सतगुरु बरा के आया।
मै नू बेख लैरा दे
मै नू बेख लैरा दे ना
मत्था टेक लैरा दे

II रब मेरा सतगुरु

अरशां तो एह चल के आइआ
रूप नुरानी लै के आइआ

S	0	9	23
M	0	10	24
T	0	11	25
W	0	12	26
T	0	13	27
F	0	14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	0
T	4	18	0
W	5	19	0
T	6	20	0
F	7	21	0
S	8	22	0

एहदा रुप नुरानी मैनु वेव लेरा दे

रब्ब मेरा सत्कार -

III

बूटे बूटे चाराणी देदा

सके बूटे हे करेदा

नी एह केहडा माली आया

मैनु वेव लेरा दे, मत्था टेक लेरा दे

IV

जित्थे जा एह चराणा घेरेंदा

डुबदे पत्थर बी तारेंदा

नी एह केहडा

तारु आया

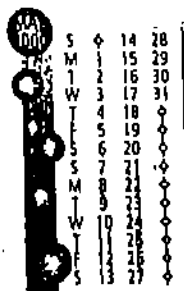
SUNDAY 23

मैनु वेव लेरा दे

॥ ॥ ॥ ॥

मत्था टेक लेरा दे

रब्ब मेरा - - -



24

APRIL
MONDAY

- 90 -

V

2000 €

चिह्ना चिह्ना चोला पाया
 कृपा धाम विच उँरा लाया
 नीरुह कंस सवाररा आया
 मैनु वेरव लैरा दे

रुव मेरा सतगुरु-

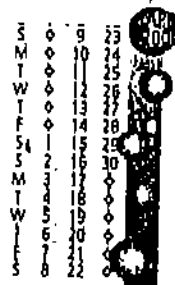
राजजीरामराम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
 तेरी ओर पूरा गोपाला

29.1.2000

6.20 P.M.



→ 2000

" श्रीराम " - 91 -

APRIL
SATURDAY

29

भजन

सांवरे धनग्याम, तुम तो पुम के अवतार हे
सकंठे में फल रहे है, तुम ही खेवनहार हे।
आपका दर्शन II मुझे इस छवि से बारबार है।

हाथ में मुरली मुकट सिर पर, गले में हार हे।

सांवरे - -

III

जाप दोब्बो से भरी नया, भवर में आ पड़ी
थाम लो पतवार, हे गिरधर जो बेड़ा पार हे।

सांवरे - - -

IV

SUNDAY 30

भजन

नगपद के रुदन पर भागने वाले पुत्र
देवन। निष्फल न मेरी आयुओं की धार हे।

सांवरे धनग्याम - -

श्रीराम

S	0	14	28
M	1	15	29
T	2	16	30
W	3	17	31
T	4	18	0
F	5	19	0
S	6	20	0
S	7	21	0
M	8	22	0
T	9	23	0
W	10	24	0
T	11	25	0
F	12	26	0
S	13	27	0

५५०१ ३५१ ३००० ५५०१



MAY
MONDAY

- १२ -

श्रीराम

2000 ₹--

मेरा दिल है दिवाना राम तेरे लिए
तेरे लिए राम तेरे लिए

मेरा दिल है -

II

मेरा मन्दिर में आना जाना तेरे लिए
मेरा दिल है दिवाना राम तेरे लिए

III

चौड़े पट्टे गीता रामायण, मेरा पढ़ना पढ़ाना
मेरा दिल है दिवाना राम तेरे लिए

IV

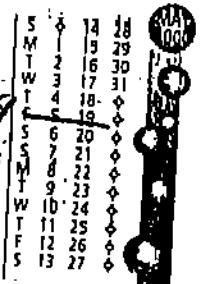
चौड़े करुं पूजा आराधना,
मेरा करना कराना राम तेरे लिए

V

मेरा दिल

यमुना से मरुती भर लाऊँ

मेरा यमुना में आना जाना तेरे लिए -



2000

- 93 -

MAY
TUESDAY

42

जोगन वन मैं भस्मी रमा।
मेरा भस्मी रमाना 24AM तेरे लिए
मेरा दिल - -

चोहे कर पूजा आराधन
मेरा करना कराना राम तेरे लिए
मेरा दिल है - -

रामजी राम राम
श्रीराम

कर कृपा पुत्र दीन दयाला।
तेरी ओर यूँ ही गोपाल।

30.1.2000 4.4 AM

S	11	26
M	12	27
T	13	28
W	14	29
T	15	30
F	16	1
S	17	2
S	18	3
M	19	4
T	20	5
W	21	6
T	22	7
F	23	8
S	24	9

3

MAY
WEDNESDAY

- 44 -

2000

श्रीराम

जैसा कि श्री कृष्णजी कहते हैं

"नर आय ही है शत्रु अपना

आय ही है मित्र भी"

यह 10 Communal meetings अगर जीवन में
निर्देश
धारणा करते हैं तभी हम अपने आप को
मित्र बन सकते हैं। अर्थात् हमारा जीवन
सार्थक है।

(1) हम हमेशा धार्मिक साहित्य पढ़ते हैं ?

2. हम सदा सत्त्विक भोजन खाते हैं ?

3. हम सदा सत्ते महापुरुषों का संग करते हैं ?

4. हमारा रहने का वातावरण शुद्ध है ?

(5) क्या हमने किसी महापुरुष की शरणाग्रही है ?

	S	6	14	28
	M	1	15	29
	T	2	16	30
	W	3	17	11
	T	4	18	00
	F	5	19	09
	S	6	20	18
	S	7	21	07
	M	8	22	96
	T	9	23	85
	F	10	24	74
	S	11	25	63
		12	26	52
		13	27	41

→ 2000

- 95 -

MAY

THURSDAY



6. हम अपना समय ज्यादातर सतसंग तथा
परोपकार में व्यतीत करते हैं ?

7. हम हमेशा शुभ चिन्तन में रहते हैं ?

8. हमारा अभ्यास सदा नाम जप तथा साधना है

9. हमारे सत्कार सदा निर्मल है ?

10. हमने अपने गुरुमंज को संभाल कर रखा है ?

शांजी राम राम

श्री राम

कर कृपा पुत्र दीनदयाला
मेरी ओट पूरी गोपाला

30.1.2000

4.15 AM



कीर्तन धुनि

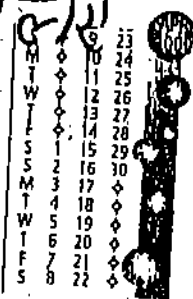
अनदिन केवल करतान ध्यातान
गृहस्थ में सोई निवारी।
“बाबाजी”

गृहस्थ आश्रम में रहते हुए, अगर हम
राज सती के संग बैठ कर कीर्तन
करते हैं, और अपने मन को उपदेश
देते रहते हैं तो हमारा जीवन सफल है
नहीं तो

धिग धिग खाया
धिग धिग सोया
धिग धिग बापड
अग हडाया

“बाबाजी”

सतगुरु हमें धिक्कारते हैं। इस लिए
आओ तो, मिल कर कीर्तन करे
राधाजी के साथ।





कीर्तिन धुनि

बोल हरि, बोल हरि, हरि हरि बोल
केशव माधव गोविन्द बोल 2

II

नाम उगु का है सुख कारी
कर जोयं जिससे पातक शरी
पी ले तूं अमृत रस घोल

केशव माधव

III

पक धारी गज हरि कोदराडम्
मुक्ति दायक परमानन्दम्
हर पल कृष्ण मुरारी बोल

SUNDAY 16

IV

केशव माधव

अर्जुन का रथ आप चलाया



S
M
T
W
T
F
S
S
M
T
W
T
F
S

1
2
3
4
5
6
7
8
9
10
11
12
13

14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25
26
27

गीता कह कर ज्ञान सुनाया
बोल बोल हित चित से बोल

केशव माधव

मनुओं भज ले आहों ग्राम
हरि नाम में लगे न दाम
जन्म गवाता बंधों अनमोल

केशव माधव

VI
हरि लिखत तेरी जाय बलाय
सर्व कल्याण वैसे मन आय
सतगुरु के वचन अनमोल

केशव माधव

VII
अहत गैहत हरि हरि दयाईये
मार्ग चलत हरि गुरा गार्ह्ये
गुरुगारा की वचन अनमोल

VIII

केशव माधव

हरि व्यापक सर्वत्र समान।
प्रेम से पुगट होय मै जान।

	9	23
S	10	24
M	11	25
T	12	26
W	13	27
T	14	28
F	15	29
S	16	30
S	17	31
M	18	
T	19	
W	20	
T	21	
F	22	
S	23	



रामायण के वचन अनमोल

केशव माधव गोविन्द भोल

IX

उमा कहहु मै अनुभव अपन।

सत्य हरि भजन, जगत सब सपन।

भोल के वचन अनमोल

केशव माधव

X

उमा सुनहु ते लोग अभागी

हरि तज होय विषय अनुरागी

भोल के वचन अनमोल

रामजी राम राम

केशव माधव -

श्रीराम



कर कृपा उगु दीनदयाल।

तेरी ओट पूरा गोपाल। "

29.1.2000 3.PM

" श्रीराम "

राम नाम की महिमा सदा गाते
रहेगें तभी हमारे अन्दर "श्रीराम" नाम मन्त्र
सहज अवस्था से चलेगा।

भजन के रूप में गाओ।
रामजी के नाम ने तो
पाथर भी तोरे
जो न जेयें राम
बहै है किस्मत के मोरे

रामजी के - - -

II

रामजी के नाम को, शिवजी ने ध्याया।
तुलसीदास जी ने, स्वस्व लुगाया।
हम भी अयेन रामजी पै, स्वस्व करें

रामजी के नाम

	9	23
	10	24
	11	25
	12	26
	13	27
	14	28
	15	29
	16	30
	17	
	18	
	19	
	20	
	21	
	22	

कीर्तन धुनि

अपने पितामह (पारे न)
घनि का दर्शन करते २

श्री कृष्ण गोविन्द हे सुरो
हे नाथ नारायण वासुदेव । २

II

कैसी सुन्दर दृष्टि है त्थारी
मेरे मन के हरने वाली

श्री कृष्ण - - -

कैसी सुन्दर ^{III}दिव है धरती
सोये हुआ को जगाने वाली

श्रीगुरु॥ - -

सुन्दर छवि मेरे मन को भाई
अन्तर ज्ञान की ज्योति जगाई

ਅੰਤਰਿਕਸ਼ਾ - - -

20	29	30	31	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
1	5	6	7	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27		
2	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	1	2	3
S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S		



ट्यारी ट्यारी धनि मेरे मन के साथ
विवेक वैराग्य और ज्ञान बढ़ाये

श्री कृष्ण - - -

VI

कैसी सुन्दर धनि है ट्यारी
लगेई को भी चलाने वाली

श्री कृष्ण - - -

VII

मह तो सुन्दर धनि बड़ी ट्यारी
माया को भी हटाने वाली

श्री कृष्ण गोविन्द

VIII

ट्यारी ट्यारी धनि मैं तेरी निहाल
आनन्द प्रथ मैं जीवन गुजाल

SUNDAY 7



श्री कृष्ण

श्री कृष्ण

श्री कृष्ण

कृष्ण कृष्ण उग्र दीनदयाल

तेरी ओट पूरा गोवाल

30.1.2000 4:30

AM



MAY
MONDAY

'श्रीराम' - १४ -

2000

भगवत कृपा की अद्भुत महिमा

I

जिसने राम जी की कृपा माग ली उसे लौकिक
पारलौकिक सब उपलब्ध है।

II

भगवत कृपा अति मलिन पारा की भी राम जी
से मिलने योग्य बना देती है।

III

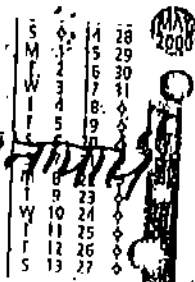
भगवत कृपा असम्भव को भी सम्भव कर देती है।

IV

जिसने राम जी की कृपा का सहारा ले लिया
उसे चिन्ता बिल्कुल नहीं होती।

V

साधक राम जी की कृपा से भवसागर अनायास
ही पार कर लेता है।



जिसे केवल भगवत कृपा का सहारा लिया
उस के लिए रुद्ध भी असम्भव नहीं।

VII

राम जी कृपा में ऐसी चमत्कारी शक्ति है कि
क्षणांतर में भगवान से मिला देती है।

VIII

राम जी की कृपा से विषुद्ध अनुराग पैदा
होता है।

IX

जिसे अपना बल न लगा कर, केवल
भगवान की कृपा का भरोसा लिया, असम्भव
भी, सम्भव हो गया।

X

जिसे राम जी की कृपा पर पूरा विश्वास
है उस के दुःख क्षणों में दूर हो जाते हैं।



10

MAY
WEDNESDAY

XI

-100-

2000

रामजी की कृपा, रामजी से मिला देगी
आलोकिकप्रेम देगी।

XII

भगवान की कृपा मंगाने वाले का जीवन
अवश्य ही सफल होगा।

इसलिए कृपा मांगो।

रामजी राम राम

की राम

"कर कृपा पुनः दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला।"

30. 1. 2000

5 A.M

S	28	29	30	31
M	1	2	3	4
T	5	6	7	8
W	9	10	11	12
T	13	14	15	16
F	17	18	19	20
S	21	22	23	24
S	25	26	27	28



वाँके बिहारी रे, दूर करो दुख मेरा
गिरवरधारी रे, दूर करो दुख मेरा

II

जो भी तेरे दर पे आवे, उस के सब दुख दूर हो जावें
मैं अई शरणा बिहारी रे, दूर करो दुख मेरा

III

श्रीवांके - -

सारे जग की मैं दुकराई, अब तो तेरी शरणा में आई
राखो लाज मुरारी रे, दूर करो दुख मेरा

IV

वाँके बिहारी -

मौरी अहिल्या गरिमा का लारी, सब ही तूने पार उतारी
आ गई मेरी बारी रे, दूर करो दुख मेरा

V

वाँके - - -

गौर मुकुट पिताम्बर धारी, संग में सोई राधा तपारी
दोनों की बलिहारी रे, दूर करो दुख मेरा

राधाजीराम

जीराम 30.1.2000 8 AM

12

MAY
FRIDAY

श्रीराम - 102 -

2000 ←

अपने धारे धारे वाले विहारी को
अपने सतगुरु देव भगवान को, आत्मा के
द्वारा निमन्त्रणा, गा गा कर Invitation
दे रहे हैं ?

गजान

तर्ज - मेरे घर आना सावधिधा
तो हे जाने न दूंगी

मेरे मन में ही रहना मेरे साथ ही

तो हे जाने न दूंगी, 2

राखुंगी तो हे, जन्मो तक

तो हे जाने न दूंगी

मेरे मन में

II

कृपा मागूंगी केवल तुम्हारी

तेरे चरणों पे जाऊ बलिहारी

तेरे में ही लीन हो जाऊंगी

तो हे जाने

S	28
M	29
T	30
W	31
T	1
F	2
S	3
S	4
M	5
T	6
W	7
T	8
F	9
S	10
S	11
M	12
T	13
W	14
T	15
F	16
S	17
S	18
M	19
T	20
W	21
T	22
F	23
S	24
S	25
M	26
T	27

→ 2000

- 103 -

MAY

SATURDAY



कर हुआ उभु दीनदयाल
तेरी ओर घूरा गो वाला।
हुवा मागूगी तुम्हारी
तोहे जाने न दूगी

मेरे मन में ही रहना -

III

तेरी हुवा का हम को नरोस।
तेरी हुवा से बचा बचा नहीं होता।
कदा शरणा में सुनी तुम्हारी

तुम्हे जाने न दूगी
मेरे मन में रहे - - -

IV

कहू विद्या मेरा सदा ही बढ़ाना।
चित करोगें मे सदा ही लगाना।

SUNDAY 14

JUN 2000

S
M
T
W
T
F
S
S
M
T
W
T
F
S

11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24

मैं तो जानो की गोपी तुम्हारी
तुम्हे जाने न दूगी
मेरे मन में ही रहे।
राजीशरण
क्रीशान

31.1.2000 2 P.M

श्रीराम, श्रीराम कहते चलो,
सुख हो, पा दुख हो, सहते चलो। 2

II

श्रीराम जी तो मेरे पारा आधार,
राम जी बिना, मेरा जीवन निम्सार।
नाम धन का खजाना, बढ़ाते चलो।

श्रीराम, श्रीराम - -

III

श्रीराम जी के बिना आस नहीं,
राम जी के बिना विश्वास नहीं,
शत्रु और भेद बढ़ाते चलो श्रीराम - -

IV

श्रीराम जी तो, मेरे घर घर वासी,
श्रीराम जी तो, मेरे सद अविनाशी,
इन्हीं के छद्म में, बसते चलो।

श्रीराम - -

S	0	14	28	MAY
M	1	15	29	000
T	2	16	30	
W	3	17	31	
T	4	18		
F	5	19		
S	6	20		
S	7	21		
M	8	22		
T	9	23		
W	10	24		
T	11	25		
F	12	26		
S	13	27		

→ 2000

V - 105 -

MAY

TUESDAY



जागो जागो अब सोना नही,

हीरा जन्म यूँ ही खोना नही,

गजन क्षिररसा अब बढोते चलो ।

श्रीराम श्रीराम - -

सुख दुख दोनो सम हो जाये,

आनन्दमय यह जीवन हो जाये,

वस नाम की मल्ली बढोते चलो ।

श्रीराम श्रीराम - -

राम श्रीराम राम

श्रीराम

कर हुवा पुत्र दीनदयाला

तेरी ओर पूरा गोपाला "



S	1	25
M	2	26
T	3	27
W	4	28
T	5	29
F	6	30
S	7	
S	8	
M	9	
T	10	
W	11	
T	12	
F	13	
S	14	
S	15	
M	16	
T	17	
W	18	
T	19	
F	20	
S	21	
S	22	
M	23	
T	24	

मज्जन

मन्दिर में रहते हो भगवन।

कभी बाहर भी आया जाया करो।

मैं रोज तेरे दर आती हूँ।

कभी तुम भी मेरे घर आया करो।

मन्दिर में - - - -

II

मैं तेरे दर की जोगी हूँ

तेरे बिन मैं सदा विधेगी हूँ।

तेरी याद में आँसू बहते हैं,

इतना न मुझे लक्ष्मी करो।

मन्दिर में - - -

III

आते बयो पुत्रु जी नजदीक नहीं,

इतना तो सताना हीक नहीं।

मैं दिल से तुम को चाहती हूँ,

कभी तुम भी मुझे अपनाया करो।

मन्दिर में - - -

S	1	14	28
M	2	15	29
T	3	16	30
W	4	17	31
T	5	18	
S	6	19	
S	7	20	
M	8	21	
I	9	22	
W	10	23	
T	11	24	
S	12	25	
S	13	26	
		27	

मैं दीन हूँ, दीनानाथ हो तुम
 सुख दुख में हर दम साथ हो तुम
 मिलने की चाह की हो। कहें
 कभी तुम भी मिला मिलाया करें।

मन्दिर में ---

राजप्री राजराज

श्रीराज

कर कृपा पुत्र दीनदयाल
 तेरी ओढ़ पूरा जोपाल

30.1.2000

9.15 A.M.

JUN 2000	S	11	25
	M	12	26
	T	13	27
	W	14	28
	T	15	29
	F	16	30
	S	17	1
	S	18	2
	M	19	3
	T	20	4
	W	21	5
	T	22	6
	F	23	7
	S	24	8

चेतावनी "

॥५॥

बिधे जा राम का सिमरना,

आगर मुक्ति को पाना है।

ਅੰ ਬਾਨਾ ਮਦ ਵਧੇ ਧਰੁ ਹੈ,

जो एक दिन होउ जाना है।

//

लगा कर पीति विषयों से,

जन्म वृथा गवाता है।

मिला अनमोल यह हीरा.

यह फिर न दाय आता है।

III

महल न साथ जायेंगे

न जोये बाग बागोचे

क्रिये न संगे जाना है

महं मतलब का जमाना है

S	28	29	30	31
M	15	16	17	18
T	2	3	4	5
W	1	2	3	4
T	10	11	12	13
F	17	18	19	20
S	24	25	26	27
S	1	2	3	4
M	8	9	10	11
T	15	16	17	18
W	22	23	24	25
T	29	30	31	



दोस तमार के बन्धन
लगा ले पीति क्षमरसा से
बिना भगवान के बन्दे
न तेरा कोई ठिकाना है

राजजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा पुन दीनदयाला
तेरी ओर घूरी गोपाला

30.1.2000

9.20 AM

SUNDAY 21

S	25
M	26
T	27
W	28
T	29
F	30
S	1
S	2
M	3
T	4
W	5
T	6
F	7
S	8
S	9
M	10
T	11
W	12
T	13
F	14
S	15
S	16
M	17
T	18
W	19
T	20
F	21
S	22
S	23
M	24



MAY
MONDAY

शरारत - 110

2000

भजन (अनुनय विनय)

प्रभु अपने चरणों के काबिल बना दे।
मेरे जीवन हमारा तुम्हारे लिए हो २

II

हो करुणा के सागर, दया के हो दाता,
तुम्हीं जग के पालक, तुम्हीं हो विधाता।
मेरे सोया है मनआ, इसे तुम जगा दे।

प्रभु अपने - - -

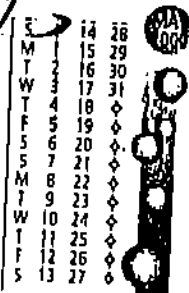
III

मेरे पथ से गिरू तो मुझे थाम लेना,
दया कर के सड़गुड़ि देते ही रहना,
जो सच्चा हो मर्ण वही तुम दिख दे।

IV

तुम्हारे हवाले है जीवन की नध्या, प्रभु - - -
इसे पार कर दो हे मेरे शिष्य,
कहीं डूब जाये न, इस को बचा लो।

प्रभु - - -



दर्श को मैं आया हूँ जन्मों का मर
मरकत। है मनुआ, मर अब भी तुम्हारा
इसे वश मैं, करने की मुक्ति बला दो
उगु अपने चरों - -

VI

तेरी कृपा से बचा बचा नहीं होता
जन्म जन्मान्तरों की मैल अब धोता
कृपा जल सदा, अब मुझमें बरसा दे।

रामजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा उगु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी जो पाला।

31.1.2000 8 AM

कृपाधाम



21077

अपने राम जी से प्रेम की
बोते तथा अनुनय विनय
जन्म देने वाले तू इतना तो बोल रहे
कैसे पुत्र अहम स्वासों का मोल रहे।

II

तेरी लुवा से मिला मुझ को यह नरतन
जिस में बसाऊ तुझे, दिया है मुझे वह मन
तन की खोली आँखें, मन की भी खोली रे।
जैसे चुकाऊ -

III.

मैंने बिधा न कोई, दोन व धरम
दल से भरे हे मेरे सार करम
नाम गुलाब। मैंने तेरा अनमोल रे
कैले चुकाऊ -

	28	29	30	31	c	e	e	d	n	n	n
M	1	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24
T	2	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11
W	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1	1
F	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5	5
S	M	L	W	T	F	S	M	L	W	T	F

→ 2000

- 113 -

MAY



सद में हमेशा रहा, मैं सदा ही दूर,

मोन्दियों से भागवन, मैं रहा सदा ही दूर

बिखीले न बोलें, मैंने मोठे मोठे बोलें

कैसे चुकाऊ ---

IV

अब तो मैं आन चड़ा शरणा में तेरे स्वामी

आप समर्थ पुत्र अन्तर्यामी

शेख मेरा जन्म व्यर्थ न जाये अनमोल

कैसे चुकाऊ ---

रामजी राम राम

श्रीराम

SUNDAY 28

कर लुपा पुत्र दीनदयाला

तेरी ओट पूरी गोपाला

30.1.2000

8.10 AM

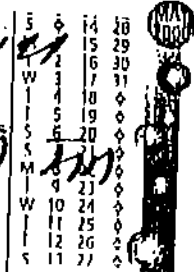
लुपा धाम



अपने मन को सदा जागते रहना है
अपने राम जी को। अपने इष्टदेव को, सन्मुख
देवते हुए अपने मन को वैराग्य दिलोते हुए
समझो रहे। क्योंकि राम जी ही तो श्री कृष्ण
जी के रूप में समझते हैं।

“ यः निशा सर्वभूतान्नाम्
तत्पदाम् जागृति सधर्मी ”

श्री कृष्ण जी
वैसे जीव मात्र को भी तो सतगुरु ही जागते हैं
कृष्णानाम् वन्दे जगद्गुरुम्
यह कैसे जागते हैं। इस भजन के द्वारा
आप ऐसे अनुभव करो कि राम जी आप के
सामने खड़े हों उन का कृपा भरा हाथ
तुम्हारे पिर पर। और कह रहे हैं अपने
को सम्बोधन कर के जागो।



34

MAY
WEDNESDAY

- 116 -

॥

2000

जाग रे मना जाग ले, कहा जाफिल सोया
जो तन उपजिआ सांगे, सो भी सांग न होया

जागो सोनेवाले --

जान बूझ के बावरे, तै बाज बिगारिओ
पाप करत सुकचिओ नही, नह गरब निवारिओ

अब भी शरणा मे आ जागो सोने -
लोके परलोक सवारिगे, तेरे रामजी धारे
जागो सोनेवाले

रामजीरामराम

श्रीराम

कर कृपा पुन दीनदयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला

31.1.2000

2.10 P.M

हुवा धाम

28	29	30	31	
1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30
31				



करवाचौथ चौदह

पति पत्नी का आपस में सच्चा
प्रेम, विश्वास होना ही करवाचौथ है
जैसा कि बाबा जी परमाते हैं

"धन पिर रह न आविरे
बहरा इकट्ठे होय

एक ज्योति दुई मूरति
धन पिर कहिए सोय "

हर साल करवाचौथ आता है परन्तु हम
लोग केवल वृत्त तक ही रह जाते हैं।

इस भजन से राम जी चेतावनी दे रहे हैं
कि हमारा जीवन कैसा होना चाहिए

इसोकि गृहधाम सन से अचा
आभ्र है।

अनदिन कीर्तन कथा व्याख्यान
गृहधाम में सौई निवारी (बाबा जी)

2

JUNE
FRIDAY

- 118 -

करवाचौथ का गजन

2000

आया करवाचौथ चौहार,
मेरे सतगुरु, मेरे राजगी मेरे नाल।
मिल के बटाओ, सब करवरे।

II

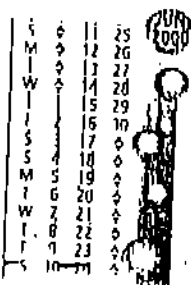
महं पर्व है आपसी प्रेम का,
पति पत्नी के सुंदर दृढ़ नेम का।
आपसी द्वैत भाव न लान।।
मिल के हर चरणो में आना।

मिल के बटाओ ---

III

एक ने कही दूसरे ने मानी,
बाबा नानक कहे दोनो जानी।
दोनों एक दूसरे की माने,
ज्यादा दानवीन न दानो।

मिल के बटाओ -



→ 2000

IV - 119 -

JUNE

SATURDAY



जितना पति है पत्नी को धारा,
उतनी आत्मा परमात्मा को धारी।
मिल के दोनो बुत मिभाओ,
अपने मन को शुद्ध बनाओ।

मिल के बढाओ —

अगर केवल पति के लिए करना,
अपने सद्वर्तियों से खुश उसे राखना।
दोनो मिल के हर गुरा गाओ,
अहंता का भारी रोग मिटाओ।

मिल के बढाओ —

SUNDAY 4

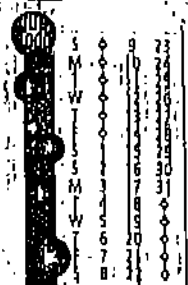
राधाजी राधाधाम

श्री राधा

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
होरी ओर पूरी गोपाला

31.1.2000

2.20 PM कृपाधाम



कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
तेरी ओर पूरी गोपाला।
मेरे प्रभु धरारे की कृपा तो सब पर है
क्योंकि उन का नाम ही कृपाधाम है।
जब हम "कर कृपा" का मन्त्र बोलते हैं तो
हमने इस प्रकार की कृपा मांगनी है ?
गा गा कर

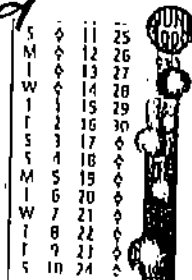
"क्योंकि जिन गाथा

तिन पाया मान "

नानक गाविए गुराणी निधान
गाविए सुरिण मन रखिये भाओ
दुख परे हर सुख घर लै जाओ ॥
जब सारे मिल कर गाते हैं तो सब
प्रकार के सुख के अधिकारी हो जाते
हैं।

रामजीरामराम

श्रीराम



भजन

ऐसी किरपा, ऐसी किरपा ऐसी किरपा
मेरे करो २

II

संतो का संग हो, नाम का राग हो
प्रीति अभाग हो, प्रेम दे।

III

ऐसी किरपा - - -

पशु की लग्न हो, मन तुम में मग्न हो,
हृदय गगन हो, अन्तर प्रकाश हो।

ऐसी किरपा - - -

IV

कोई भी देव हो, कोई भी वेद हो
मन तुम में प्रवेश हो, तेरा ही बाध हो।

V

ऐसी किरपा - - -

तिरी ही चाह हो, भाऊ की राह हो
मन न उदास हो, मेरे लो। तुम ही हो



JUNE
WEDNESDAY

-122-

2000 ←

VII

विषयी न मन है, स्वस्थ यह तन है।
मन मन्दिर में दर्शन दे।

VIII

रेखी किरपा --
कैसा भी राग है, कोई भी दग है।
दर्पित अग अग है कृपा करो।
रेखी किरपा --

राजगीराग राग

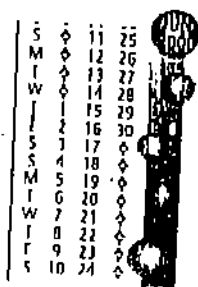
श्रीराग

कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओर पूरा गोपाल।

31.1.2000

11 P.M.

कृपाधाम



भजन

श्रीराम जी जिन का नाम है,
 दृढ़ जिन का धाम है।
 ऐसे पूर्ण गोपाला को,
 मेरा बारम्बार उगाम है।

II

जो सब के मन को धरे है
 ओर नाम स्वज्ञान भरते है
 ऐसे लीलाधारी को,
 मेरा बारम्बार उगाम है।

III

कभी राम जी बन कर आते है
 कभी मोहिनि धवि दिवाते है
 ऐसे मनमोहन धोर को,
 मेरा बारम्बार उगाम है

IV

कभी भीले बाबा बन जाते हैं,
वैराग्य का पाठ पढ़ाते हैं।
ऐसे बृहस्पति भगवान को,
मेरा बारम्बार उरागम है।

V

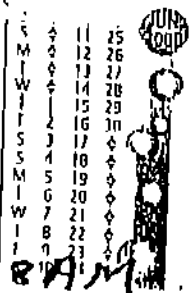
कभी नारायण हरि बन जाते हैं,
शंख चक्र गदा पद्म दिखते हैं।
ऐसे विष्णु रूप को,
मेरा बारम्बार उरागम है।

VI

गुरुनानक रूप में भी आते हैं
गुरुवाराही रहस्य समझाते हैं
ऐसे पूर्ण सत्गुरु को
मेरा बारम्बार उरागम है

रामजीरामराम

श्रीगुरु
1.2.2000



भजन

(मन को चेतावनी)

अपने मन को सदैव समझाते रहे कि यह
हरि नाम के लिए, आलस्य न करे, और
परिवार को बड़ा नहीं समझे, सतसंगों की
ओर, अपने प्रभु की ओर ज्यादा ध्यान दे
क्योंकि बुद्धि में, परलोक में कोई साथ
नहीं देता।

भजन

मन मूर्ख आशियां करता
नहीं भजता, ग्राम धोर नू २
में कई वारी समझाया।
तु दंड दे नम्बरदारी नू

SUNDAY 11

II

एक दिन आशिया भंडे मन नू
चला करतन नू चलिर



JUNE
MONDAY

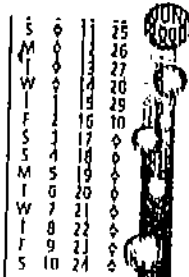
2000

II
 एह मन आलस्य करदा
 नही छडदा नींद पारी नू

III मन मूर्ख ---
 जित्थे होवे निदिया गुगली
 दौड़ी दौड़ी जान्दा।

जित्थे होवे कथा कीस्तान
 ओधे नहिथो जादा
 मै कई वारी समझाया
 तू छड दे नम्बरदारी नू

IV मन मूर्ख ---
 दोते चोते बड़े लाडले
 घुट घुट, सीने लान्दा।
 चलदी वारी, कोई न बुद्धदा
 दराह विच गोते खान्दा।
 मै कई वारी समझाया
 तू छड दे नम्बरदारी नू



हमें अपने राम जी से घड़ी चा धना
करनी है, कि हम जी बेसी खुशारी चढ़ा दे।
जैसी आप को चढ़ी रही

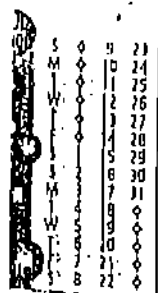
नाम खुशारी नानका चढ़ी रहे दिन रात
हर समय हमारा ध्यान अगर परमात्म तात्वं में
रहता है तो जीवन कमल की तरह खिल
रहता है, अपने राम जी का प्रेम शेष लो
सखारी प्रेम को गौरा कर देता है।

जा को हरि रह है आइओ।

से। अनरस नाही लाइटाइओ।

" बाबाजी "

जैसी धुन एक पुगु थोर को लग गई
वह इस राजन में इस पुनार बरान
कर रहा है।



" श्रीराम "

हरि जी से मिलने की इच्छा धुन लगी है
इसी धुन में मैं तो जीये जा रहा हूँ
दयारे राम जी से मिलने की इच्छा धुन लगी है,
इसी धुन में, मैं तो जीये जा रहा हूँ।

II

नहीं जानता, क्या करना न करना,
जो सतगुरु कराए, किये जा रहा हूँ।

III

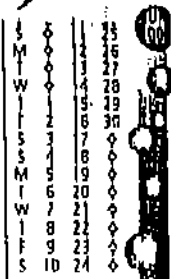
नहीं जानता क्या लाभ क्या हानि,
जो सतगुरु दिलाये लिये जा रहा हूँ।

IV

नहीं जानता, ध्यान जप और समाधि,
मैं जैसे हरि से किये जा रहा हूँ।

V

नहीं आता ध्यान, उग्र का हड्डम में,



→ 2000

JUNE

मार फिर भी ध्यान किये जा रहे हैं।

17

दयालय करेंगे दया दीन पर भी,
मैं खुद को भरोसा दिए जा रहा हूँ।

VII

न जाने, यह कब गिर पड़ेगा यह आशु,
मैं कब से, आसू पीये जा रहा हूं।

VII

जब तक मैं इस तन में श्वास बाँधी,
मैं तब तक, हरि को बुलाती रहूँगा,
सुना के रहूँगा, मैं दिल की पुकार,
इसी जिद के सहारे, जीये जा रहा हूँ।

न हो जोये बदनामी, मेरे हारि की
कि लोग कहते है, तुम को दीनो बे नाथ
कराया के सिधु, अनाथो के नाथ

SMITHSONIAN INSTITUTION

SECRET

11
12
13
14
15
16
17
18
19
20
21
22
23
24
25

11

16

JUNE
FRIDAY

- 130 -

2000 ₹

कि राखो हारि अपने, मन्त्रों की लाज

४

सदा खैर मंगा सोशिया मै तेरी
 दुआ न कोई होर मगदी
 तेरे चरणा च आविरि हिवकी
 दुआ न कोई होर मगदी

रामजी राम राम

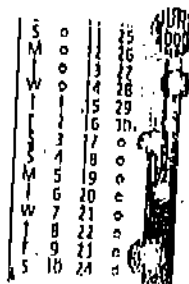
की राम

कर लूपा पुन वनिदयाला
 तेरी और पूरी गोवाल।

2.1.00

12.11.00

रुपा धाम



हरि चरणानु धू के कलम असा पावों
बनी रहे तेरी छपा, तोड़ निभावांगे।

II

रहता प्रेम दा सागर है
भर लो जिन्दे भरनी
एधो प्रेम दी गागर है
असी बी ऐधो गागर
भर लै जावांगे
बनी रहे तेरी किरपा
तोड़ निभावांगे।

III

SUNDAY 18

गढा प्रेम दिवा पाइया ने
रह नही टूटन लगिया
तसा कल के पाइया ने
रहना गढ नू हर बी यक्का बनावों
बनी रहे तेरी छपा तोड़ निभावांगे।

19

JUNE
MONDAY

-132-

2000

ते मुझा समरप ह्वाप्पी ह
 अन्तर्यामी उभु
 तेरी पीति च्योरी ह
 तोड निजा वो
 पूरी आशा हमारी ह
 अन्तःप्रप मे नी तेरा ही नाम दियावो
 बनी रहे तेरी क़िरपा तोड निजावो

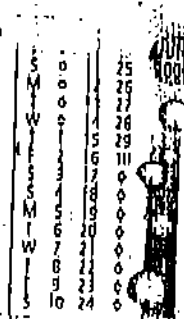
राजजीराज रास

श्रीराम

कर कृपा उभु दीनदयाल
 तेरी ओट पूरी गोपाल

1.45 AM
 2.2.2000

कृपाधाम



→ 2000

" श्रीराम " - 133 -

JUNE

TUESDAY

20

राम नाम की महिमा सदा अपने मन
को गा गा कर बतानी चाहिए ताकि
हमारे अन्तर मन में "श्रीराम" नाम जाय
पलता रहे। भजन के द्वारा सम्मानों।

भजन

राम राम राम कहो राम राम राम
राम राम राम श्रीराम राम राम
आत्मा के पारा प्रिय राम राम राम राम
अन्तर में उगड़ भँधे राम राम राम
बाहर भी देखें श्रीराम राम राम
हर समय जपा करें राम राम राम
मन में वस जाय राम राम राम
जहाँ पर भी सदा रहे राम राम राम
सन्मुख में राम हूँ राम राम राम
हृदय में ध्याम हूँ ध्याम ध्याम ध्याम
कलियुग में केवल रामजी का नाम



JUNE
WEDNESDAY

श्रीराम - 134 -

2000 ←

श्रीराम नाम का जाप करने से
ब्या ब्या लाभ होता है ऐसे धीरे धीरे
भजन गा गा कर इस मन को समझाते
रहेगे तो शान्ति प्राप्त होगी, पाप ताप मिट
जि जायेंगे, माता-पिता से भी बंट कर
प्रेम मिलेगा, सच्चा जीवन धन प्राप्त होगा।
जीवन सार्थक हो जायेगा। मन को चेतावनी!

भजन

राम कहो, राम कहो, राम कहो राम

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय

II

परम शान्ति सुख निधान दिव्य राम राम

राम कहो राम कहो - - -

III

पाप कटे दुख मिटे ले के राम नाम



राम कहो राम जियो राम राम राम

IV

निराधार को आधार एक राम नाम

राम कहो राम कहो राम राम राम

V

भक्तजनर जीवन धन एक राम नाम

राम कहो - - - - -

VI

माता पिता वंध्य सब ही राम नाम

राम जियो राम जियो - - - - -

VII

महादेव सतत जपत मन्त्र राम नाम

राम जियो राम जियो - - - - -

VIII

परम गुरु परम इष्ट मित्र राम नाम

राम कहो राम कहो - - - - -

S	0	9	24
M	0	10	25
T	0	11	26
W	0	12	27
T	0	13	28
F	0	14	29
S	1	15	30
S	2	16	31
M	3	17	0
T	4	18	0
W	5	19	0
T	6	20	0
F	7	21	0
S	8	22	0

23

JUNE
FRIDAY

श्रीराम -136-

2000 ←

चेलावनी

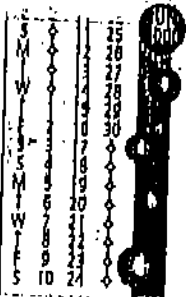
पहुँचि भी शान्त रहे

जब भी नयी सदी प्रारम्भ होती है
तो पहुँचि में जुद्ध चढ़ाव उतार, आ
सकते हैं। इस का उपाय केवल जाधनी
मा नाम जप है, अगर हम साध साध
मह जाप करते रहते है तो शान्ति
रहती है क्योंकि माया संसारी जीवों से
पाप भी करवाती रहती है

"माया महा ठानी हम जानी"

यह सारा सारा एक घर है, (बाबाजी)
परमात्मा का, इस के अगर थोड़े से
बच्चे भी जाप करते हैं तो सारा
सारा शान्त रह सकता है।

जैसा कि पुत्रु वाराणी आई



→ 2000

- 137 -

JUNE

WEDNESDAY

कि आखंड नाम मंत्र ब्रह्म
तो हमने कहा कृपा धाम में तो चार
साल से इस मंत्र मंत्र का -

कर कृपा प्रभु दीन दयाल ॥

देरी ओर पूरी गोपाला ॥

का आखंड मंत्र तो चल रहा है। इस से
असंख्य लोगों को शान्ति प्राप्त हुई
है, तो आवाज आई कि, यह नहीं सही
जून के महीने तक जारी है इसलिए
इस के साथ

जगत जलंधरा राव लै

असनी कृपा धार ॥

SUNDAY 25

इस का पाठ मन्दिरों में घर घर में
करवाओ तो शान्ति हो जायेगी

जब इस का जाप करना है तो
चार वोटें याद रखो

I

एक जगत हमारे अन्दर का संसार है
(मन) जिसमें, कई जन्मों के संस्कार
एकत्रित हैं, उस से यह अशान्त रहता है
है पुत्रो! आप अपनी कृपा धार कर
इसे शान्त रखिये, हे पूर्ण गोपाला जी
दीनदयाल! जी कृपा रखे।

II

एक हमारे बाहर का परिवार इस संसार
में आये तो, यह दौटा सा परिवार बन
प्रकृति ने बना दिया, इस परिवार
पर भी अपनी कृपा धार कर रखना जी
ताकि मेरा मन इन के द्वारा उद्धिगम
न हो, अपनी पूरी उत्तर बुद्धि में
आप को भी जान सके।

IIIJUNE
TUESDAY

एक हमारे आस पास को बताकरा।
है, पड़ोसी है, और दूसरे रिश्तेदार
बगैर, उन की वृद्धि में भी आपने ही
शान्ति देनी है। उन सब पर भी अपनी
कृपा धार कर रावना। ताकि मेरा
मन पूरी रूपेरा आय ही निरन्तर
लगा रहे।

IV

सोर ससार में शान्ति राखिये
कोई प्राकृतिक चटना भी अशान्ति
न करे।

सर्वे भवन्तु सुखिनः।

सर्वे सन्तु निराश्रयाः।

अपनी कृपा सब पर धार कर
रावना।



SMITHSONIAN
LIBRARY
21 24 25 26 27 28 29 30 31
1 2 3 4 5 6 7 8 9 10 11 12

28

JUNE
WEDNESDAY

-140-

2000 ←

ऐसा भाव मन में राखेंगे हर
मह पाठ जून के महीने तक चलेगा।
आप सब भी इस पाठ को करें, कम
से कम 5 घण्टे ज्योति जगा कर
एक आसन लगा देना है, उस पर
बारी बारी एक मगल तो बैठ ही
रहेगा।

पूरी विश्वास है, सारा ससार
शान्त रहेगा। मन्त्र ऐसे बोलना है

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओर पूरी जोयाला

जागत जलंधा राख ले

अपराधी फिर धावोर

राधाजीराध
नाथ

गौराध

3.2

2000

12 Nov

S	25
M	26
W	27
T	28
F	29
S	30
S	1
M	2
T	3
W	4
F	5
S	6
S	7
M	8
T	9
W	10
F	11
S	12

भजन (कृपा मांगे)

JULY

WEDNESDAY



मागों है, मैने श्याम से
वरदान एक ही
तेरी कृपा वनी रहे, जब तक है जिन्दगी

॥

जिस पर उगु का हाथ था, बहवार हो गया
जो भी शिरा में आ गया, उडार हो गया
जिस को भरोसा श्याम पर, डबा कभी नहीं
मागों है मैने -

III

कोई समझ सका नहीं, माया वसी प्रवल
जिसने उगु को पालिभा, बह ही है खल
जिसकी इज्जत के बिना पता दिला नहीं

SUNDAY 30

IV

मागों है मैने -

ऐसे दयालु श्याम से, रिश्ता बना ले।

मिलता रहेगा आपको, जो ऊँछ भी चाह लो।

31

JULY
MONDAY

140

2000 ₹

ऐसा करिमा होगा, जो हुआ नहीं

सागा है ---

IV

कहते हैं लोग, जिन्दगी बिसमत का खेल है
 बिसमत बनाना भी सागर, उस की ही खेल है
 कर ले यकीन अब तेरा ज्यादा समय नहीं

सागा है ---

V

सागा है मैंने रामजी से वरदान रुझ ही
 बनी रहे तेरी छुपा जब तक है जिन्दगी

रामजी राम राम

श्री राम

कर छुपा पुत्र दीन दयाला
 तेरी ओर पूरी गोपाला "

Feb 12. 1 P.M.

22	00
21	00
20	00
19	00
18	00
17	00
16	00
15	00
14	00
13	00
12	00
11	00
10	00
09	00
08	00
07	00
06	00
05	00
04	00
03	00
02	00
01	00

2000

143

AUGUST

TUESDAY

-भजन-

याद कर ले, हरि को याद कर ले
दिल की दुनिया आवाद कर ले 2

II

सच्चे सतगुरु से रहमत मिलेगी
तेरी बिगड़ी यह जिन्दगी बनेगी
नाम जप ले, हरि का नाम जप ले
दिल की - -

III

सच्चे सतगुरु की यही है निशानी
अपने सेवक पर रोखें निगरानी
प्यार कर ले हरि से प्यार कर ले
दिल की दुनिया आवाद कर ले

S	1	10	24
M	2	11	25
W	3	12	26
T	4	13	27
F	5	14	28
S	6	15	29
S	7	16	30
M	8	17	31
W	9	18	
T	10	19	
F	11	20	
S	12	21	
S	13	22	
M	14	23	

राजजी राधराध

श्रीराम

Feb 12 1 P.M



AUGUST
WEDNESDAY

श्रीराम

174

2000 ←

गजन

राम जी, मेरे राम जी, आया हूँ मैं, बड़ी दूर से
ओ मेरे कान्हा (प्यार), देना सहार।

मुखिलों से पाया, मैंने कृपा धाम तुम्हारा।

II राम जी मेरे, राम जी

कृपा धाम वाले धाम तुम्हीं कहलते हो

सकंटे में बस काम, तुम्हीं तो आते हो

आठो घाम अब नाम, तुम्हीं जयाते हो

बत्सी की तान, तुम्हीं सुनाते हो

ओ मेरा प्यार, कान्हा - - -

मुखिलों से कृपा मैंने - - -

III

हरदम तेरा ध्यान, लगन हो तेरी है

कर कृपा की माला, ओने चेरी है

दीनानाथ दयाल बेड़ा पार करो

काम क्रोध मोह लोभ, ०० यत्न - - -

27	28	29	30	31
M	T	W	T	F
1	2	3	4	5
6	7	8	9	10
11	12	13	14	15
16	17	18	19	20
21	22	23	24	25
26	27	28	29	30



IV

लुपा धाम सा रोसा कोई धाम नहीं
 राम नाम सा पावन, जा में नाम नहीं
 हमें तो तेरी भाखी पिया कोई काम नहीं
 कर ले भजन तू पुरानी, लगता दाम नहीं
 ओ मेरा कान्ह। टयार।
 देना सहार।

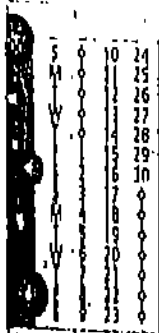
मुझको से पाया, मैंने लुपा धाम
 राम जी, मेरे राम जी, आया तू मेरे

राम जी राम राम

कोई काम

कर लुपा पुमु दीन दयाल।
 तेरी ओट पुरी गोवाल।

1.3.2000 12.45 P.M



श्रीराम जी का विमर्श किया करो।

उस के सहारे जीया करो।

जो दुनिया का मालिक है।

नाम उसी का लिया करो।

II

जो दुनिया --

मानव तन तुमने, यह वे भाग्य से पाया है

विश्व में यह कहते हैं, हीरा जन्म गवाया है

दुष्ट का संग न किया करो, सज्जनों से गुरालिया

जो दुनिया का -- करो।

III

न जाने चलते रह, कब रुक जायेंगे बवासा।

इक ही पल में स्वप्न हो जाये, जग का यह तमसा।

आठो घण्ट जप किया करो। उस के सहारे जीया करो।

IV

जो दुनिया का

हर पक्षी से व्याप करो, सब में वही समाया है

	27
	28
	29
	30
	31
M	1
T	2
W	3
T	4
F	5
S	6
S	7
M	8
T	9
W	10
T	11
F	12
S	13
S	14
M	15
T	16
W	17
T	18
F	19
S	20
S	21
M	22
T	23
W	24
T	25
F	26

→ 2000

1. 11

AUGUST



सारा सारा है यह अपना, कोई नहीं करेगा
द्वैत भाव न किया करे, दुख न किया करे
जो दुनिया का - -

II

सच्चा सुबहें प्रभु भक्ति में, बात न समझे। छठी
वही अमरपद पायेगा, जो पीयेगा नाम की नदी
अमृत रस तुम पिया करे, प्रभु के सहारे जीया करे।
जो दुनिया का - -

सेवा निररा सत्संग, करके, जीवन सफल बनाओ जी
विषय विकारों को तुम छोड़ो, रामजी के। अपना बनाओ जी
त्यर्थ की ज्यादा बातें न बना कर, बात कामची किया करो

SUNDAY 6

रामजी राम राम

श्री राम

कर छपा प्रभु दीन दयाल॥

तेरी ओर पूरी गोवाला

1. 3. 2000 1 P.M.

S	10	24
M	11	25
T	12	26
W	13	27
T	14	28
F	15	29
S	16	30
M	17	
T	18	
W	19	
T	20	
F	21	
S	22	
M	23	



AUGUST
MONDAY

श्रीराम " 110

2000 ₹

सबसे जल्दी उठने के लिए चेतावनी

- गजन -

रे मन जाग जाग जाग 2
तेरे खुल जायेंगे भाग 2

II

पात! काल जय नाम गुरारी
कभी न होय तेरी जिन्दगी खबारी
तेरे पूरी होयें भाग 2

III

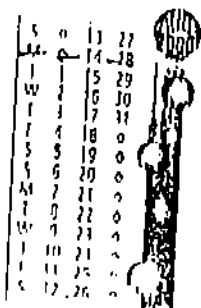
रे मन जाग - - -

रामायण गीता पुनः
अब तो देख ले पुन के नज़ारे
अमृत वेल, मिले पुन अनुराग

IV

रे मन जाग

अल्प आहार और थोड़ी निद्रा
कभी न आवे तुम को तन्दु।



2000

अन्त में भाग जाये यमराज

AUGUST
TUESDAY



II

रे सन जाग - -

अब तो कर ले नेक कमाई
उमरिया तेरी बीती जाई
सतगुरु कहत पुकार

रे सन जाग जाग - -

रामजी राम राम

श्री राम

कर कृपा पुरु दीनदयाला
तेरी ओर पूर्वा गोवाला

1. 3. 2000

3 P.M

S	9	10	24
M	0	11	25
T	0	12	26
W	0	13	27
T	0	14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	0
M	4	18	0
T	5	19	0
W	6	20	0
T	7	21	0
F	8	22	0
S	9	23	0

राम जी राम राम

कृपा धाम की महिमा

ट्यारा ट्यारा कृपा धाम
मिलेंगे कृपा, मिलेंगे राम

II

आओ आओ कृपा धाम
मिलेंगे कृपा मिलेंगे राम

III

ट्यारा ट्यारा - - -

गुरुवारणी गीता रामायणा
का पाठ नित्य होता
जीब घटां आ कर के
जन्मों की मैल धोता
आ के तुम नी करे स्नान

मिलेंगे कृपा -

S	0	13	27
M	1	14	28
T	2	15	29
W	3	16	30
T	4	17	31
F	5	18	0
S	6	19	0
S	7	20	0
M	8	21	0
T	9	22	0
W	10	23	0
T	11	24	0
F	12	25	0
S		26	0

यहाँ बैठ कर प्राणी मन से
 गुरु मन्त्र है जपता।
 मन में धर के दर्शन होते
 पूर्ण मनोरथ करता।
 तुम भी कर लो पूर्ण काम

मिलेंगे कृपा --

V

कृपाधाम में कई सालों से
 नाम पढ़ है होता
 अमृत बनता नाम पढ़ से
 सारे रोगों को खोता
 अगर चाहे तुम तिरो ग्यता।
 इस को बना लो अपना धाम

मिलेंगे कृपा --

श्रीमती राम राम
 कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
 तेरे आट पूरा गोपाल।

श्रीराम
 1.3.2000 4 P.M





AUGUST
FRIDAY

श्रीराम 138

2000 ₹

- भजन -

मन चलो। चलो कृपाधाम
कि श्रीराम श्रीराम गाभेग
श्रीराम श्रीराम गाभेग
हरि(ॐ हरि(ॐ गाभेग

II

मन चलो। - - -

कृपाधाम में नारायण। हरि है
नारायण हरि मेरे धोर हरि है
वह तो। शोबे बजाते दिन रौश
कि हरि ॐ 2 गाभेग

III

मन चलो। - - -

कृपाधाम में राम जी रहते
राम जी राम राम, सब को कहते
सतसंग करते सुबह शाम
कि श्रीराम श्रीराम गाभेग

S	0	13	27
M	0	14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	0
S	5	19	0
S	6	20	0
M	7	21	0
T	8	22	0
W	9	23	0
T	10	24	0
F	11	25	0
S	12	26	0

→ 2000

IV

153

AUGUST

SATURDAY

12

कृपा धाम की सगते न्यारी
सगते न्यारी, ध्यारी ध्यारी
बोले जय श्रीराम
कि श्रीराम श्रीराम गायेगें

V

मन चलो - -

कृपा धाम में अमृत मिलता
सारे रोग शोक यह हरता
आओ पाओ विभ्राम
कि श्रीराम श्रीराम गायेगें

VI

मन चलो चलो

कृपा धाम में किरपा मिलती
कृपा से दिव्य दृष्टि मिलती
साकार दिविते भगवान

SUNDAY 13

कि श्रीराम श्रीराम गायेगें

रामजी राम राम
श्रीराम

1.3.2000

4 P.M.

मन - - -

S	0	10	24
M	0	11	25
T	0	12	26
W	0	13	27
T	0	14	28
F	0	15	29
S	1	16	30
S	2	17	0
	3	18	0
	4	19	0
	5	20	0
	6	21	0
	7	22	0
	8	23	0



AUGUST
MONDAY

श्रीराम

2000 ₹--

भजन (कृपा धाम)

राखो राखो जी कृपानिधान
मैं तो अरि हूँ कृपा धाम

II

कृपा धाम में राम जी बैठे २
देखो लगा कर ध्यान २

III

राखो ---

राम जी मेरे अन्दर बैठे २
सब के सारे काम २

राखो ---

IV

श्रीराम, श्रीराम, यह जपवाते
कर कृपा का देते नाम २

राखो ---

V

कृपा तो इन में बहुत गरीह
ले लो न लगता दाम २

S	1	11	27
M	2	12	28
T	3	13	29
W	4	14	30
T	5	15	31
S	6	16	1
S	7	17	2
M	8	18	3
T	9	19	4
W	10	20	5
T	11	21	6
S	12	22	7

2000

15
रावो रावो

AUGUST

TUESDAY

15

VII

बाके बिहारी यह बन जाते
नारायण को चक्र चलाते
रूप में हैं यह राम
देखो लगा कर ध्यान २

रावो रावो - - -

राजी राम राम

श्री राम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला

1. 3. 2000 7 P.M

S	0	10	24
M	0	11	25
T	0	12	26
W	0	13	27
T	0	14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	0
M	4	18	0
I	5	19	0
W	6	20	0
T	7	21	0
F	8	22	0
S	9	23	0

पजांवी भजन (कृपा धाम)

कृपा धाम दीयां महिमा बंटेरियां
 मैं जांवा वीरे ही वीरे
 होर राम जी दा रूप निराला
 कि भागां वाला दर्श करै

II

एधे हर बेले कृपा बडी दी
 मोली सब दी कृपा नाल भरी दी
 कि कृपा पा सगंत तेर
 राम जी दा रूप निराला
 कि भागां वाला दर्श करै

कृपा धाम - -

III

जेहड़ा ध्यान ला करदा अरदास जी
 ओहदी पल विच पूरी होदी आस जी
 कि सगंत। दे कर्म बरो

S	13	27
M	14	28
T	15	29
W	16	30
T	17	31
F	18	
S	19	
S	20	
M	21	
T	22	
W	23	
T	24	
F	25	
S	26	

→ 2000

154

AUGUST
THURSDAY

17

मेरे राम जी दा रूप निराला
कि भागां वाला दर्श करे

कृपाधाम ---

IV

सारे सेवक। दे भरसा भडार जी
मुहों मगियां मुरादा दे दे नाला जी
कि सगतं जोवे बोर ही बोर
राम जी दा रूप निराला
कि भागां वाला दर्श करे

कृपाधाम ---

कृपाधाम दीयां महिमा बतोरियां
दसां की की रहमत। बोरियां
कि सगतं दा ज्ञान बोट

राम जी दा रूप निराला
कि भागां वाला दर्श करे

राम जी राख

श्री राख 1.3.2000 7.20 P.M.

18

AUGUST
FRIDAY

'श्रीराम' 150

2000 ₹--

(समता दृष्टि)

बड़ी आवश्यक है

भजन

कोई बोले राम कोई अल्लाह बोले
सब मालिक के नाम, कोई कुछ भी बोले

II

सारी उस की भूठी माया, उस का भेद किसे नहीं
एक ही जैसा सब की काया, अला २ है रूप बनाया पाया
बड़ी अजीब है उस की लीला, उस के बिना हिले न
है चर्चा सारि आम, कोई कुछ भी बोले ताली

कोई बोले राम

III

मन्दिर मस्जिद और गुरुद्वारे, उस के ही हैं, उसे सो
जो कोई इन में फर्क विचारे उस की नावन लो बिनारे
राम भी वही, रही भी वही, बाप गुरु ब्रह्मा करमि बही



→ 2000

151

AUGUST
1991

49

हरि ॐ सतनाम, कोई बूढ़ भी बूढ़
कोई बोलै राम ---

IV

मुझ में राम, तुझ में राम, सब में राम समाया।
सबसे कर ली द्यार, जगत् में कोई नहीं पराय।
किस पागल ने फिर यह हमको, लड़ना रोज सिखाया।
इन पागलों का राम जी करेंगे, सकल सारा सफाया।

रामजी राम राम

बीराम

"कर कृपा प्रभु दीन दयाल।
तेरी ओर पूरा गोवाल।"

SUNDAY 20

S	0	10	24
M	0	11	25
T	0	12	26
W	0	13	27
T	0	14	28
F	1	15	29
S	2	16	30
S	3	17	0
M	4	18	1
T	5	19	2
W	6	20	3
T	7	21	4
F	8	22	5
S	9	23	6

પજાંગી મજન

કરવા દે રહ્યા, સન્તા દેનાલ સાઠા

મેલવે
" " " " " " "

II

સારિયાં સગતં / દર્શન નૂ ચલિયાં
ધુટ ન જામે સાઠી રેલ વે

કરવા દે --

III

સ્વાગા તે પીરાગ મુલ ગયા સાહનૂ
રોટી ન જાવે સાધોં વેલ વે

કરવા દે --

IV

જાન તે સાઠી ઓઠાં તે અઈ
લો કાં તે સમઝા ચેલ વે

કરવા દે રહ્યા

-161-

→ 2000

५

AUGUST

TUESDAY

22

विषयां विकारां विच उमर गुणार
दीवं च मुक गमा तेन वे

करवादे - -

करवा दे खना राजजी दे नाल साढा
मेलवे

राजजी राज राज

श्रीराम

23 3. 2000

SEP	10	24
S	11	25
M	12	26
T	13	27
W	14	28
T	15	29
F	16	30
S	17	1
S	18	2
M	19	3
T	20	4
W	21	5
T	22	6
F	23	7

ਪੰਜਾਬੀ ਗਜਨ

ਦੋਹਾ ਜੇਹਾ ਕਮ ਅਜ ਤੇਰੇ ਜਿਸੇ ਲਾਗਾ
ਅਧਨਾ ਹੈ ਰਾਮ ਫਿਰ ਕਾਨੂੰ ਸ਼ਾਮਲਾਗਾ ^ਏ ^ਏ

I

ਪਹਲਾ ਕਮ ਰਾਮ ਮੇਰੇ ਹਫ਼ਤਾ ਵਿਚ ਵਸ ਜਾ
ਹਰ ਪਾਸੇ ਆਵੇ ਮੈਨੂੰ ਨਜ਼ਰ ਨੂੰ ਹਸਦਾ

II

ਦੂਜਾ ਕਮ, ਮੈਨੂੰ ਪਰਵਾਹ ਨਹੀਂ ਮੋੜਾ ਦੀ
ਮੈਨੂੰ ਚਾਹੀਦਾ ਕੇਵਲ ਤੇਰੇ ਨਾਲਾ ਦੇਵਲੀ
ਹਰ ਵੇਲੇ ਮੈਨੂੰ ਅਧਰੋਂ ਕੋਲ ਬਿਠਾਨਾ ^ਏ

III

ਤੀਜਾ ਕਮ, ਜਗਾ ਜਗਾਲਾ ਤੇ ਬਚਾ ਲੈ
ਮਲ੍ਹੇ ਦੀ ਟੋਲੀ ਵਿਚ ਨਾਮ ਮੇਰਾ ਲਾਲਾ ^ਏ

13	27
14	28
15	29
16	30
17	31
18	
19	
20	
21	
22	
23	
24	
25	
26	

THURSDAY 24
चौथा कम मन विचों विषया नू निकालो
 नाम दी ज्योति, मेरे हृदय विच बाल दे
 बुहता नहीओ ओरवा, तूं काहनु दरकामार

V.

દોટાજોદા - -

पजवां कम २याम एह तों सब तो ही
 अन्त बैले होवें तू सामने सेखाए
 बाह पकड़ धाम अपने सीधा ई लैआराए

VII

કેટલા બેદર -

ਸੁਖ ਚੈਨ ਭਾਨਿਤਿ ਦਾ ਘਰ ਵਿਚ ਰਾਜ ਹੋਵੇ
ਗੀਤਾ ਗੁਰੁਵਾਰਾਣੀ ਰਾਮਾਧਰਾ ਦੀ ਆਵਾਜ਼ ਹੋਵੇ
ਮੇਰਾ ਤੇ ਰਾਮ ਤੂੰ ਹੀ ਜੀਵਨ ਬਨਾਨਾ ॥੨॥

VII

ਫੇਰੀ ੨੧

10 24
 11 25
 12 26
 13 27
 14 28
 15 29
 16 30
 17 31
 18 32
 19 33
 20 34
 21 35
 22 36
 23 37

सब तौ आखीर विच रहै। मगं मगंदी
 मैनु ते देवी अयो मन्त्रो दी सांगती
 बिले बिले वी न मैनु दिला तो गुलाना रा

किसी भी वस्तु से नहीं हो सकती। इस अवस्था में सुख ही सुख है। ज्ञान ही ज्ञान है न ज्ञात पात है न ध्रुव दान है। सदा एक रह है।

साधक एक उत्तरी पत्रा के समान है जिस की ओर सतगुरु के हाथ में है। यह गगन में घूम कर सब कुछ जानना चाहता है। परन्तु सतगुरु देखते हैं कि शिष्य कहीं अटक न जाय कहीं गटक न जाय। वह तुरन्त उसे खींच कर अपने पास बुला लेते हैं। सतगुरु समझ समझ पर अपने शिष्य की परीक्षा म भी लेते हैं।

यह सब अग्रगण्य शिष्य को सूक्ष्म शरीर में जाने पर होते हैं। कभी २६ मान में उसे चमकते तारे के दर्शन होते हैं। जिस का प्रकाश नीले रंग का होता है यह सूक्ष्म शरीर का वाहन है। जो साधक को लोक लोकान्तरे की यात्रा में ले जाता है।

2/10/31
2/10/31
2/10/31

(II PART)

नयी सदी के
आर्थिक गोलन

रामजी राम राम

करे कृपापत्र देनि दयाला
हरे और पूरा गोपाला

शब्द 1

हरि चरणा शरणा गोविन्द दुखभजना
दासअपेन को नाम देवहु २

II

हरि चरणा--

दृष्टि प्रभु चारुह, कृपा करतारुह
भुजा गहि कूप, ते काढ लेवही

III

हरि चरणा--

काम क्रोध करे, अध मारआके बन्ध
अनिक देख तन दाद पूरे
प्रभु बिन आन न राखनहरा
नाम सिमरावहु, शरणा सुरे

हरि चरणा--

पतित उद्धारणा, जीअजत तारणा
वेद उच्चार नहि अत वाइओ

गुरा सुखसागर।, बंधु रतनागर।
भगति वदलि, नानक गाइओ।

हरि-चरणा - - - - -

(भावार्थ)

हमें अपने ईशदेव के सन्मुख सदा दास
भावना से रहना है। सदा अपना विषय
एक ही रावना है वह है। नाम, अपने
पुरु से सदा नाम की ही याचना करना है
मन में सदा विश्वास रावना है कि लपार
के सारे दुख केवल नाम से ही दूर हो
सकते हैं। इसलिए ऐसे नित्य प्रति प्रार्थना
करनी है।

हे प्रभो! मैं दोहा का दास आब की

शरणा में हूँ, आपका नाम दुख भोजन है

बस आय हर समय आय अपनी याद स्वयं
दिलोते रहें ।

आयअपनी कृपादृष्टि सदा गुण दीन
दास पर रखें और ऐसी कृपा करें
कि, इस असार ससार में से मुझे अपना
हाथ दे कर उभार लें, अर्थात् इस ससार
की माया का गुण पर प्रभाव न होने दे
मैं तो इन सब विकारों से परिपूरी हूँ
प्रहजितने माया के बन्धन हैं। काम क्रोध
लोभ मोह अहंकार आदि सब मुझे खूब तग
करते रहते हैं, परन्तु मुझे विश्वास है कि
इनसे केवल आय ही मेरी रक्षा कर सकते
हैं। मुझे अपना नाम जपवाते रहिये। जिस
से मेरा मन इन के बन्धन में न हो जाये

आय ही केवल मेरे जैसे पातियों का उद्धार
कर सकते हैं, केवल आय ही मेरे जैसे
तुच्छ जीव को, इन विकारों से बचा सकते हैं
क्योंकि आय का नाम गुरुवत्सल है, आय का
अन्त तो वेद पुराणों ने भी गा गा कर अन्त
में न इति इति लिख दिया।

इसलिए मैं जितना भी, आय का ध्यान
करूँ मजन करूँ थोड़ा, आय कृपा करे बि,
मेरा ज्यादा से ज्यादा ध्यान आय में ही रहे

“ हर समय तुम्हारा चिन्तन है
हर कर्म तुम्हारी पूजा है ॥ ”

रामजी राम राम ॥ श्री राम
कर कृपा प्रभु दीन बाला।
तेरी ओर पूरी गोपाला ॥

Jan 1971		W		F	
8	11	1	4	5	6
9	12	2	5	6	7
10	13	3	6	7	8
11	14	4	7	8	9
12	15	5	8	9	10
13	16	6	9	10	11
14	17	7	10	11	12
15	18	8	11	12	13
16	19	9	12	13	14
17	20	10	13	14	15
18	21	11	14	15	16
19	22	12	15	16	17
20	23	13	16	17	18
21	24	14	17	18	19
22	25	15	18	19	20
23	26	16	19	20	21
24	27	17	20	21	22
25	28	18	21	22	23
26	29	19	22	23	24
27	30	20	23	24	25
28	31	21	24	25	26

" श्रीराम "

(5)

शब्द २

हरि धारहु, हरि धारहु किरप।
 कर किरपा, लेहो उभोर राम
 हम पापी, हम पापी, निर्गुश।
 दीन तुम्होर तुम्होर राम

II

हम पापी निर्गुश।, दीन तुम्होर २
 हरि दखाल सरग।इआ
 ते दुख भजन सरब सुख दाता।
 हम पाधर ते तराइआ

हरि धारहु

III

सतगुरु भेद राम रस पाइआ
 जननानक नाम उबोर राम

हरि धारहु

भावांध

इस ससार रुपी सागर से उभरने के लिए
 भी रामजी की कृपा की बहुत ही जरूरत है
 और हमें सदा बेनती करनी है कि हे प्रभो!
 आप सदा अपनी पूरी कृपा धार कर
 रावना अर्थात् हमारी पूरी निगरानी रावना
 हमारा मन जन्म जन्मान्तरे से, इसी माया के
 चक्कर में ही रहा है अभी भी यह बीच में
 कभी विकारों में आ जाता है।

हम पापी हैं, हमारे में वह गुण नहीं है
 जिनसे हम आप को पुनर्जन कर सकें।

जप तप सयम, शान दम तितिक्षा

उपरागता, उत्थाहार यह गुण नहीं है Sim 16

हम अति दीन हैं परन्तु हैं आपके।

(7)

ईश्वर अगं जीव आविनाशि (रामायण)

ममैवांमे जीव लोके " (गीता)

इस लिए फिर से पापना करते हैं, चाहे हम
कितने भी पापी दीन हीन हैं, परन्तु अब
आप की शरणा में आ गये हैं। आपको विरह
सुन कर ?

"शरणा आवे तिस कह लोव"

एह विरह स्वामी सदा (बाबाजी)

जो समीत आवे शरणाई

राखहु ताहि उरान नी न्यहि (रामायण)

आता शरणा मेरी वही

जाता सहज मे पारह

(गीता)

आपका नाम दुब दूर करने वाला है, सर्व
 प्रकार के सुखों को देने वाला है
 आय हम जैसे पत्थरों को भी तार लकड़ों
 को, इसी आशा से आय की शरणा आये हैं

आपने अति कृपा की, हमें सत्गुरु से
 मिला दिया, उन्होंने हमें नाम की महिमा
 बता बता कर नाम में रस दिया, इस प्रकार
 से नाम जप जप कर हमारा उद्धार हो गया
 प्रत्येक कार्य के कारण तो आय ही है

राजेश्वरी गुरुदास

श्रीराम

"कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
 तेरी ओर पूरी गोपाला।"

(9)

शब्द 3

हमरा बुर सन ते ऊच ॥ 2
 रैरा दिनस तिस गाऊ रे ॥ 2
 गुरु परसादि मेरे मन बसिय ॥
 जो चाहो सो पाऊ रे ॥ 2

हमरा बुर

II

विवन मे थाप उपायन हमरा
 तिस ते तुमहि उरावऊ रे
 नाम रंग रह मन तृपतान ॥
 बुरि न कतहु धावऊ रे

हमरा

III

जब देखऊ पुग अपना स्वासी
 अवरहि चित न पावऊ रे
 नानक दास पुग आय पहिराइआ

मुम नअ मेर जिवावउ रे

हमरा हुम्र --

(भावार्थ)

हमें सदा मन में यह भाव स्थिर कर के
रावना है, कि हमारे भगवन्, हमारे इष्टदेव
हमारे सतगुरु, संसार में सब से बड़े हैं अर्थात्
समर्थ हैं, अन्तर्यामी हैं, वह सब कुछ कर
सकते हैं उन की हया ब्या नहीं कर सकती

"मृतक को जिवानन्दार

भूवे को देवता आधार "

परन्तु हमने क्या करना है? हमने यही
किया मागनी है कि निरन्तर हम अपने पुत्र
का ही ध्यान रहे, हमारे मन में सदा

2000 उन्ही की ही याद हो, यह केवल राम जी की

(11)

कृपा से ही हो सकता है अगर एक बार
पूरा कृपा हो जाये तो जो हम चौदह बह
सभी पाप कर सकते हैं।

पूरी पत्र की माया भी बड़ी दुखद है

मम माया दुखदा (गीता)

दशा में बह हमें, माया में फसा भी देते हैं
और हम कई प्रकार के दोषों से ग्रस्त भी
हो जाते हैं। इस लिए हर समय अपने चारों
राज्य से उम्मा भी चाहिए उन्हें सदा
हाजिर नाजिर सम्मान, मन को उन्हीं के
ध्यान में लगाना है।

मन को सम्मानित रहना है ये पूर्व
मन, अगर तू इस मनुष्य वाली में ध्यान
करता रहेगा, तो तो तूरी चंचलता ही न

हो जायेगी, तिथरता सुकगता से ही
मक्ति पूरी हो सकती है।

अपने चित्त में केवल अपने स्वामी
पूरी परमेश्वर को ही बसा कर रखने की
हुया माचना करते रहना है। सारा बड़ी
दूसरी चीजों को अन्दर नहीं वैसे देना।

"मेरे तो केवल राम जी, राम जी
दूसरो न कोई "

ऐसा भाव अगर बना रहे तो दोष सो
भुक्त भय दोष अपने आप ही सब दूर हो
जाते हैं, फिर तो आनन्द ही आनन्द है।

रामजी राम
कर हुया पुत्र दीनदयाल। श्रीराम
तेरी ओट पूरी गोपाल। "

Jan 2000						
S	M	T	W	T	F	S
1	2	3	4	5	6	7
8	9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28

(13)

श्रीराम

गुरु पुरिमा 2000

शब्द 4

मोरे आये हैं, आये हैं, हरि आज मोरे आये हैं
पावन पवित्र मित्र आज मोरे आये हैं २

आये हैं आये हैं २

II

सुपन चरित्र चित्र बानक बने विचित्र
पावन पवित्र मित्र आज मोरे आये हैं
आये हैं २

III

परमदयाल लाल लोचन विनायक मुन
वचन रसाल मधु मधुर व्यापक
आये हैं आये हैं

IV

सोमत सिंहासन विलासन है अने माल
प्रेम रस विलस है लहज समाय है

आये है, आये है

चात्रक शब्द सुन अखियाँ उधर गई
भई जल मीन गति। निरह जागोये है

आये है ---

(भावार्थ)

जब हम ध्यान में बैठते हैं, तो कई
प्रकार के अनुभव होते हैं। कई बार तो
ऐसा लगता है कि हमारे अन्दर बहुत
प्रकाश हो गया है उसमें सत्गुरु ने अपना
रूप दिखाया है। बहुत सुन्दर नारायण रूप
में प्रगु प्रकट हो गया है। वह बड़े ही पवित्र
और उज्ज्वल है।

ऐसे लगता है कि हम वड़ा सुन्दर
सपना जैसा देख रहे हैं

60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100
----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----

(15)

बड़ा विचित्र सा दृश्य नजारा लगता है
 वयो के उस में आलौकिकता होती है
 वह बड़े ही दयालु लगते हैं और
 बड़े सुन्दर नेत्र हैं उन के, उन की वाणी
 भी अति मीठी है मानो ऐसे वह मधु
 रस जैसी मिठास देते हैं यह सब
 अकरणीय है।

वह अपने पितामह पर शोभाय-
 मान हो रहे हैं। उन का मातृक मानो
 तिलक से शोभायमान हो रहा है। ऐसा
 ही ऐसा उन के नयनों में, उन की वाणी में
 सहज भाव से मानो वह ऐसा मूर्ति है।

ऐसे उन की वाणी सुन कर मेरे में
 भी उन का ऐसा प्रहार हो गया।

बस फिर तो मेरा मन मही करने लगा
कि यह शोभा। मेरे से एक पल भी दूर न
हो। मेरी अवस्था ऐसी हो गई।

जैसे मछली जल के बिना नहीं रह
सकती, मेरा मन मही करने लगा कि
यह कहीं मेरे से अलग न हो जायें
उन के प्रति मेरा विरह जागृत हो गया।
यह विरह अवस्था तो किसी भाव्य
शाली को प्राप्त होती है। इस के लिए मैं
होया मांगनी चाहिए।

राजजीराप्रसाद
कर कृपा प्रभु दीन दयाल। श्री राम
तेरी ओर पूरी गोपाल।

Feb 12 11 P.M

जीराम

शब्द 5 (17)

दरसन देखत देख नसै
 कबहुं न होवहु दृष्टि अगोचर
 जीअ के संग संग नसै

II

दरसन पेरवत

पीतम प्राण-आधार स्वामी
 पूर रहै प्रभु अन्तर घामि
 ब्या गुण तेरे सार सभाली
 सास सास प्रभु तुमहि चितारी

III

दरसन देखत

कृपानिध प्रभु दीनदयाल
 जीअ जत कीकरहु प्रतिपाल
 आढ यह तेरा नाम अन जोय
 नानक पीति लाई प्रभु ओय

"श्रीराम"

(18)

(भावार्थ)

अपने द्योरे सतगुरु जी के, अपने ३३ देव
के दर्शन करने मात्र से, सब रोग, दुख
भाग जाते हैं। इस लिए हमें सदा यही
प्रार्थना करनी चाहिए कि भगवान सदा हमारे
नयनों में अपना रूप दिवाते रहें।

"बसहो मेरे नयनन में गोपाल"

और अन्तर में भी आप ही दिवाते रहें।

"आबे बन्द करु या खोलु
देखु दर्शन तेरा राम"

ऐसी कृपा मांगो, कि सब से प्रिय हमें केवल
आप ही लगे, क्योंकि रामजी तो मेरे प्राणों
के आधार हैं। और सब कुछ जानते हैं।

2000 हम अपने पुरु के गुरा बरानि नही कर सकते।

चथोके वहां तो गुना ही गुना है, अवंगुना
 एक भी नहीं, जैसा कि श्री कृष्ण स्वयं
 गीता में कहते हैं कि जो प्राणी सर्व गुण
 सम्पन्न है वह मेरा ही रूप है, परन्तु इस
 मायावी ससार में, करोड़ों में कोई एक है
 जो ऐसा हो। नहीं तो ऐसा कहा जाता है

To err is human
 To forgive Divine

“कोरन में नानक कहा

नारायण जहँ चीत”

बस हा हर श्वास में अपने पुत्र का स्मरण
 कर के अपने प्रीति को प्राप्त कर लेंगे
 मेरे भगवान तो सदा नृपा ही करते हैं
 इसलिए हा केवल उन्ही की नृपा मांगें

फिर वह हमें अपना बना लेते हैं तो
 सारी जिम्मेदारी उन की हो जाती है वह
 सब की प्रतिपालना स्वयं करते हैं अपने
 दास पर कोई भी चिन्ता नहीं आने देते
 वह अपना प्रेम स्वयं बढ़ाते रहते हैं। अपने
 दास को अपनी ओर पूर्ण रूपेण प्रेरित
 कर लेते हैं। ऐसे कई जनों तक अपनी
 प्रीति बढ़ाते रहते हैं।

इस लिए हमें सदा उन्हीं की स्तुति याचना
 करनी है, उन्हीं को चाहना है।

राजजीराजराज श्रीराज
 कर नृणां पुत्र दीनदयाला
 तैरी ओर पूर्ण गोपाला ॥

2

Feb
Wed

[ADITYA]

		Feb 2000						
S	M	T	W	T	F	S		
6	7	8	9	10	11	12		
13	14	15	16	17	18	19		
20	21	22	23	24	25	26		
27	28	29						

[Phone]

श्रीराम

शब्द 6

(21)

राम राम राम, जय रमल राम सहई

II

सतन के चररा लागे, काम क्रोध लोभ त्यागे॥
गुरु गोपाल भये ब्रह्माल
लब्धि अघनी पाई

III

राम राम राम ---

बिनसे भुम मोह अध
टूटे माया के बन्ध
पूरा सर्वज ठाकर
नहीं कोई बैराई

राम राम राम ---

IV

स्वामी सुपमन भये
जन्म जन्म के दोरन गये
सतन के चररा लाग

नानक गुरा गार्ह

राम राम राम ---

भावार्थ

साधक के जीवन लक्ष्य केवल गुरुमन्त्र का जप करना, और हर समय, हर स्थान पर उसे ही अनुभव करना है।

यह केवल सत्ते के साथ ही उन्नति की सेवा में प्राप्त हो सकता है। कि हम जीवन का सच्चा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

ऐसा करते 2 हमारे सारे मोह और भ्रम दूर हो जाते हैं और, मैं मेरी के बन्धन दूर जाते हैं सब जगह राम ही राम दिखाई देने लगता है और कोई बैरी नहीं लगता।

Feb 2000						
S	M	T	W	T	F	S
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29				

(23)

और उन की कृपा से सारे दोष दूर
हो जाते हैं, वास फिर हमारा दिल बँधी
करता है कि हम हर समय उसी के ही
गुनागोते रहें। मही तो जीवन की
साधकता है।

राजजी रात रात

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओट पूरी गोपाल।

ક્રી રામ

(24)

શ્લોક 7

અમૃત પીઓ, સદા ચિર જીઓ
 હિમરત અનત અનન્ત।
 રંગ તમાશા પૂર્ણ આસા
 કમી ન વ્યોધે ચિન્તા રામ

II

પુતા માતા કી આસીસ
 નિમલ ન વિસર અ
 તુમ કો દર દર
 સદા મજો, મજો જગદીશ

III

જિલ હિમરત યવ કિલવિલવના
 પિતરી હોય ઉદ્ધરો રામ
 સો દર દર તુમ સદા હી જાપો

7

Feb
Mon

Feb 2000						
S	M	T	W	T	F	S
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29				

(25)

जाँ का अन्त न पाँरो राम

IV

सतगुरु तुम को होय दयाला
संत संग तेरी प्रीति राम
कापड़ पति परमेश्वर राखे
भोजन करतन नित राम

V

भवर तुम्हारा एह मन होवहि
हरि चरणा होय कमलाराम
नानक दास उन संग लपटाइओ
जिअ बूदे चाजिक मअला राम

अमृत पीओ-

रामजीराम राम

ब्रीराम

14 Feb 8:10 AM

श्रीराम (भावार्थ)

(26)

सतगुरु भगवान सदा अपने शिष्य को
यही आशीर्वाद देते हैं कि वह सदा नाम
रूपी अमृत पीये, जिससे उस की आयु पूरी
हो। सदा लिमरगा में अपना जीवन व्यतीत
करे, उस की सारी आशाएं पूरी हो जायें
कभी भी किसी प्रकार की चिन्ता न उभाये
जब तक कामना होगी, तब चिन्ता भी उभायी
परन्तु कोई इच्छा न रहे, यह केवल उगु रुपा
ही कर सकती है, यह बताते रहते हैं।

सदा सतगुरु, रामजी, जब दया करते
हैं तो वह सत्कार से छीटा हटा कर अपनी ओर
खेच लेते हैं, अपने जीव को, कीर्तिन का, नाम

2000 को भोजन देते हैं, साथ ही उस की लज भी रक्षते हैं

9

Feb
Wed

Feb 2000						
S	M	T	W	T	F	S
6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29				

(27)

वह सदा यही चाहते हैं कि उनकी वन्दना
नाम रूपी कमल घर मोरे की तरह
मड़ोते रहे, चाँदिक जैसी धोसा तों
के लिए, सतसत करि सत के लिए।
पुदान करते हैं। जिससे उनकी शिवाय
की जीवन समझ हो जाय।

राजीव गांधी

श्रीराम
कर कृपा पुत्र दीन दयाला
तेरी ओर दूरी गोवा ला

14 Feb. 10.20 P.M.

श्रीराग

शब्द 8

जय मन मेरे गोविन्द की बाराणी
साधू जन ब्राम रसन नाबाराणी

II

जिस स्मरण दुख सब जाय
नाम रतन वैसे मन आय

III

शकस बिन नाही दुजा कोष
जाकी दृष्टि सदा सुख होय

IV

साजन मीत सावा कर एक
हरि हरि आवर मन में लेव

V

रव रहिया सर्वत स्वामी
गुरा गावै नानक अन्तर्यामी

श्रीराम

(29)

अपने मन को हम आय ही समझा सकते
हैं। जैसा कि श्री कृष्ण जी कहते हैं

"नर आय ही है बाजु अपना

आय ही है मित्र भी"

इसलिए हम अपने मन को सीधे मार्ग पर लाना
हैं। हमारे भोले मन ! तू निरन्तर गोविन्द का
नाम जप, उन्हीं की कृपा माग, जैसा कि सत्त
जन सदैव वाचान करते रहते हैं।

द्वारे धारण करने से सारा के सारे
दुखों रोगों का नाश हो जाता है, और अन्तर
में ज्ञान का पुकावा हो जाता है।

सारा में एक परमात्मा के बिना दूसरा
सब असत्य है। उन्हीं की कृपा से हम सदा सुखी
रह सकते हैं। शक अपने राम जी के ही अपना
पति, साका, सब कुछ जानो।



और सदा मन से उन्ही का सिमरन करते रहें।
जब हमारा सिमरन निरन्तर चलता है तो
प्रह अवस्था आ जाती है कि उसी की मल्ल-
सर्वज्य हो अगुमव होने लग जाती है।

जस चेतन जग जीव जन
सगल राम प्रमं जानि
वदं सव के यद कमल
सदा जोरि जुग पारि (रामायण)

राम जी राम राम

श्री राम

करे लुपा पुत्र दीन दयाला
तेरी ओर पूर्ण गोपाल।

ब्रह्म

८

शब्द १

सुरिा सुरिा नाम तुम्हारा। जीनम

प्रभु पेखरा का चाऊ २

दशा करो बिरम अयेने के,

इहे मनोरथ सुआओ २

सुरा ---

II

तन धन तेरा तू प्रभु मेरा

हमे वस बिद्ध नाही २

जिऊ जिऊ राखंहि, तिऊ २ रहारा

तेरा दिआ खाई २

सुरा ---

ॐ के किलविब को

रि जन धूरि २

भाय भगति भरम भय नाथै

जन नानक सदा हजूर २

सुरा ---

भावार्थ

जब हम अपने पुत्र के नाम की महिमा
बार बार सुनते हैं तो हमारे मन में उन के
दर्शन की लालसा भी उत्पन्न होने लगती है
जैसा कि गीता में श्री कृष्ण जी कहते हैं

कि जब मेरा भगत मेरी ही चर्चा करता है
मेरा कीर्तन करता है तो फिर उसे मैं बुद्धि

बुद्धियोग प्रदान कर देता हूँ, फिर वह मेरा दर्शन चाहता है, वही भाव महा पुनः किया है।

फिर जीव अपने आप को भगवान को छोटा सा किरम मानता है और कृपा मागता है। तन मन धन सब अर्पण कर देता है। अपने आप को पूर्ण समर्पित कर देता है।

इस प्रकार से जन्म के पाप उत्पन्न हो जाते हैं उसे सती की चरम रज मिलने लगती है। इससे उसे के मन में भाव और भक्ति उत्पन्न हो जाती है। इस प्रकार उसके गुण भय से समाप्त हो जाते हैं। अपने रामजी को साक्षात् देखता है। उत्पन्न होता है।

(A) श्रीराम
१ शब्द (अर्पने सत्तगुरु के प्रति)
सच्चि निष्टा लक्ष्मी प्रेम

भी गुरु देवरा जाई (घारिआ)

भी गुरु देवरा जाई 2

सोहरा देवरा जाई

मन मोहरा देवरा जाई

भी गुरु देवरा --

II

मखंड मांगी मीह बरसे, भी " " जाई
समुद्र सागर होवे अति रवार,
गुरु सिख लखें गुरु पहि जाई

III

जिअ प्राणी, जल बिन है मरता।
तिअ सिख, गुरु बिन मर जाई

18

Feb
Fri

6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29				

(35)

जिऊ धरती सोम करे जल बरसे
 तिऊ सिख गुरु मिल बिगसई
 भी गुरु देवरा। --

IV

सेवक का होय सेवक वरता।
 कर कर विनय बोलाई
 नानक की बेनती हरि पदि
 गुरु मिल गुरु सिख पादि।

राम जी राम राम श्रीराम
 कर कृपा प्रभु दीन दयाल
 तेरी ओर पूरा जो पाला।

Feb 15 - 7.10 P.M.

" श्रीराम "

LED
Sail

19
36

भावार्थ

जिन को अपने सतगुरु से सच्चा प्रेम हो
जाता है, वह फिर उन के सतसाग बिना, उन के
दर्शन के बिना नहीं रह सकते।

चौहे कितनी भी विपरीत अवस्था
हो, शिष्य का सच्चा प्रेम, सतगुरु के द्वार पर
पहुंचा ही देता, कितनी बरसात हो रही हो
आंधी चल रही हो, शिष्य पहुंच ही जाता है
क्योंकि उधर से सतगुरु आप उसे अपनी ओर
खींच रहे होते हैं।

जैसे घासा पानी के बिना तड़पता है
वैसी तड़प राम जी अपने शिष्य में पैदा
कर देते हैं, जैसे पृथ्वी पर वर्षा के बाद
हरियाली आ जाती है, ऐसे ही शिष्य जब

6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29				

(37)

सतगुरु के पास पहुँचता है तो कफल की तरह खिल जाता है। उसे अन्दर बाहर दोनों का आनन्द प्राप्त होता है।

सेवक अपने सतगुरु के ओंगे प्रार्थना करता है कि कभी भी उस का निदोश न हो वह परमात्मा के ओंगे भी मही प्रार्थना करता है कि मुझे सतगुरु से जरूर मिलाने।

उस का भावार्थ यह है कि सतगुरु की कितनी भी कठिनाइयाँ आ जायें, उसे इस प्रकार की लग्न सतगुरु देते हैं कि वह, सतसाँगे अपने राह जी के पास पहुँच ही जाता है।

राजजीरादरा
कर कृपा पुण् दीन दयाला श्रीराद
तेरी ओट पूरा गोवाल।

14th Feb 10 P.M.

2000

शब्द 10

वावा विव देखिआ ससार २
रीवआ करहु गुहाई मेरो, मै नाम तेरा आधार २

II

जां तूँ साहब तां भऊँ कहै।
छऊँ तुध विन किस सालाही राम
रुक् तूँ ताँ सब बिद्व है
मैं तुध विन दूजा नाहीं राम

III

जाराहि वृथा सभा मन की
होर किसपै आव सुराईराम
विन नाँवै सब जग बऊरान।
नाम मिले सुख पाइराम

IV

क्या कहिये किस आव सुराईराम

25

Feb
Wed

6	7	8	9	10	11	12
13	14	15	16	17	18	19
20	21	22	23	24	25	26
27	28	29				

(39)

जो कहशां जो प्रभु जी पास राम
सब बिद कीता तेरा करते
सदा सदा तेरी आस है राम

I

जे देह बडिआई तो तेरी बडिआई
इत उत तुमहि ध्याऊ राम
नानक के प्रभु सदा सुबदाते
मैं तारा तेरा इक नाम राम

रामजीरामराम

कर चुया प्रभु दीनदयाला श्रीराम
तेरी ओट दूरि गोपाला

14 Feb 10.15 PM

भविष्य

ससार में रह कर अगर सतगुरु नहीं मिले
 मा ज्ञान जाग्रत नहीं होता, तो गह ससार डोबदीस
 हो जाता है। हमारी आसक्ति ही हमें तंग करती है
 इसलिए हमें अपने इष्ट देव से प्रार्थना करना
 है बुधा मागनी है कि वह अपनी कृपा से हमें
 इन विकारों से बचा कर लें।

फिर विश्वास हो जाता है कि अगर हमारे
 धर पर अपने सतगुरु का हाथ है तो हमें कोई
 भी भय नहीं। क्योंकि हम सार ससार को तुच्छ
 समझ कर अपने प्रभु की ही पराधना करने
 लगते हैं। हम पूरी विश्वास हो जाता है कि
 अगर रात्रि की कृपा है तो सब की कृपा है
 फिर हम दूसरों की जरूरत नहीं रहती क्योंकि

“जां पर हया राग नही होई
तो पर हया करे सब कोई”

फिर हम अपना सुख दुःख केवल अपने
उग्र को ही सुनते हैं क्योंकि उन्ही का उग्र
निष्काम है। शेष सब सारी उग्र स्वाधी रहे
फिर हमें सागम आ जाती है कि नाम के बिना
सारा संसार पागलों की तरह चल रहा है
जो नाम जपते हैं वही पूजा रूपी सुखी रहते हैं
सब तरह से अपने सत्गुरु को
समर्पित हो जाते हैं। उन्ही की आज्ञा करते हैं
आगर उन्हें कोई वड्डि देता है तो वह अपना
उग्र की वड्डि समझते हैं। उन्हे केवल नाम
को जोर होता है। ऐसे वह सदा उग्र रहते हैं

राजीवराज

श्रीराम

14th Feb
1987

2000

शब्द ॥

(42)

विपरगई सब ताता पराई
जन ते साध, सांगत मोहि पाई

II

न को वैरी नाही बेगाना
सगल संग, हम को बन आई

III

जो पुन कीन्हो, सो भल मान्यो
एह सुमति, साधू ते पाई

IV

सभ में रव रहिआ पुन ऐक
पेख पेख नानक बिगसहि

रामजीरागराम

श्रीराम

Sun 27

कर हुपा पुन दीनदयाल।

तेरी ओट पूरी गोपाल।

श्रीराम

जैसा कि श्री कृष्णजी कहते हैं

“निर्वारा मोहा, जित स्यां दोषा”

जिन्होंने ने सधें दोष जीत लिया है, वह सदा ही निर्वारा है। यह भी यही समझाया गया है, कि जिन्हें पूरी सन्तों का संग प्राप्त हो जाता है उनमें समता योग आ जाता है, उन के लिए सब अपने हो जाते हैं, उन्हें कोई भी बैरी नहीं लगता सबमें वह अपने पुत्र की माँकी देखते हैं।

पूरी सत पहले गुरु मन्त्र देते हैं, उसे अपने की विधि बताते हैं

कर कृपा पुत्र दीनदयाल।

तेरी ओर पूरी गोपाल।

कि पूरी गोपाला, पूर्ण पुत्र की कृपा से क्या नहीं हो सकता ?

गुरुमन्त्र जाप करने से, कृपा प्राप्ति करने से
बुद्धि बढ़ जाती है। जो भी बातें बरसा हमारी
जिन्दगी में आती हैं, हमें उसमें भलाई ही उतारते
होने लगती हैं। सब में हमें रास ही रास दिखता है
इससे हमारा जीवन आनन्दमय हो जाता है।

अगर हम किसी को देव कर प्रत्यक्ष हो
जाते हैं तो यह प्रसन्नता हमें मुक्त में ही मिल
गई, अगर हमारे मन में दूसरे के प्रति कटुता
आ जाती है तो बिना मतलब के हम दुखी रहते हैं
इसलिए कर कृपा की जड़ जाप करते हुए यह
भाव रखना है कि हमारे मन में किसी के प्रति भी
डोष न आये।

श्रीगुरुजीराम... कर कृपा प्रभु दीनदयाल।

श्रीराम

1

Mar
Wed

S	M	T	W	T	F	S
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

(45)

शब्द 12

हउं वारि वारि अयेने गुरु कै जाया २

मैं पुनु मिलरा प्रेम मन आया २

गुरु पूरा मिलवे, मेरा पीतम

हउं वारि २ अयेने गुरु कै जाया

II

सेज एक, एको पुनु ठाकुर

गुरु मुख हरि, रावे सुखसागर

गुरु पूरा - - -

III

मैं अवगुणा भरपूर शरीरे

हउं बिक कर मिला अयेने पीतम पूरे

गुरु पूरा - - -

IV

जिन गुरावन्त मेरा पीतम पाइआ

से मैं गुरा नाही, हउं बिक कर मिला मेरी मर्दिआ

2000

(46)

V

हउ करि करि थांका उपाव बहतेरे
नानक गरीब राबहु। हरि मेरे

भावाँध

इस ससार में सबसे बड़े नाशक उस के हैं, जिस के मन में उग्र मिलने की चाह उत्पन्न हो जाये, फिर उग्र कृपा करते हैं। उसे पूरी गुरु से भेट करवा देते हैं।

पूरी गुरु जीव को समझाते हैं कि छोटे मन बुद्धि रूपी सेज के ऊपर केवल अपने उग्र को स्थापित करना है। शेष छोटी-बोली का छोटी-बोली सम्बन्धों का ज्यादा ध्यान नहीं करना। उन सब को उग्र को समर्पण कर देना है।

अपने राजर्षी के समुदाय हमेशा अपने अनुरोधों के लिए दास्य माचना करते रहना है।

जै। जो अच्छी आत्माएं हैं, जो सदा सेवा सिमरना
सतसां। धारणा। ध्यान समाधि। अम दम समाधान
उपशम तितिक्षा। में रमना करती हैं। उन जैसा
बनने के लिए मन में चाछ रानती हैं।

और सदा अपने उग्र से अधिका करती हैं
कि मैंने कितने ही कर्मकारण कर के दौरे हैं
कुछ भी प्राप्ति नहीं है। नम अन आय मेरे है।
जाओ। मैं सदा आय को हर समय हाजिर नाजिर
समस्त और हर कर्म आय के लिए ही कर। ऐसी
बुद्धि बना दो। फिर समझो कि हम उग्र से मिल
गये।

श्रीराध
राम श्रीराध
कर लुपा उग्र दीनदयाला श्रीराध
तेरी ओट दूरों गोपाला

Feb/6 Wed. 12.15 P.M.
2000

2000 12 A

अअवी घड़ी न देखरा। दर्ई,

अपना विरद सभाले

हाथ दे राखे अपेने कअ

सास सास प्रतिपाले

II

प्रभु छिअ लगा रहयो मेरा चीत

आदि अतं प्रभु सदा सहई

धन हमारा मीत

III

मम विलास भये साहिन के

अचरज देख वडाई

हरि क्षिप्र क्षिप्र आनन्द कर नानक

प्रभु पूरन पैज राखई

Sun 5

राजजीराधरा

श्रीराम

कर बुधा प्रभु दीनदयाल।

तेरी ओट पूरा गोपाल।

6

Mar
Mon

S	M	T	W	T	F	S
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

(49)

ગ્રીરામ

શબ્દ 13

સમૈ ગલાં વિસરન, શ્કો વિસર ન જાયો 3

I

ધન્ધા સબ જલાય કે, ગુરુ નામ દિઆ પવ સુઆઓ
આપા સમૈ લોદે કે, શ્કો આપ કમાઓ

II

જિનિ સતગુરુ સેવિઆ, તિન આંગો મિલિઆ થાઝ
મન મેરે કર્તે નૂ સાલાહી ૨

III

સમૈ દડ સમાણાયા ગુરુ કી પૈરી પાદી

IV

દુલ મુલ ન વ્યાપંદિ જે સુલ દાતા મને હોમ
કિતદિ કમ ન ફીજિર, જાં હદમ સવ્વા સોધ

V

जिस तू राखे हथ दे, तिस मार न सगै कोथ
सुब दाता गुरु सेविए, सब अकगुणा बेट है घोथ

VI

सेवा मीं सेवको लाया अपनी सेव
साधू लाग मुसकते, तुहे पावें देव

VII

सब किंद वसगत साहेबे। आपे करारा करेव
सतगुरु के बलिहारो॥, मनसा सगै पुरेव

VIII

इको दिसे सजरो॥ इको भाई मीत
एकस दी सामग्री, एकस दी है रीत
इकस दिऊ मन मानिआ, तो निहचल है। आ बोलि
सच खासा। सच पैन्हारा॥, टेन नानक सच कहति

जितने भी हम ^{भावार्थ} मायावी जीव हैं, चुप नहीं रह सकते। परन्तु सतगुरु देव हमें चेतावनी देते हैं कि हमें ज्यादा बातें नहीं करनी। एक अपने प्रभु को याद रखना है शेष सब भूल जाना है। भूत भविष्य को भूल कर वर्तमान में रहना है।

ससार के चक्के भी बन्नी बनना नहीं होने वाले, सब जब सतगुरु नाम दे देता है। तो मध्यम और सार्वारिक कार्य अपने आप ही होने लगते हैं वह बार-बार हमें जागते भी रहते हैं हे जीव! तू सारी आशा छोड़ कर एक आशा भगवान की रखो जो निष्काम भाव से गुरु की सेवा करते हैं। आने दो नो लोक सबसे जाते हैं, बमोहि न ह ध समय, अपने मन को समझाते रहते हैं।
 ए मं तू केवल नाम भिरसा कर ।

अपनी सारी चतुराईयां बोल दे और उग्र की शरणा में
 हो जा। अगर तुमने उग्र को अपना लिया तो हमारे
 की सारी तृष्णाएं सन्त हो जाएंगी। फिर तो सदा के
 लिए सुखी हो जाओगा। अगर तेरे मन में सतनाम का
 निवास है तो सौंर कार्य तेरे स्वयं ही पूर्ण हो जाएंगे।
भाव नही तो डाक नही।

जिस पर आपकी लुपा है उस पर सब की
 लुपा हो जाएगी। ऐसा बूट निश्वास। रात्रि, उन उग्र की
 लुपा से धीरे अकुरा। भी दूर हो जाते हैं। सब
 कुछ तो मेरे उग्र के आधीन है।

इन्हीं ही सब कुछ है। वह सब करने कराने
 वाले हैं। अगर हमारा उग्र से मत मान जमा तो
 तभी हमारा मत फिर हो सकता है। बस सतनाम
 2000 ही आधार हो गया तो बेड़ा पार हो गया।

श्रीराम

शब्द 14

अऊकी घड़ी न देखरा दर्ई

अयन। विरद सभाले

हाथ देइ राखै अपरो। कऊ

साम सास पतियाले

II

पनु सिंऊ लाग रह्यो मेरा चीत।

आदि अतं पनु सदा सहई

धन हमारा मीत

III

मन विलास भये साहब के

अचरज देख वडई

हरि सिमर सिमर आनन्द करनानक

पूरी पैज रावई

शब्द 14

हमें सदा अपने राम जी से यही पापना करनी
 है। है प्रभो! हम हमेशा सुब में आपका ध्यान कर
 बयोगि दुख में भजन करना तो हम दुःख का
 भजन कर रहे हैं भगवान का नहीं।

इसलिए गुरुसाहब फरमाते हैं कि इन जीवों
 पर कोई विपत्ति न आने पाये, आप अपना रूप
 भरा धाम सदा इन पर राबना, मंदलव साभावी जीव
 हैं। इन की साभा से हर ब्वास में रक्षा करना, प्रभो जी
 आप की शरणा में रहते हैं उन को तो अपने बच्चे
 जैसे रक्षा करते हैं।

ऐसे हमारा बिबबाल पुत्र पुरखों में बढ जाता है
 फिर हमें ज्ञान हो जाता है जिसने आदि में रक्षा की
 (जान में पहले) मृत्यु में भी बढ आप भगवान ने

2000 रूप में आभेग, ऐसे हैं मेरे राम जी।

13

Mar
Mon

5 6 7 8 9 10 11 12 13 14 15 16 17 18 19 20 21 22 23 24 25 26 27 28 29 30 31

ऐसा नाव हमार। देव कर राखी भी पुसल हो जाते
 है कि। मैने अपने जीव को माया में डाला है परन्तु
 मही कर भी मुझे ही चाह रहा है। फिर और क्या
 करते हैं धीरे २ उस का अज्ञान सारा सिग कर अपना
 रूप बना लेते हैं।

इस लिए, हमें विमर्श न करने की नहीं
 देना चाहिए अपने पूरी पुण्य की कृपा ही मागनी
 चाहिए।

राखी राख

कर कृपा पुण्य दीन दयाला

तेरी ओर पूरी गोपा

श्रीराम

Feb 17. Thru. 31

21000
श्रीराम
राम

शब्द 15

अब हम चली ठाकुर पे हर 2
जब हम शरणा तुम्हारी आई
राख पुगु भावें मार

II
लौकन की चतुराई उपमा

ते वैसेंतर जार

कौई भला कहे भावें बुरा कहे

हम तन दीनों है ढार

III

जो आवत शरणा ठाकुर पुगु तुम्हारी

तिस राखहु किरपा धार

जन नानक शरणा तुम्हारी हरि जीअ

राखहु लाज मुरार

२ राग कर कृपा पुगु दीनदयाला श्रीराम

तेरी ओट पूसी जो बाला

ग्याल्पो २/६६ १५

इस ससार में प्रकृति का ऐसा नियम है। जीव
ससार में आता है बड़ा होता है फिर बूढ़ा बूढ़ा में
आता है, बुढ़ापे आ कर इन्सान दार जाता है, जब
शरीर भी कमजोर हो जाता है, बड़ी ससार दुःखदायी
बन जाता है

इस लिए जो गुरुमुख होते हैं, वह पहले ही
अपने राग जी की शरणा ले लेते हैं और पूर्ण समर्पण
कर देते हैं। फिर उन्हें भगवान् बुद्धि योग प्रदान
करते हैं, फिर चाहे उन की निन्दा कर या हर्षित
कर उन्हें कुछ भी प्रभाव नहीं पड़ता। क्योंकि
दृढ़ विश्वास होता है कि जब हम पूर्ण प्रभु की
शरणा में हैं तो वह अवश्य ही अपना कृपा भरा
हाथ अवश्य रखेगा। (इस लिए मैं भी आपकी शरणा हूँ २०००)

२१ बदे १६

लजा राखी राम, मेरी लजा राखी राम
 जन के पूरन होए काम २
 कलिकाल महा विविआ में
 लजा राखी राम २

II

धिमर धिमर स्वामी पशु अयन।
 निकट न आवे जाम २
 मुमति बैकुण्ठ साध की भाँति
 जन पाइओ हरि का धाम २

III

चरणा कमल हरजन की धाती
 कोटि सुख विज्जाम २
 गोविन्द दामोदर धिमर अ दिन रैरा।
 नानक खुद करवारा २

17

Mar
Fri

Notes

Mar 2020						
S	M	T	W	T	F	S
			1	2	3	4
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

(59)

शब्द 17

नारायरा नारायरा नारायरा
पारा नारायरा सुधि ले 2

II

दिन दिन अरुध छो निभावापुर
बुधा जात है देह

नारायरा। ---

III

(जबानी) तरनायो विरिअन सिउ रवे।इओ
बालपन अज्ञान।

(गुदावा) विरध गइओ अजह नही सममै
कउन कुमति उरमान।

IV

नारायरा। ---

(मगध) मानस जन्म दीओ जहं ठाकुर
सो ते किउ विलराइओ

मुक्त होत नर जा के लिये
निमाव न तांको गाइओ

नारायरा। ---

(60)

Mar
Sat

18

माइआ को मद कहा करता है
सो न काहु जाई
नानक कहत चेत चिंतामरि॥
होई है अन्त सदाई

नारायण॥ --

राजजी राग राग
कर कृपा उभु दीनदयाल।
तेरी ओर पूरी गो वाल।
श्रीराम

Sun/19

शब्द 18

उभु मेरा अन्तर्यामी जान
कर किरपा पुरन परमेश्वर
निहचल सच शब्द निसान

II

उभु मेरो

हरि बिन आन न कोई समरथ
तेरी आप तेरा मन तारा।
सर्व घटा के दाते स्वामी
देहि सो पहनरा। स्वारा।

उभु मेरो...

III

सुरत मत चतुराई शोभा

रूप रंग धन मारा

सर्व सुख आनन्द, नानक जै

जय राम नाम कल्याण

रामजी राम राम

श्रीराम

श्रीराम

भारतीय शब्द 18

सबसे पहले तो ध्यान रखना है कि हम सारा
 में, केवल तुम मेरे अपने हैं। फिर कृपा मागनी है
 तो केवल उन्हीं की मागनी है, क्योंकि सारा तो
 कृपा करता नहीं, सब सुख चाहते हैं, मैंने कृपा
 केवल शब्द की मागनी है कि हमारे अन्दर
 शब्द चले। मन में पूर्ण विश्वास रहे कि मेरे
 तुम समर्थ है उन जैसा सारा में और केहि
 भी नहीं है। इस लिए तुम तो उनकी ही आशा है
 उन्हीं का बल है। वह तो सब के अन्तर की
 जानने वाले हैं, तुम खाना पहनना कई जगहों
 से देते ही आ रहे हैं, मेरी मति, मेरी सुरत
 सब वोना सब उन्हीं की ही हुई है इस लिए
 2000 मेरा सदा यही कर्तव्य है कि मैं हर समय

उन्ही का नाम जायें, उन्ही का ध्यान
करें, उन्ही के मत में दर्शन कर
उन्ही का रूप सारा जाना देव। वस
इसी में हमारा बलपारा है

अपने मत को इस प्रकार
समझते रहना है

भक्ति का फल अन्त में है
सत्कार का फल अन्त में प्रीति है अन्त
में विषय है /

श्रीराम
कर कृपा पुत्र दीनदयाला
तेरी ओट पूरी सोपाला

श्रीराम शब्द १९

काँहे मन तें डोलता, हरि मनसा पूरी हर २
हरि मनसा पूरी हर, हरि मनसा पूरी हर

II

हरि नामा आराध मन, सब किल विव जोयं विचार
सतगुरु पुराव दयाय तूं, सब दुख विहार सा हर

III

जिन के। पूर्ण लिखि आ, तिन रां लगा निरंकर
ओन्ही दड्या माया सुआवड। धन सचं या नाम

IV

अपार

अठे पहर इकते लिखे, मनन हुंम अपार
जनानक मेगं दान इक, देह दरस मन प्यार

राम जी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला

तेरी ओर पूरा गोवाला

24

Mar
Fri

S	M	T	W	T	F	S
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

(65)

श्री राम

मन के दारे दार है

मन के जीते जाते

इसलिए अपने मन को सदा समझा २ कर
सबल बनाना है, उसे केवल हरि नाम की
महिमा बतानी है, ध्यान करने की विधि
इसे बतानी है। Improval करना है बाहर
ज्यादा नहीं देवना, देवा अनदेवा करो, सुना
अनुसुना करो, माया को स्वाद हमेशा जीव
को डुबानी करता है, जीव ससार से राम
चाहता है, ससार इसे दे नहीं सकता फिर यह
डुबनी होता है।

जो ससारी राम को छोटा समझ कर
हर समय भगवत पाछे के लिए रुपा
मांगते हैं उन्हें यह महाराम पाछे होता है 200

फिर उन्हें सप्ताह के मध्य छोटे छोटे रस, जैसे
परिवार के सुख का रस, मध्यजीवा के रस
या मान प्रतिष्ठा के रस, मध्य रस इत्यादि
मदता नहीं रखते, वह इन सब से ऊपर
उठ जाता है तो सदा के लिए सुखी हो
जाता है।

इसलिए हमें अपने धीरे धीरे प्रभु से
रामजी से दरशन की ध्याना ही मागनी
चाहिए। ध्याना होगी तो प्रभुत्व होगा, प्रभुत्व
होगा तो सफलता अवश्य मिलेगी
यह भी केवल प्रभु रूप से ही मिल
सकती है।

श्रीराम ^{Sun 26}

रामजी राम
कर रूप प्रभु दीन दयाला
तेरी ओर पूरी गोपाला

शब्द 20

सत रहत सुनहु मेरे भाई
उहा की महिमा कथन न जाई

II

आठ पहर निकट कर जोने
पुग का काँआ मीठा माने

III

एक नाम सतन आधार
होय रहे सब की पादार

IV

वरतरा जाँ के केवल नाम
अनद रूप कीरतन विनाम

V

मिठा शज जाँ के एक समाने
पुग अपनै विन अवर न जाँरो

VI

कोर कोर अद्य कारन हर।

दाव दूर करन, जीअ का दातार

(68)

Mar
Tue

28

VII

सूरवीर वचन के बली
(माया) कउला बषी सती दली

VIII

तां का संग वीदे सुरदेव
अमोघ दर्श सफल जां की सेव

IX

कर जोऽ नानक केर अरदास
मोदे सत टहल दीजे गुसा तास

राजजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा पुगु दीनदयाल

तेरी ओर पूरा गोपाल।

Feb 19 8:15 AM

S	M	T	W	T	F	S
5	6	7	8	9	10	11
12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25
26	27	28	29	30	31	

श्रीराम

हम दैनिक उपासना में अपने राम जी से
कहाँ मंगते हैं ?

शुभ चिन्तन गोविन्द राम॥

निर्मल साधू संग

निर्मल साधू कौन है जिस में यह भोर
गूँगा हो ?

(1) जो अपने पुत्र को आठ पहर हाजिर
नाजिर समझता है देवता है इस लिए
वह कोई भी गलत काम नहीं करता।

(2) जो अपने पुत्र के हर एक कार्य को
ठीक समझ कर उसे मानता है और
डुकी नहीं होता।

- (3) जो नाम उसने अपने सतगुरु से
पाया कि या है, उसे जपता रहता है, और
मन को सारांश बिछोए से रोकता रहता है
- (4) अपने में बढ़ाई नहीं आने देता, एवं
बुद्ध अपने सतगुरु रामजी को ही मानता है
- (5) उसे कीर्तन करने में सुनने से ही आनंद
आता है और नाम की वाते सुनने में
ही प्रसन्नता होती है।
- (6) जैसे मित्र शत्रु दोनों समान लगते हैं
शत्रु में वह सीखता है कि यह अपनी
कटुता से मुझे प्रभु की ओर अग्रसर
कर रही है।

जो अपने वचन का पक्का होता है। मन में अच्छी बात जो निश्चय कर ली है उसे पुण्य की लुपा मांग कर पूरी कर के देता है।

ऐसा संत (व्यक्ति) लोगों के पापों के भी भगवान से माफ करवा देता है लोगों के दुर्गों को हर कर देता है जीवात्मा का भोजन दे सकता है

ऐसे संतो की सेवा करने से लाभ होता है, ऐसे संतो का दर्शन तथा सेवा बड़ी मुश्किल से प्राप्त होती है (क्योंकि ऐसे संत अपनी कोई सेवा नहीं कराते, वह अपनी कसई कर रहे खाते हैं (दान का अन्न नहीं खाते)

संत की सेवा नाम ध्याइये
अबें संत केवल भगवान का भजन
करना ही, अपनी सेवा समझते हैं।

ऐसे संतों के दर्शन से सब पाप
धुल जाते हैं, वे भगवत् स्वरूप हैं। ऐसा
जान कर सोच समझ कर गुरु धारण
करो

पानी पीयो दान के
गुरु करिए

जान के

रामजी राम राम

श्री राम

कर कृपा प्रभु दीन दयाला
तेरी ओट यूरी गोपाला

Sim 2

3

Apr
Mon

(73)

30	31	1	2	3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14	15	16	17	18
19	20	21	22	23	24	25	26	27	28
29									

श्रीगुरुगुरुगुरु

श्रीगुरु

शब्द 21. च्योरे गुरु लाहवजी की
(मह शब्द ग भवती स्त्रियों के जय
लिए है) रोज सवेरे, रात को।

इस का पाठ करना चाहिए
इससे मनो कामना पूरी हो जाती है।

शब्द 21

सत्गुरु साचे दिया भेज
चिर जीवन उपजिआ सजोग
उदरे माहि आई कीआ निवास
माता के मन बहुत विगास

II

जमिआ पूत भगत गोविन्द का
पुगटिआ सग मह लिखिआ धुर का

2000

रहाऊ

दसरी मासो हउम बालक जन्म लीअ
मिटिआ सोगा महा आनन्द थीअ

III

गुरुवाराणी सावरी आनन्द गावै
साचि साहब के मन भावै
वधी बेल बह पीढी चाली
धर्मकला हर बंध बहाली

IV

मन चिंदिस। सतगुरु दिईवाइअ।
भए अचिंत। एक लिव लाइअ।
जिअ बालक पिता ऊपर करे मारा।
जुलाइअ। बोले गुरु के तारा।
गुम्मी दन्नी नाही बात।
गुरुनानक तुठा कीन्ही दात।

5

Apr
Wed

(15)

10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21
22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11

शब्द 22

हऊं देखा दर्शन तेरा

घर आओ साजना ३

हऊं देवां - - -

II

घर आपनडे खड़ी तका

मन चाऊ घनेरा राम ३

हऊं देवा - -

III

चाऊ घनेरा सुरा पुगु मेरा

मैं तेरा भरवास।

दरशन देव भई निहनेवल

जन्म मरणा दुख नासा ३

हऊं दे

सगली जौत जात। तूं सौई
 मिलिआ सहज सुभाई
 नानक साजन के। वालि जाइर
 सहज मिलै घर आर २

हऊ देवा -

राजजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाला।
 तेरी ओर पूरा जोयाला

7

Apr
Fri

(1)

3	4	5	6	7	8
9	10	11	12	13	14
15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26

श्रीराम

शब्द 23

हल्ले मारा हल्ले यारा खुशबबरी 2
 बलि बलि जाऊ हऊ बलि बलि जाऊ
 नीकी तेरी बिगारी आला तेरा नाऊ
 कुजा आमद, कुजा रमती कुजा मेखी
 झारिका नगरी रास बिगोहि

हल्ले यारा - -

खूब तेरी पगरी मीठ तेरे बोल
 झारिका नगरी काहे के मंगोल
 चंदी हजार आलम एकल खाना
 हम चिन्ही पातशाह सावले वरना
 असपति गजपति नरदनरिंद
 नामे के स्वामी मौर मुन्द

राम श्रीराम Feb 24 22.8.11 श्रीराम

2000

श्रीराम

(भावार्थ)

जब हम अपने प्यारे भगवान जी, राम जी, पर
बलिहार जाते हैं तो सब खुबारी ही हो जाती है
यह नामदेव जी कह रहे हैं। जब उन्हें किसी
मुपलक्षान फकीर में भगवान श्री कृष्ण जी के
दर्शन हुए, वह इस प्रकार बरानि कर रहे हैं।

तेरा नाम भी बड़ा सुन्दर है और तेरा पहरावा
भी बड़ा सुन्दर है, आप कहाँ से आये हो? कहाँ जा रहे हो?
और कहाँ गये थे? भव तो आप द्वारिकापुरी में है।
आप तो साँकैर धनव्यास महाराज की तरफ दिव
रहे हो, हम छोड़ के मालिक हो, हाथियों के मालिक हो
मनुष्यों के भी मालिक हो, मेरे आप स्वामी मोदा
देने वाले हैं। इस प्रकार जब कहा हो जाती है^{Sup 9}
तो पुत्र नहीं भी पुत्र हो जाते हैं।

10

Apt
Mon

(79)

10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31	32	33	34	35	36	37	38	39	40	41	42	43	44	45	46	47	48	49	50	51	52	53	54	55	56	57	58	59	60	61	62	63	64	65	66	67	68	69	70	71	72	73	74	75	76	77	78	79	80	81	82	83	84	85	86	87	88	89	90	91	92	93	94	95	96	97	98	99	100	101	102	103	104	105	106	107	108	109	110	111	112	113	114	115	116	117	118	119	120	121	122	123	124	125	126	127	128	129	130	131	132	133	134	135	136	137	138	139	140	141	142	143	144	145	146	147	148	149	150	151	152	153	154	155	156	157	158	159	160	161	162	163	164	165	166	167	168	169	170	171	172	173	174	175	176	177	178	179	180	181	182	183	184	185	186	187	188	189	190	191	192	193	194	195	196	197	198	199	200	201	202	203	204	205	206	207	208	209	210	211	212	213	214	215	216	217	218	219	220	221	222	223	224	225	226	227	228	229	230	231	232	233	234	235	236	237	238	239	240	241	242	243	244	245	246	247	248	249	250	251	252	253	254	255	256	257	258	259	260	261	262	263	264	265	266	267	268	269	270	271	272	273	274	275	276	277	278	279	280	281	282	283	284	285	286	287	288	289	290	291	292	293	294	295	296	297	298	299	300	301	302	303	304	305	306	307	308	309	310	311	312	313	314	315	316	317	318	319	320	321	322	323	324	325	326	327	328	329	330	331	332	333	334	335	336	337	338	339	340	341	342	343	344	345	346	347	348	349	350	351	352	353	354	355	356	357	358	359	360	361	362	363	364	365	366	367	368	369	370	371	372	373	374	375	376	377	378	379	380	381	382	383	384	385	386	387	388	389	390	391	392	393	394	395	396	397	398	399	400	401	402	403	404	405	406	407	408	409	410	411	412	413	414	415	416	417	418	419	420	421	422	423	424	425	426	427	428	429	430	431	432	433	434	435	436	437	438	439	440	441	442	443	444	445	446	447	448	449	450	451	452	453	454	455	456	457	458	459	460	461	462	463	464	465	466	467	468	469	470	471	472	473	474	475	476	477	478	479	480	481	482	483	484	485	486	487	488	489	490	491	492	493	494	495	496	497	498	499	500	501	502	503	504	505	506	507	508	509	510	511	512	513	514	515	516	517	518	519	520	521	522	523	524	525	526	527	528	529	530	531	532	533	534	535	536	537	538	539	540	541	542	543	544	545	546	547	548	549	550	551	552	553	554	555	556	557	558	559	560	561	562	563	564	565	566	567	568	569	570	571	572	573	574	575	576	577	578	579	580	581	582	583	584	585	586	587	588	589	590	591	592	593	594	595	596	597	598	599	600	601	602	603	604	605	606	607	608	609	610	611	612	613	614	615	616	617	618	619	620	621	622	623	624	625	626	627	628	629	630	631	632	633	634	635	636	637	638	639	640	641	642	643	644	645	646	647	648	649	650	651	652	653	654	655	656	657	658	659	660	661	662	663	664	665	666	667	668	669	670	671	672	673	674	675	676	677	678	679	680	681	682	683	684	685	686	687	688	689	690	691	692	693	694	695	696	697	698	699	700	701	702	703	704	705	706	707	708	709	710	711	712	713	714	715	716	717	718	719	720	721	722	723	724	725	726	727	728	729	730	731	732	733	734	735	736	737	738	739	740	741	742	743	744	745	746	747	748	749	750	751	752	753	754	755	756	757	758	759	760	761	762	763	764	765	766	767	768	769	770	771	772	773	774	775	776	777	778	779	780	781	782	783	784	785	786	787	788	789	790	791	792	793	794	795	796	797	798	799	800	801	802	803	804	805	806	807	808	809	810	811	812	813	814	815	816	817	818	819	820	821	822	823	824	825	826	827	828	829	830	831	832	833	834	835	836	837	838	839	840	841	842	843	844	845	846	847	848	849	850	851	852	853	854	855	856	857	858	859	860	861	862	863	864	865	866	867	868	869	870	871	872	873	874	875	876	877	878	879	880	881	882	883	884	885	886	887	888	889	890	891	892	893	894	895	896	897	898	899	900	901	902	903	904	905	906	907	908	909	910	911	912	913	914	915	916	917	918	919	920	921	922	923	924	925	926	927	928	929	930	931	932	933	934	935	936	937	938	939	940	941	942	943	944	945	946	947	948	949	950	951	952	953	954	955	956	957	958	959	960	961	962	963	964	965	966	967	968	969	970	971	972	973	974	975	976	977	978	979	980	981	982	983	984	985	986	987	988	989	990	991	992	993	994	995	996	997	998	999	1000	1001	1002	1003	1004	1005	1006	1007	1008	1009	1010	1011	1012	1013	1014	1015	1016	1017	1018	1019	1020	1021	1022	1023	1024	1025	1026	1027	1028	1029	1030	1031	1032	1033	1034	1035	1036	1037	1038	1039	1040	1041	1042	1043	1044	1045	1046	1047	1048	1049	1050	1051	1052	1053	1054	1055	1056	1057	1058	1059	1060	1061	1062	1063	1064	1065	1066	1067	1068	1069	1070	1071	1072	1073	1074	1075	1076	1077	1078	1079	1080	1081	1082	1083	1084	1085	1086	1087	1088	1089	1090	1091	1092	1093	1094	1095	1096	1097	1098	1099	1100	1101	1102	1103	1104	1105	1106	1107	1108	1109	1110	1111	1112	1113	1114	1115	1116	1117	1118	1119	1120	1121	1122	1123	1124	1125	1126	1127	1128	1129	1130	1131	1132	1133	1134	1135	1136	1137	1138	1139	1140	1141	1142	1143	1144	1145	1146	1147	1148	1149	1150	1151	1152	1153	1154	1155	1156	1157	1158	1159	1160	1161	1162	1163	1164	1165	1166	1167	1168	1169	1170	1171	1172	1173	1174	1175	1176	1177	1178	1179	1180	1181	1182	1183	1184	1185	1186	1187	1188	1189	1190	1191	1192	1193	1194	1195	1196	1197	1198	1199	1200	1201	1202	1203	1204	1205	1206	1207	1208	1209	1210	1211	1212	1213	1214	1215	1216	1217	1218	1219	1220	1221	1222	1223	1224	1225	1226	1227	1228	1229	1230	1231	1232	1233	1234	1235	1236	1237	1238	1239	1240	1241	1242	1243	1244	1245	1246	1247	1248	1249	1250	1251	1252	1253	1254	1255	1256	1257	1258	1259	1260	1261	1262	1263	1264	1265	1266	1267	1268	1269	1270	1271	1272	1273	1274	1275	1276	1277	1278	1279	1280	1281	1282	1283	1284	1285	1286	1287	1288	1289	1290	1291	1292	1293	1294	1295	1296	1297	1298	1299	1300	1301	1302	1303	1304	1305	1306	1307	1308	1309	1310	1311	1312	1313	1314	1315	1316	1317	1318	1319	1320	1321	1322	1323	1324	1325	1326	1327	1328	1329	1330	1331	1332	1333	1334	1335	1336	1337	1338	1339	1340	1341	1342	1343	1344	1345	1346	1347	1348	1349	1350	1351	1352	1353	1354	1355	1356	1357	1358	1359	1360	1361	1362	1363	1364	1365	1366	1367	1368	1369	1370	1371	1372	1373	1374	1375	1376	1377	1378	1379	1380	1381	1382	1383	1384	1385	1386	1387	1388	1389	1390	1391	1392	1393	1394	1395	1396	1397	1398	1399	1400	1401	1402	1403	1404	1405	1406	1407	1408	1409	1410	1411	1412	1413	1414	1415	1416	1417	1418	1419	1420	1421	1422	1423	1424	1425	1426	1427	1428	1429	1430	1431	1432	1433	1434	1435	1436	1437	1438	1439	1440	1441	1442	1443	1444	1445	1446	1447	1448	1449	1450	1451	1452	1453	1454	1455	1456	1457	1458	1459	1460	1461	1462	1463	1464	1465	1466	1467	1468	1469	1470	1471	1472	1473	1474	1475	1476	1477	1478	1479	1480	1481	1482	1483	1484	1485	1486	1487	1488	1489	1490	1491	1
----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	-----	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	------	---

श्री राम २१ वद २५

मेरे प्रभु पीतम पाशा आधार।
हउ सुरा सुरा जीवा नाम तुम्हार।

II

मेरे प्रभु ---

तू वडदाता अन्तर्यामी
सब में रविआ पूरी प्रभु स्वामी
तेरी शरणा सतगुरु मेरे पूरे
मन निरमल होय सता धूरे
मेरे ---

III

चरना कल हृदय उर धारे
तेरे दरशन कउ जहि नलिहारे
कर किरपा तेरे गुणा गाव
नानक नाम जपत सुब पाव
मेरे प्रभु -

श्रीराम शब्द 26

(मकान की नींव रखने के
समय यह शब्द उच्चारण करें)

अविचल नींव धरई सतगुरु

अविचल नींव धरई २

कबहु डोलत नाही सतगुरु

कबहु डोलत नाही

II

तुं मेरे प्राणआधार गोविन्द जीआ

तुं मेरे प्राणआधार

साजन मीत सकई तुम ही

तुं मेरो परिवार है गोविन्द

तुं मेरा परिवार

III

कर मस्तक धारिओ मे माथे

साध संग गुरा गार
 तुम्हरी कृपा ते सब फल पार
 रसिक राम नाम धिआर

अविचल नीवं धरिई--

गुरु ज्ञानक जब गर दइआर।
 सर्व सुरवानिधि पाई राम
 सर्व सुरवानिधि पाई

अविचल नीवं - - -

श्रीराम २७वें २७

दरशन मागऊ, मागऊ दरशन मागऊ

देहि तयोर

तुम्हरी सेवा कौन कौन न तौर

दरसन मागऊ --

II
जिस नीच को कोई न जाने २
नाम जपत ओह चुह कुंठ मानै

दरसन मागऊ --

III
जांके निकट न आवै कोई
सगल सृष्टि वांको चराम मल धोई

दरसन --

IV
जो पाराही काहु न आवत काम
सतं प्रसाद तांको जपिए नाम

साध संग सोवत मन जागे
तब प्रभु नानक मीठे लागे

दरसन मागऊ - -

भावार्थ

निष्काम सेवा करने से भक्ति
मिलती है और भक्ति सच्ची हो तो सारे
ससार में मान मिलता है

शान्तिरात्र रात्र

श्रीरात्र

कर कृपा प्रभु दीन दयाल
तेरी ओर पूरा गोपाल

Sun 16

Feb 24 1 P.M

S	M	T	W	T	F	S
16	1	2	3	4	5	6
7	8	9	10	11	12	13
14	15	16	17	18	19	20
21	22	23	24	25	26	27

जीराम

ध्यान समाधि
~ ~ ~ ~ ~

कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओर पूरी गोवाला।

माया से गुमिता जीव के, जब पुराण
कर्म जागृत होते हैं, तो उसे सतगुरु
मिलते हैं, सतगुरु की पूरी कृपा से
जीव को, गुरुमत्त मिलता है, जो इसे
जीवन में परमानन्द देता है। गुरुमत्त
के साथ गुरुदेव उसे बुद्ध पूंजी देते हैं
जिससे जीव के बुद्ध अनुभव सुलभते हैं
उनसे वह साधना को कृपा द्वारा
आगे बढ़ाता है। यह आनन्द उसे ध्यान
के दरशी में ही मिल सकता है

ध्यान क्या है ?
~ ~ ~ ~ ~

ध्यान एक प्रक्रिया है, जिससे साधक गुरुमन्त्र का आश्रय ले कर आसन पर बैठ कर अपने आप को स्थिर करता है। मन को संयमित करता है। प्रारम्भ में यह समय कम होता है फिर रस आने में धीरे-2 स्वयं ही बढ़ जाता है।

ध्यान में बैठने के लिए स्थान स्वच्छ, वातावरण स्वच्छ हो, घर के एकान्त स्थान पर, अपने इष्टदेव को प्रणाम करने उन का दिवा गया मन्त्र दोहराये जाय और पहले जीहाद्वारा फिर अन्तरमन द्वारा यह प्रक्रिया निश्चित समय, निश्चित

स्थान पर करनी है।

पहले २ मन इधर उधर भागेगा।
 थोड़े दिनों में स्थिरता आने लगेगी
 जब आसन पर स्थिरता आ जाये
 तो नासिका के अगुभाग पर देवता
 हुए मन्त्र का जाप करना है। कुछ
 समय बाद, श्वास को आँखों के
 देवता है। जब श्वास अन्दर जाये
 तो "राम" और बाहर आये तो "श्री" का
 जाप करना है, इस प्रकार धीरे २ मन्त्र
 चलेगा और आनन्द भी आने लगेगा
 फिर आँखें बन्द करने नासिका
 के ऊपर दोनों भौहों के मध्य में
 अन्तर्दृष्टि टिका कर अपने सत्य

इष्टदेव को देखते हुए, शान्त चित हो कर
आसन पर बैठ रहना है। गुरु मन्त्र का जाप
करते रहना है। फिर भी हमारा मन चंचल
हो सकता है, ध्वराना नहीं। धीरे २ मन
शान्त होने लगेगा। ध्यान में आनन्द ओन
लगेगा।

ध्यान करते करते, एक अन्तरशान्ति
अनुभव होगी, जो ससारिक आनन्द से भिन्न
होगी, फिर मन को भी रस आने लगेगा।
जीवन में चमक आने लगेगा, ऐकान्ति
अव्दा लगेगा। सतसंग अव्दा लगेगा।

जब सत्गुरु शिष्य को मंत्र देते हैं तो
उस पर निगरानी भी रखते हैं। उस के अन्दर बैठ
कर नाम जाप करते रहते हैं।

उसे प्रतिदिन आनन्द प्रदान करते रहते हैं। शिष्य का भौतिक जीवन भी गुरु जी पर आश्रित हो जाता है, गुरु कृपा से साधना के लिए समय भी मिल जाता है। घर वाले भी सहायक बन जाते हैं।

ध्यान के समय बिभा गंगा मन्त्र जाप अनन्त गुराण फल देता है। मन्त्र धीरे धीरे रोम रोम में समाने लगता है, फिर ऐसा बरौआता है, जब मन्त्र शक्ति विस्फोट कर कुराडलनी शक्ति को जागृत कर देती है। अब तक जो शक्ति, सप्ताहिक क्रिया में उलझी हुई थी वह उच्च केन्द्रों में यात्रा करने लगती है।

कुराडलनी शक्ति मूलधार केन्द्र में सर्व के समान अद्वैत कुराडल मार कर (000)

बैठी है। जन्म के समय पर सोई होती है। जब
 ध्यान साधना जप किया जाता है, तो मंत्र शक्ति
 इस सोई शक्ति पर पुछर करती है, तो शक्ति
 फुकार मारती है। इसलिये साधक को ध्यान
 करते समय, प्रारम्भ में, शरीर में चीटी के काँमे
 के समान अनुभव होता है अथवा रीढ़ की हड्डी
 में एक हलचल सी उत्पन्न होती है। यह चक्र
 मूलाधार है। पृथ्वी तत्त्व है। इस चक्र के मंदन
 पर साधक को आरोग्यता प्राप्त होती है। चित्त
 की शान्ति व आनन्द प्राप्त होता है। फिर
 गुरु कृपा से यह यात्रा आगे बढ़ती है। मूलाधार
 के ऊपर स्वाधिष्ठान चक्र है। यह जल तत्व Sim 23
 है। यहां विद्वान् अपनी चतुर्भुज शक्ति के साथ
 2000 निवास करता है।

यह अर्द्धचन्द्रम। के समान श्वेत वर्ण का
 ६। दलों का कमल है। इसके विकसित
 होने पर बाराही में सृजात्मकता आती है
 काव्यभाव जागृत होता है।

ध्यान करते २ जब शक्ति तीसरे चक्र
 नाभि चक्र का भेदन करती है, तो अग्नि तत्व
 जागृत हो जाता है। तब ध्यान पर बैठने पर
 मन्त्र जाप नाभि से हृदय तक हिलोर लेता
 हुआ प्रतीत होता है। शरीर में सुफूर्ति आती है
 नवीन शक्ति का संचार होता है। फिर यह
 शक्ति ध्यान के द्वारा हृदय चक्र का भेदन
 करती है। हृदय चक्र के खुल जाने पर काम में
 एक नाद सुनाने देता है। धीरे २ साधना
 करते २ नाद की ध्वनि में परिवर्तन होता है २०००

कभी २ कही कीर्तन की आवाज़, कभी
मंजीर की दवनि और कभी कभी नदी का
कलकल स्वर या वशी का मीठा २ स्वर
सुनाई देता है। तब लगभग कि मंत्र जाप
में मन पूरी रूपेरा रम जाता है। बुद्धि भी
शान्त हो कर मन में विलीन हो जाती है।

हृदय के पास ही अनाहद चक्र का वास है
यह वायु तत्व है। इस चक्र के भेदन से व्यक्ति का
व्यक्तित्व पूर्णतः बदलने लगता है। सात्विक
गुणों का विकास होने लगता है। कर्माणि में
मार्भुष, स्वभाव में कोमलता आ जाती है
ईर्ष्य क्रोध द्वेष का प्रभाव कम होने लगता है
साधक जितेन्द्रिय होने लगता है। काम
क्षीण होने लगता है।

अब साधक वर्गिक वन कर ध्यान में
आनेवाले सेवक अग्रगण्य करता है। परन्तु
वह स्वयं उनसे बिलगा रहता है।

पुण्येक चक्र पर साधना करते कई वर्ष
लगा जाते हैं। यदि साधक का समर्पण पूरा
होता है, तो सतगुरु शिष्य के कई जन्मों की
साधना को कुछ वर्षों में करना देते हैं। उनके
आने वाले बन्धनों को खोल देते हैं। अयनी
शरणा में राव कर अयनी रूप से विमुक्त चक्र
जो मेरुदण्ड की सीमा है। इस का भेदन कर
शिष्य को शोक रहित कर देते हैं। और दीर्घायु
पुदान करते हैं। यह से ईश्वर पिता न
सुखाराग नाडियों आज्ञा चक्र में आ कर
मिलती है।

आज्ञा चक्र दोनों भौहों के मध्य गुरुटी के भीतर है
 ऐसे शिव नेत्र या दिव्य दृष्टि भी कहते हैं। यह श्वेत
 पुष्पाक्ष वाली दो पांखड़ियों के समान है। यहाँ शिव
 अपनी शक्ति के साथ निवास करते हैं। इस स्थान
 पर ध्यान करने से ज्ञान व ज्ञान सिंघर हो जाते हैं
 इस केन्द्र पर ध्यान करने से सप्तपञ्चांग समाधि
 छिड़ होती है। पाँचों का मग्न होता है, ध्यान के लिए
 यह सर्वोत्तम स्थान है, ध्यान करते २ आज्ञा चक्र पर
 शक्ति पहुँचती है। तब इस चक्र के गेदल से एक
 अविलम्बरणीय अनुभव होता है। तीव्र मलामल (आधों)
 के बीच में विद्युत की गर्जना सुनाई देती है
 जैसे तेज ध्वनि के साथ बर्फ हो रही है। ऐसे
 विचित्र अनुभव होते हैं, जिन्हें शब्दों में वर्णन नहीं
 किया जा सकता। शरीर की दिवारों के

तोड़ कर शक्ति अपने विमत से मिलने के
आतुर हो उठती है।

इस प्रकार आज्ञा चक्र के भेदन के बाद
सहस्रनाल दल में साधक प्रविष्ट होता है
इस अवस्था पर पहुँचने से साधक ध्यान
करते समय प्रकाश का अनुभव करता है
कभी ध्यान में चमकते तारे दिनाई देते हैं
या फिर प्रकाश ऊँ के दर्शन होते हैं
जिससे साधक को लगता है कि उसकी
साधना गीक दिशा में अग्रसर हो रही है।

इस सहस्रदल के आराध्य स्थान के
तीसरा तिल या त्रिकुटी भी कहते हैं। जैसे
साधक साधना में आगे बढ़ता है उसे विभिन्न
प्रकार के प्रकाश पुञ्ज रंग विरंग दिनाई

देते हैं। अत्यन्त आनन्द होता है और रोंग रोंग पुलकित होता है।

अब सतगुरु कृपा से साधक आगे बढ़ता है। कभी 2 अघेरी गुफाएं दिखती हैं। जब शरीर में अपर उठता है। तो कभी नीले, कभी सूर्य के उदित होने जैसे रंग के समान प्रकाश दिखाई देता है। ऐसे लगता है जैसे सतगुरु प्रकाश के द्वारा उस गुफा में प्रवेश करवा कर बाहर खुले मैदान में जाने के लिए मार्ग दिखा रहे हैं। इस प्रकार साधना में कई वर्ष लग जाते हैं।

अब जब भी साधक ध्यान में बैठता है उस की श्रद्धा के अनुसार उसे भिन्न 2 अंगुल 30 मिलते हैं। कभी कभी उसे लगता है कि वह हजारों मील यात्रा कर के, ऊँचे 2 पहाड़ों में

लंबे २ पेड़ों को पार कर, किसी आगम्य स्थान की ओर यात्रा कर रहे हैं, जमी पहाड़ों के पीछे सूर्य उदित के दर्शन होते हैं।

पिंड और ब्रह्मांड में एकता है। ध्यान द्वारा जहाँ जहाँ जाओगे, जिस जिस स्थान का अनुभव करेंगे, उस स्थान के पुत्र का वैसा ही रंग रस नजर आएगा। ध्यान में आया हुआ स्वरूप, ध्यान में आया हुआ लोक, ध्यान में आया हुआ ब्रह्मांड। सदैव काल के लिए अजर अमर अखंड होगा। ध्यान द्वारा जब साधक चौथी अवस्था अर्थात् तुरिया पद में पहुँच जाता है, उसे वहाँ आनन्द ही आनन्द प्राप्त होता है। वहाँ बह चरमावस्था को प्राप्त होता है, जिस की तुलना समार की

और वहाँ के अनुभव करवाता है। अब साधक
गुरु कृपा से अन्तरभाव हो जाता है, उसे ध्यान में
जाने की ललक होमै लगती है, कुछ दारो में
अन्तर की मात्रा जब चाहे कर सकता है।

समाधि क्या है ?

पुरु को चाने की अन्तिम सीढ़ी समाधि है
समाधि का अर्थ है, जो हिल डुल न लके, स्थिर
रेह (समाधि मृतक की वनई जाती है)

आध्यात्मिक क्षेत्र में समाधि का अर्थ है

सम-अवस्था, जहाँ पहुँच कर ध्याता हमेशा ध्यान

मग्न रह हो जाता है। पुरु के नाम में ध्यान-

समाधि लगाने वाला भी एक प्रकार से

मृतक के समान होता है, उसमें तनिक भी

गति नहीं होती, इसी अवस्था को समाधि कहते हैं

धारणा, ध्यान, समाधि तीनों एक ही हैं।
जीवित अवस्था को तब धारणा करते हैं।
ध्यान भी ऐसी अवस्था का स्थूल या सूक्ष्म
कर सकते हैं, समाधि में अचल अवस्था होती
है।

समाधि में ध्यान इस प्रकार लीन हो कि
साधक को बुद्धि दर्शन के अतिरिक्त सत्ता की
किसी अन्य वस्तु का भाव न हो, उस के मग्न रूपी
जगत में वासना का लेश मात्र भी स्थापित हो।
अपनी चेतन शक्ति के द्वारा चेतन पुरुष के दर्शन
करे, तभी साधक की सच्ची स्थिति है।

समाधि दो प्रकार की होती है। स्वकल्प
तथा निर्विकल्प, कामना वाली और निष्कामता
वाली। जब साधक निश्चल, निष्कपट सच
सदाचारी हो। तभी समाधि लगेगी।

निर्विकल/समाधि अच्छी समाधि है
इसमें साधक सचरकराउ तक पहुँच जाता है
ज्योति में ज्योति लीन होने के अनुभव से
आवागमन के चक्र से गी

ध्यान समाधि सब गुरु द्वारा से
सम्भव है। उन की दृष्टि का आश्रय लेकर
निष्पत्तिरूप से भजिन सिमरना ध्यान करना है
और फल की आशा न हो। सतगुरु जब
जैसा चाहे। साधक की साधना को बढ़ाने में
पूरी सहायता है

समय पर सतगुरु शिष्टम के
पारबन्ध कर्मों को कराते रहते हैं। उससे
सत्कर्म कराते रहते हैं।

राजीव राय 28th Feb 1 P.M श्रीराय

श्रीराम

(जय गुरुदेव)

ॐ

गुरु ब्रह्मा/ गुरु विष्णु/ गुरुदेवो महेश्वर/
गुरु साक्षात्/ पारब्रह्म तस्मै श्री गुरवे नमः

अखराड माण्डलाकारं व्यामयेन चराचरम्
तत्पदं दर्शितं येन तस्मै श्री गुरवे नमः

ॐ ब्रह्मानन्द परम सुखदं केवलं ज्ञानमूर्तिः
द्वन्द्वातीत/ गगनसदृश/ तत्त्वमत्यादिलक्ष्यम्

ध्यानमूलम् गुरुमूर्ति पूजा/ मूलम् गुरोः पदम्
मंत्रमूलम् गुरु वचनम् मेढ्रमूलम् गुरु कृपा

रामजी राम राम

श्रीराम

Sun 7

कर कृपा पुत्र दीनदयाल

तेरी ओट पूरी गोपाला

8

May
Mon

{ राम कहता मुक्ति कैवल होय }
 { राम कहता मैं तो सगली रनोय }

Note-महा गुरु की (बिराम)

(जगह रामजी नाम उच्चारण किया गया है)

रामजी, दिव्य दृष्टि अपनी कृपा से,

किसी किसी को देते हैं और अन्दर की

आंखें खोल देते हैं। जिस से उन्हें पहचान

सकें।

जब रामजी कृपा करते हैं, तो हमें

निर्दिष्ट हर रोज मद करवाते रहते हैं कि

तुम देह नहीं हो, तुम आत्माचरुप हो।

रामजी के आगे अपनी बुद्धि नहीं चलानी

जो वह कहे उसे 100/100 सच मान कर

आज्ञा पालन करना है।

रामजी के सन्मुख हो कर, अपने अहं को नहीं मिलाया, तो अज्ञानता नहीं नाश होगी और उसे बने कर्म नहीं दूटेंगे।

रामजी को अन्दर ही अन्दर, तन मन धन देना है कि हमें ससार का कशा भी माद न आये।

ससार में सब से बड़े LOVER हमारे रामजी हैं, परन्तु इसे (यार को) MYSTERY राखना है।

रामजी की इच्छा से चलेंगे, तो निर्भयता में रहेंगे। स्वैच्छा में बन्धन है, भय है।

अपने पुत्र (रामजी) के पास झुड़।
ले कर जीयेंगे तो वह आगे बढ़ायेंगे।

गुरुवारा से आज सारा विश्व उजागर
हो रहा है।

जिस मिलिए होवे आनन्द सो सलगुरु कहिए

रामजी की दृष्टि में आलोकिक दिव्यता है।

रामजी माया में कीड़ा दिवाते हैं। यह
परिवार बाल बच्चे मीठे कीड़े हैं, जो
दुखी करते रहते हैं।

राम जी को बैठ करने के लिए तीनो लोकों
में कोई वास्तु नहीं है।

पूरा झट्टा रहेंगे, तो भगवान सुदर्शन
चक्र चलायेंगे। तभी हमारा देहधवास जायगा।

यदि हमारे मन में एक भी बैठा है तो
राम जी नहीं बैठ सकते।

राम जी के एक एक वचन की value
करो, उन के सुविसे ज्ञान सुन कर
विचार भी करना चाहिए।

—राम जी के अनेक रूप हैं जो जिस भाव से जाता है, उसी भाव से प्राप्त होता है।

राम जी का सारा जीवन ही गीत है।

केवल राम जी के लायक बनने, तया-या करें। तभी उन के हृदय में समायेगे।

राम जी जब मिल गये तो पूरी हुई मुक्ति हमें, खेलते, खाते, बीच में ही, मिल गई मुक्ति

राम जी के पास हम जीव हो कर आते हैं और ब्रह्मरूप हो कर जाते हैं।

अगर राम जी, के लिए तय नहीं है
तो सम्माना तू यहां आया ही नहीं है।

राम जी के ज्ञान से सब वासनाएं मर
हो जाती हैं।

राम जी, देह रहित हैं, उन को जानने के
लिए। देह रहित ही हो कर जाना जा सकेगा।

राम जी अन्तर्यामी बन कर अन्दर के भाव
सम्मानते हैं So we should be careful.

हमें राम जी की पसन्दी का बनना है ना कि
समा का जगार।

जब मैं था तब राम जी नहीं, अब राम जी
हैं मैं नहीं।

रामजी की नज़र केवल निद्वानी
मऊ पर पड़ती है।

सब में अपने राम जी को देखा, तो काम
पूरा हो गया।

सारा सम्प्र अपने 'रामजी' को पुग
रोवेगा तो तेरा EGO स्वप्न हो जा।

'रामजी' के मुख से जो CATCH करेंगे
वह ज्ञान है शेष सब अज्ञान है।

राम जी के चार में ही माया छुटती है

अपने राम जी के आगे उड़े जैसे खड़े हो
जाओ। मेरी नहीं चलेगी आप की ही चलेगी

तो जीवन मुक्त हो जाओगे

राम जी किसी भी SITUATION में सिले
तुम अपने आप को set कर के दिखाओ।

राम जी का आदेश ले कर जायेंगे तो
अभ्यास वैराग्य की जरूरत नहीं पड़ेगी

राम जी को सब अपनाते हैं, पर जीवन
मुक्त वह ही है प्राणी जिसे राम जी अपनाए

राम जी से प्रेम करेंगे तो मन बाहर नहीं
जायेगा।

राम जी की वरणी आवाज़ असमाननी

राम जी की दत्त दाया में कई भूलों से
धूर जाते हैं

राम जी ने ज्ञान रूपी TORCH दी है
उसे प्रयोग करने के लिए कृपा मागो।

'राम जी' की मान्यता में रहेंगे, तो वह
हमारी माया को काटेंगे। ज्ञान का मार्ग
सरल हो जायेगा।

राम जी अपनी कृपा से बन्धन में
नही राखते जागृति देते हैं

बेड़ से बड़ा वाप है अपने को न पहचानना
और उन्हें अपने से जुदा देखना।

'रामजी' ही वाणी मन को सम्भाल लेके
हैं से। मन उन्ही को देने के लिए
ब्रुया मांगे।

जो रामजी से प्रेम रखते हैं तो घर
वाले भी तर जाते हैं।

'रामजी' की शरणागति में हर वक्त मग्न
ही होता है।

'रामजी' की एक मुस्कान भक्त को डुबके
देती है।

दिल ही दिल में 'रामजी' को धार करे।
कोई देवे नहीं, नहीं तो वह भी सीख लेगा।

'रामजी' का पुत्र भगवान के राज्य में
पहुँचाने वाला हवाई जहाज है

'रामजी' के आगे लकड़ी की तरह जड़ हो
जाओ। न मन, न बुद्धि, न अहंकार रहे
कृपा मागो

हरि है खांड रेत में बिखरी महगल चुनी
न जोये छे कबीर प्रभु वृम वृमाई
चींटी हो के खाप

'रामजी' में विवेक खोलते है कि तू
तू आत्मा। है ही ज्ञान स्वरूप, रोनी
कृपा मागो

'राम जी' विदरा बन कर अपने भक्तों
के योगक्षेम का भार उठाते हैं।

'राम जी' के हृदय में भक्तों के उद्वार
का दर्द है।

'राम जी' केवल भाव के भूते हैं जो
भवसागर से पार कराते हैं

रामजी राम राम

श्रीराम

कर कृपा पुत्र दीनदयाल।
तेरी ओर पूरा गोपाल।

7.3.2000 5 P.M

JUNE

II

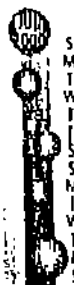
III

IV.

 $\bar{y}$

25
 26
 27
 28
 31

॥ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥



S	0	9	22
M	0	10	23
T	0	11	25
W	0	12	26
T	0	13	27
F	0	14	28
S	1	15	29
S	2	16	30
M	3	17	31
I	4	18	0
W	5	19	0
T	6	20	0
T	7	21	0
S	8	22	0

30

JUNE
FRIDAY

VI

2000

जगमगा ज्योति सुहावे
रूप तेरा धारा
श्वेत वरी॥ उजियारा
सत्गुरु है मेरा

VII

सब पर कृपा करो, मेरे ध्यौरे गुरुदेवा
क्षमा करो सब अवगुणा, सब तेरी भेवा

ॐ नमः - - -

VIII

तेरे द्वारे आये पुत्र करना आप रत्ना
इक पल भी न बिखरे नाम पुत्र तेरा

ॐ नमः - - -

राधाजीराधराध

श्रीराध

कर कृपा पुत्र दीन दयाल
तेरी ओट पूरी गोपाल

3.2.07 12.45 P.M.

25	26	27	28	29	30	31	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24					
S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S



आरती
सत्य नारायण। जी की

(ॐ जय श्री नारायण शरानाम

(ॐ जय श्री नारायण शरानाम

शरानामें आये हम आप की

हम सब के पाप हरानाम

(ॐ जय -

II

जब जब पाप बँधे पृथ्वी पर

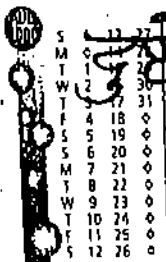
तब तब दर्श दीओ

सतों की रक्षा करूँगा

दुष्टों का नाश करिओ

(ॐ जय श्री -

SUNDAY 2



अपने भक्तों के कारण।
युग युग रूप धरियो
राम कृष्ण। गुरु नानक
स्वयं को उक्त कीओ

IV

(ॐ जय -

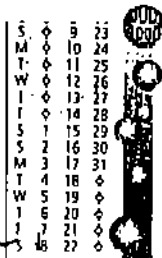
पिछले अवगुण। बदलो
आगे मार्ग देओ।
अपनी शरणा में राव कर
सोरे कह दरो।

(ॐ जय - - -

V

ज्ञान भक्ति हमें दीजो।
तामस दूर करो।
सात्त्विक ब्रह्म बढा कर
सोरे पाप दरो।

(ॐ जय



-119-

2000

JULY

TUESDAY

4

शरणा में आयै हम आव की
विनती स्वीकार करै
ज्ञान हीन हमें जानें के
भव से पार करै।

ॐ नमः श्री - -

राजजीराजराज

श्रीराज

कर कृपा प्रभु दीनदयाला
तेरी ओट पूरा गोवाला

S	0	13	27
M	0	14	28
T	1	15	29
W	2	16	30
T	3	17	31
F	4	18	0
S	5	19	0
S	6	20	0
M	7	21	0
T	8	22	0
W	9	23	0
T	10	24	0
F	11	25	0
S	12	26	0



JULY
WEDNESDAY

-120-

ब्रीराम

2000

अरती भोले बाबा की

शिव शंकर महादेवजी की
(ॐ जय शंकर जय महादेव)

जय सच्चिदानन्द नमो नमो २

II

शरणा में आये है हम तेरी

कृपा कर दो नमो नमो

(ॐ जय शिव -

III

मात पिता भाई सुत बन्धुप

तुम ही हो सब नमो नमो

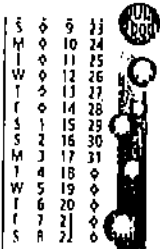
(ॐ जय -

IV

भक्ति शक्ति दे दो हम को

पूरी आशा नमो नमो

(ॐ जय -



→ 2000

JULY

THURSDAY

46

विनती हमारी सुन लो स्वामी
करुणा सागर नमो नमो

विवेक वैराग्य ध्यान समाधि
हम सब की लगा दो नमो २
(ॐ नमः शिवाय -

शान्ति रात्रि

श्रीराम

कर कृपा पुत्र दीन दयाला
तेरी ओट पूरी गोपाला

S	0	13	27
M	6	14	28
W	1	15	29
T	2	16	30
F	3	17	31
S	4	18	0
S	5	19	0
M	6	20	0
W	7	21	0
T	8	22	0
F	9	23	0
S	10	24	0
S	11	25	0
M	12	26	0



JULY
FRIDAY

-/22-

ब्रह्म

2000 ₹-

आरती बैरवों देवी

माँ की

ज्योति जगा दे माँ

मेरी ज्योति जगा दे माँ

अम्बे मेरी माँ जगा दम्बे मेरी माँ

I ज्योति जगा दे-

आनन्दमयी माँ आनन्दमयी माँ

परमानन्द दे दे माँ 2

II

शान्तिमयी माँ शान्तिमयी माँ

परम शान्ति दे दे 2

III

कृपामयी माँ कृपामयी माँ

पूरी कृपा कर दे माँ 2

IV

प्रेममयी माँ प्रेममयी माँ

सच्चा प्रेम दे दे माँ 2

S	9	23
M	10	24
T	11	25
W	12	26
T	13	27
F	14	28
S	15	29
S	16	30
M	17	31
T	18	
W	19	
F	20	
T	21	
S	22	

-123-

→2000

JULY
SATURDAY



॥
ब्रह्म विद्या मयी माँ २
ब्रह्म ज्ञानी बना दे माँ २

॥
शक्ति मयी माँ शक्ति मयी माँ
पूरा शक्ति दे दे माँ २

जय कारा बेरा वाली दा
बोल सांचे दरबार की जय
सर्वमंगल मांगलये शिवे सर्वाधिके
साधिके त्रयम्बिके गौरी
नारायणी नमस्तुते

SUNDAY 9

राजी राम राधे की राधे
कर कृपा पुण दीन दयाला
तेरी ओर पूरा गोपाला "

S	27
M	28
T	29
W	30
T	31
F	1
S	2
M	3
T	4
W	5
T	6
F	7
S	8
M	9
T	10
W	11
T	12
F	13
S	14
M	15
T	16
W	17
T	18
F	19
S	20
M	21
T	22
W	23
T	24
F	25
S	26

→ 2000

बाँके बिहारी जी
की आरती

AUGUST

TUESDAY

29

मेरे बाँके बिहारी तेरी जय है।
तेरी जय है। तेरी जय है।

मेरे बाँके बिहारी -

II
मन में नमो मेरे भ्राम मुगरी
भ्राम मुगरी गिरवर धारी
तेरी दधि बड़ी धारी

तेरी जय है।

मेरे बाँके - - - - -

III
तेरा दर दोड़ मैं बिल दर जाऊं

बिल आगे मैं लधा सुनाऊं

मेरे सब दुनहारी तेरी जय है।

मेरे बाँके - - -

SEP
2000

S	10	24
M	11	25
T	12	26
W	13	27
T	14	28
F	15	29
S	16	30
M	17	31
T	18	
W	19	
T	20	
F	21	
S	22	
M	23	
T	24	
W	25	
T	26	
F	27	
S	28	
M	29	
T	30	
W	31	

IV

तूने हर लिया है मन मेरा
तुम बिना लगता जीवन में अधेरा
सारी दुनिया तुम पे बारी
तेरी जग हो ---

प्राणपति हो जागृत पति हो
मेरी तो अब तुम में मति हो
रावना शरणा में गुसारी
तेरी जग हो ---
मेरे बिकें बिहारी तेरी जग हो

राजजी राम राम

ब्रीराम
24 3.2.2000

	27	28	29	30	31
M	1	2	3	4	5
T	6	7	8	9	10
W	11	12	13	14	15
T	16	17	18	19	20
F	21	22	23	24	25
S	26	27	28	29	30

2000

146

AUGUST

31

श्रीराम लक्ष्मणा जानकी
 जय वोलो हनुमान की
 श्रीराम लक्ष्मणा जानकी
 जय वोलो हनुमान की

जय श्रीराम
 जय श्रीराम

SEP 2000

S	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
M	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
W	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
T	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
F	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
S	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
M	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
T	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
F	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
S	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31

(आरती निराकार की)

धनासरी महल ?

गगन में धाल रवि चन्द्र दीपक बने
तारिका मडल जनक मोती

धूप मलमानलो, पवन चक्करो केर

सगल बन राय फुलत ज्योति

कैसी आरती होय भवबुझा तेरी आरती

अनहता शब्द बाजत बेरी । ॥ रहाउ

सहस्र तब नयन, नन नैन है तोहे की

सहस्र मूरति नना एक तोही

सहस्र पद विमल, नन एक पद गंध विन

सहस्र तब गंध द्वचलत मोहि

सब में ज्योति ज्योति है सोई

तिस कै चानरा, सब में चानरा। हीई

गुरु साखी ज्योति पुगट होई

		11	27
		11	28
	1	12	29
	2	13	30
	3	14	31
	4	15	
	5	16	
	6	17	
	7	18	
	8	19	
	9	20	
	10	21	
	11	22	
	12	23	
	13	24	
	14	25	

AUG
2000

2000

- 128 -

AUGUST

SATURDAY

26

जौ तिस भावै सौ आरती होय
 हरि चरणा कमल मकरंद लोभित मेन
 अनदिनो मोहि आहि (यास)
 कृपाजल देहो नानक सारा के
 होई जाते तेरै नामि वास।

गोपाल तेरा आरता
 हे दयाल तेरा आरता
 जौ जन तुम्हरी भक्त कन्ति
 तिन के काज सवारत।

हे गोपाल तेरा

SUNDAY 27

दाल सीधा मांगउ घीउ
 धौरे खुशी कैर नित जीउ
 यनिआ दादस नीका
 अनाज मांगउ सत लीका
 गऊ भैस मांगउ लाबेरी

SEP
2000

S	10	14
M	11	25
T	12	26
W	13	27
T	14	28
F	15	29
S	16	30
S	17	31
M	18	1
T	19	2
W	20	3
T	21	4
F	22	5
S	23	6

28

AUGUST
MONDAY

- 129 -

2000

इक ताजन तुरी चंगेरी
वावा घर की गहनि चंगी
जन धन्ना लेवे मंगी

गोपाल तेरा आस्ता
हे दयाल तेरा आस्ता

राजजीराज रात्र

श्रीरात्र
23.3.2000

S	0	13	27
M	1	14	28
T	2	15	29
W	3	16	30
T	4	17	31
F	5	18	01
S	6	19	02
S	7	20	03
M	8	21	04
T	9	22	05
W	10	23	06
T	11	24	07
F	12	25	08
S	13	26	09

-130-



JULY
MONDAY

“आरती गुले लाले की”

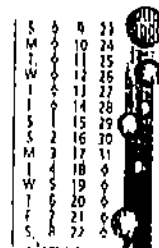
(गुले लाल जी की जय)

लाल मेरी पत रविओ, सदा गुले लालन
सिंधरी दा सेवल दा

दमा दम मात कलन्दर (जय हो)
राग जी, दा पहला न० (जय हो)
होम जी, मन्त बना दो (जय हो)
होम जी, शरणा लगा लो (जय हो)
होम जी, स्वल्थ बना दो (जय हो)
होम जी, जलो लगा लो (जय हो)

लाल मेरी पत - -

II
चार चिराग तेरे बलरां छोशां
पजवां मे वालरा आई बला
गुले लालन, सिंधरी दा
सेवल दा - - - -



→ 2000

-12-

JULY

THURSDAY

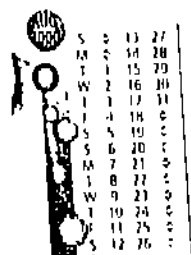
13

दमादम मस्त कलन्दर
राम जी दा पहला न०
हमें भी मस्त बना दे।
हमें भी शरणा लगा लो
हमें भी, स्वस्थ बना दे।
हमें भी, गले लगा लो।

लाल मेरी ---

III
हिंदू, सिन्धू, पीरा तेरी कर कृपा, बीजे।
खुशियां दा वजे घड़ियाल, वला भूले लालन
सिंधरी दा, सेवला दा

दमादम मस्त कलन्दर
राम जी दा पहला न०
हमें भी शरणा लगा लो।
हमें भी मस्त बना दे।
हमें भी गले लगा लो।
लाल मेरी





JULY
FRIDAY

- 12 -

2000

हरदम पीरा तेरी खैर होव
नाम अली बेड़ा धार लगा

गुले लालन - - - -

सिधरी दा खेवला दा

दमादम मस्त कलंदर (जय हो)

रामजी दा पहला नं०

हमें भी मस्त बना दो

हों भी शरारा लगा लो

हमें भी स्वा-ध बना दो

हमें भी गले लगा लो

लाल मेरी - - - -

रामजी राम राम

ब्रीराम

कर कृपा तुम दीनदयाला

तेरी ओर पूरी गोपाल।

5th, 5 Feb 2000

5.40 P.M

S	23
M	24
T	25
W	26
T	27
F	28
S	29
S	30
M	31
T	1
W	2
T	3
F	4
S	5
S	6
M	7
T	8
W	9
T	10
F	11
S	12
S	13
M	14
T	15
W	16
T	17
F	18
S	19
S	20
M	21
T	22

→ 2000

- 135 -

JULY

SATURDAY

15

सुभान अल्लाह २
हर गै, में तूँ ही चमक रही
सुभान अल्लाह २
हर फूल में, तूँ ही महक रही
सुभान अल्लाह २

ऐसी नुस्खे बना दो राम २
ऐसी कृपा कर दो राम २

आरती (जगदीश जी की)
ॐ जय जगदीश हरे, स्वामी जय जगदीश हरे
गङ्गा जनों के संकर, क्षरा में दूर करे
ॐ जय जगदीश हरे

SUNDAY 16

II
जो धोवे फल पौव, दुख बिनसे मन का
सुख सपति घर आवे, कष्ट मिटे तन का
ॐ जय - - -

11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31
S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S



JULY
MONDAY

III

2000 ←

मात पिता तुम मेरे, शरणा, पड़ूँ मैं आपकी
तुम बिन और न दूँगा, आस करूँ मैं आपकी

IV

ॐ जय

तुम पूरी परमात्मा, तुम अन्तर्यामी २
पारब्रह्म परमेश्वर, तुम सब के स्वामी

V

ॐ जय

तुम करुणा के सागर, तुम पालन कर्ता २
मैं मूर्ख स्वलक्ष्मी, कृपा करो भर्ता

VI

ॐ जय

तुम हो शक्ति आगोचर, सबके प्राणपति
किस विध मिलूँ दयाप्रिय, तुम को मैं नमस्ति

ॐ जय

VII

दीनबन्धु दुख हर्ता, ठाकुर आप मेरे
ब्रह्मा भक्ति बटाओ, द्वार पड़ा मैं तेरे
अपने हाथ उठाओ, द्वार पड़ा रहूँ तेरे

23	24	25	26	27	28	29	30	31	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22				
S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S

→ 2000

VIII

12

JULY
THU SDAY

18

विषय विचार मिठाओ

पाप हरो देवा,

अद्भुत गति बढ़ाओ, सतन की सेवा

IX

ॐ जय -

प्रेम सभा जन, तुम को निरादिन ही दयावं
पार लगा दो नय्या, मही अर्जि जावे

X

ॐ जय - - -

पुणजी की आरती, जो कोई नित जावे
कहत प्रेम नन्द स्वामी, मन बाँधित फले

ॐ जय - - - - - पावे

रामजी राम राम

श्री राम

कर कृपा पुण दीन दयाला

तेरी ओर घूरी गोपाला

Sat Feb 5 7 PM

रुपा धाम

1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12	13	14	15	16	17	18	19	20	21	22	23	24	25	26	27	28	29	30	31			
S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F	S	S	M	T	W	T	F



JULY
WEDNESDAY

रास (कृपा धाम मे) 2000

प्रातः 6.45 AM

राधे राधे धाम, गाऊं मे तेरी गलियों मे
श्रीराम, श्रीराम राम, गाऊं मे तेरी गलियों मे

II

राम का नाम सदा सुवर्दाई जिस को जपते

हनुमत भाई

ऐसा सुन्दर नाम जपुं मे तेरी गलियों मे
जपुं मे तेरी गलियों मे, आऊं मे तेरी

गलियों मे

III

श्रीराम श्रीराम ---

कृष्ण का नाम सदा सुवर्दाई

जिस को जपती मीरा भाई

ऐसा सुन्दर नाम जपुं मे तेरी ---

गलियों मे

S	9	21
M	10	24
W	11	25
T	12	26
F	13	27
S	14	28
S	15	29
M	16	30
W	17	31
T	18	1
F	19	2
S	20	3
S	21	4
M	22	5

तूँ मेरा पिता, तूँ हूँ मेरा माता
 तू मेरा बन्धुप, तू मेरा आता
 सारे रिश्ते तेरे नाल

गाँऊ मैं तेरी गलियों में 2
 आऊ मैं तेरी गलियों में

V
 तूँ मेरा राखा सगनी भाई
 तूँ ही मेरा सच्चा सारि
 सारे रिश्ते तेरे नाल
 रहूँ मैं तेरी गलियों में

राखे राखे---

राजजीराजराज

श्रीराम



कर लुपा पुग दीनक्याला।
 तेरी ओर पूरी गोपाला।

Feb 5 Sat 7 PM

लुपा धाम



JULY
FRIDAY

दूसरी राख -
(पहाड़ी भाषा)

2000

राधे झुंझा गारा मेरी जिदड़िये
राधे झुंझा गारा हो
ब्रीराम, ब्रीराम गारा मेरी जिदड़िये
ब्रीराम ब्रीराम गारा हो

II

मन्दा नहीं अलारा, बुरा नहीं अलारा।
सब कनी पेस वदाना मेरी जिदड़िये
सब कनी पेस वदाना हो

राधे झुंझा - -

III

तामस नहीं खारा, बुरा नहीं खारा
सत्त्विक भोजन खारा मेरी जिदड़िये
सात्त्विक भोजन खारा हो

राधे झुंझा - -

S	9	23
M	10	24
T	11	25
W	12	26
T	13	27
F	14	28
S	15	29
S	16	30
M	17	31
W	18	
T	19	
F	20	
S	21	
S	22	

→ 2000

IV

JULY
SATURDAY

22

अमीरां वी जाणा, गरीबां वी जाणा
सब ऐसे रह जाणा, मेरी जिंदगिये
सब ऐसे रह जाणा हे।

राधे कृष्णा/ गाणा - - - -

श्रीराम, श्रीराम " - - -

राम श्रीराम राम

श्रीराम

कर कृपा प्रभु दीनदयाल।
तेरी ओर पूरी गोपाल।

SUNDAY 23

Feb 5, 7.15 PM

कृपा धाम

6	13	27
0	14	28
0	15	29
1	16	30
2	17	31
3	18	0
4	19	0
5	20	0
6	21	0
7	22	0
8	23	0
9	24	0
10	25	0
11	26	0
12		

मेरे घर आना सावरिया, तो हे जाने न दूंगी
राखुंगी सारी उमर रिया, तो हे जाने न दूंगी

II

अपने घर आओगे, तो भजन सुनाऊंगी
प्रेम से सुनेंगे सावरिया, तो हे जाने न दूंगी

अपने घर-

III

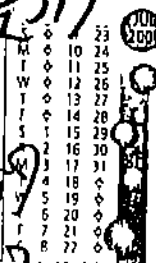
अपने घर आओगे, तो ध्यान लगाऊंगी
अन्तर में पगटेगे सावरिया,
तो हे जाने न दूंगी

IV

अपने घर आओगे, आवंड पाठ राखाऊंगी
पूरी करायेगे सावरिया, तो हे जाने न दूंगी

V

अपने घर आओगे, तो सखिया बुलाऊंगी
रास रचायेगे सावरिया, तो हे जाने न दूंगी



हवन मन्त्र

हे राम जी हमारी बुद्धियों को अपनी
ओर पेरित कीजिए

ॐ भूर्भुवः स्वः। तत्सवितुर्वरेण्यं

भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः

प्रचोदयात् ३ बार, स्वाहा

ॐ शान्ति ॐ शान्ति ॐ शान्ति

अपराध सदस्त्राणि। क्रियन्ते अहिर्निशमया

दास्यो मामिति मो मत्वा दमस्त्वपरमेश्वरः

आवाहनम् न जानामि, न जानामि विसर्जनम्

पूजा चैव न जानामि, क्षम्यताम् परमेश्वरम्

अन्यथा शरणागमं नास्ति त्वमेव शरानम् मम्

तस्मात् कारुण्यं भवेत्। रक्ष त्वं परमेश्वरः

आहुति मन्त्र (धी की आहुति)

ॐ प्रजापतये स्वाहा। इदम् प्रजापतये

नमः



ॐ इन्द्राय स्वाहा इदम् इन्द्रमिदुभ्य

ॐ अग्नेयस्वाहा इदम् अग्नेये न मम

ॐ सोमाय स्वाहा इदं सोमाय न मम

ॐ भूः स्वाहा इदमग्नेये न मम

ॐ ॐ ॐ इदम् वायवे न मम

ॐ स्वाहा इदम् सूर्याय न मम

हरि ॐ तत्सत्

हमारा क्रोध स्वाहा

हरि ॐ तत्सत्

हमारा लोभ स्वाहा

हरि ॐ तत्सत्

S	9	21
M	10	24
T	11	25
W	12	26
T	13	27
F	14	28
S	15	29
S	16	30
M	17	31
T	18	1
W	19	2
T	20	3
F	21	4
S	22	5

हमारा मोह खींचो 143 -

THURSDAY



हरि ओं तत्सत्

हमारा अहंकार खींचो

हरि ओं तत्सत्

हमारा इष्यादुष्य खींचो

हरि ओं तत्सत्

हमारा निन्दा चुगली
खींचो

हरि ओं तत्सत्

हमारे सारे दुर्गुणा खींचो

S	1	11	21
A	2	12	22
M	3	13	23
T	4	14	24
W	5	15	25
T	6	16	26
F	7	17	27
S	8	18	28
S	9	19	29
M	10	20	30
T	11	21	31
W	12	22	
T	13	23	
F	14	24	
S	15	25	
S	16	26	

यज्ञ देवता सारे सद्वगुणा
ब्रह्म ददामि